सम-सामयिक

घटना चक्र

परीक्षा संवाद के 27 वर्ष

www.ssgcp.com
shop.ssgcp.com
ssgcp.in
rkhoj.com
t.me/ssgcp
ssghatnachakra
ssgc.gs.qa
SamsamyikGhatna

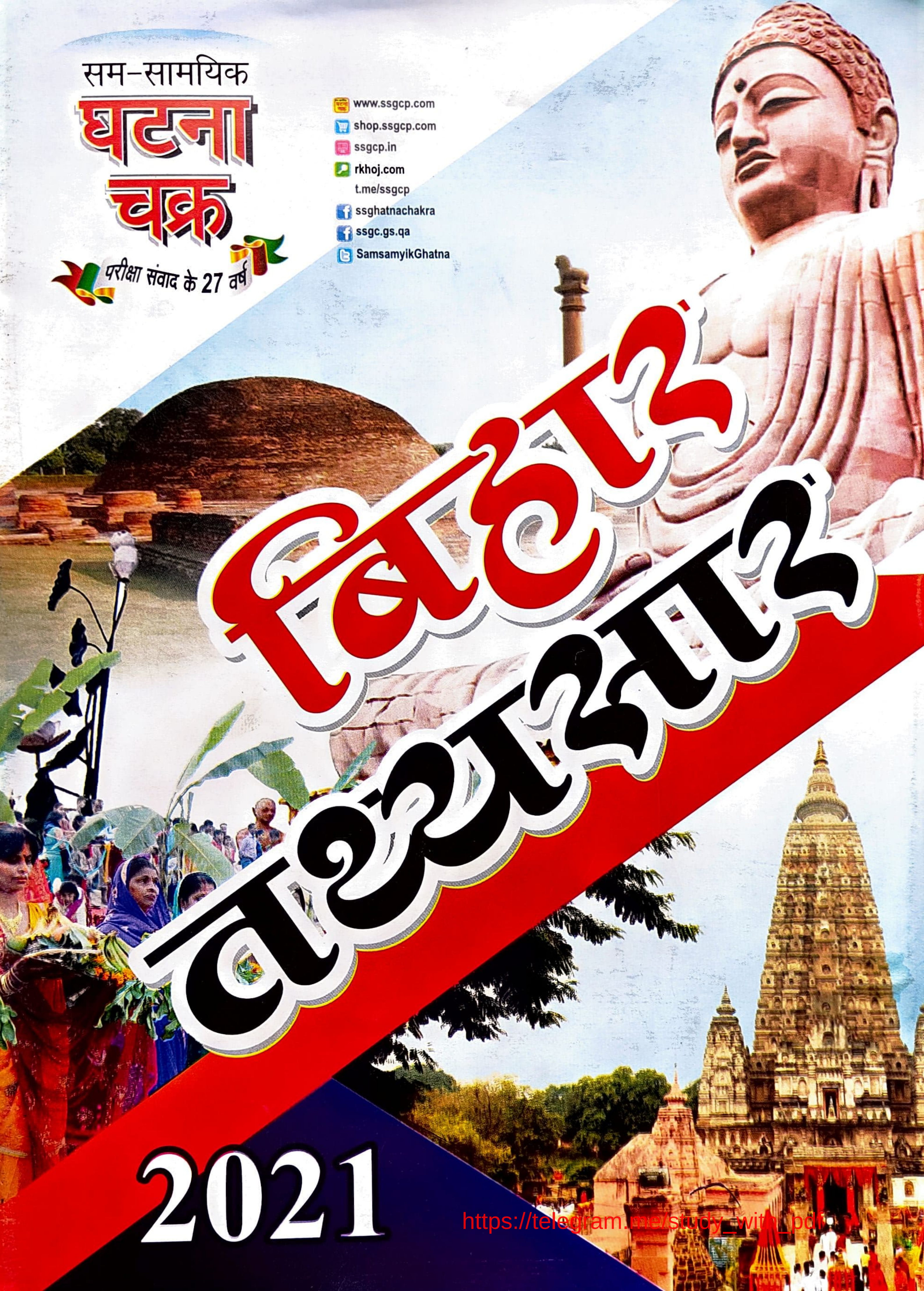

बिहार तथ्यसार

2021

https://telegram.me/study_with_pdf

सम-सामयिक

घटना चक्र

परीक्षा संवाद के 27 वर्ष

www.ssgcp.com
shop.ssgcp.com
ssgcp.in
rkhoj.com
t.me/ssgcp
ssghatnachakra
ssgc.gs.qa
SamsamyikGhatna

बिहार तथ्यसार 2021

प्रकाशक

सम–सामयिक घटना चक्र

188A/128, एलनगंज, चर्चलेन, प्रयागराज (इलाहाबाद) - 211002

₹ 60/-

https://telegram.me/study_with_pdf

© प्रकाशकाधीन :
संस्करण- द्वितीय
संस्करण वर्ष- 2021
ले.- SSGC
मूल्य : 60/-
मुद्रक- कोर पब्लिकेशन सोल्यूशन

संपर्क-
सम-सामयिक घटना चक्र
188A/128 एलनगंज, चर्चलेन
प्रयागराज (इलाहाबाद) - 211 002
Ph.: 0532-2465524, 2465525
Mob.: 9335140296
e-mail : ssgcald@yahoo.co.in
Website : ssgcp.com
e-shop Website : shop.ssgcp.com

■ इस प्रकाशन के किसी भी अंश का पुनः प्रस्तुतीकरण या किसी भी रूप में प्रतिलिपिकरण (फोटोप्रति या किसी भी माध्यम में ग्राफिक्स के रूप में संग्रहण, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिकीकरण द्वारा जहां कहीं या अस्थायी रूप से या किसी अन्य प्रकार के प्रसंगवश इस प्रकाशन का उपयोग भी) कॉपीराइट के स्वामित्व धारक के लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

किसी भी प्रकार से इसके भंग होने या अनुमति न लेने की स्थिति में बिना किसी पूर्व सूचना के उन पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

*इस प्रकाशन से संबंधित सभी विवादों का निपटारा न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद के न्यायालय न्यायाधिकरण के अधीन होगा।

संकलन सहयोग-
- **उमेश प्रताप सिंह**
- **ललिंद्र कुमार**
- **राजहंस ओझा**
- **पीयूष तिवारी**
- **दिग्विजय पाण्डेय**
- **आशीष गिरि**
- **विक्की राज**

समारंभ

किसी राज्य की पी.सी.एस. परीक्षा में उस राज्य से संबंधित जानकारियों पर आधारित प्रश्नों के पूछे जाने की प्रवृत्ति रही है। राज्य पर आधारित जानकारियों के लिए इसके उचित स्रोत तक पहुंच बनाना अति आवश्यक है, अन्यथा प्रश्नों के गलत हो जाने की आशंका रहती है। यहां हमने बिहार राज्य से संबंधित जानकारियों के लिए केंद्र एवं राज्य सरकार के आधिकारिक स्रोतों को आधार बनाया है, जो परीक्षा की दृष्टि से मूल्यवान साबित होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है। प्रस्तुत सामग्री में किसी प्रकार की त्रुटि का आभास होने पर पाठक अवश्य सूचित करें। स्पष्टीकरण के साथ हम वस्तुस्थिति से पाठकों को अवश्य अवगत कराएंगे।

अनुक्रमणिका

अध्याय — **पृष्ठ संख्या**

- **बिहार (एक दृष्टि में)** — 3- 6
  - ➢ बिहार जनसंख्या ➢ महत्वपूर्ण तथ्य
- **बिहार का इतिहास** — 7- 19
  - ➢ प्राचीन ➢ मध्यकालीन ➢ आधुनिक
- **बिहार का भूगोल** — 19-31
  - ➢ भूगर्भिक संरचना एवं भू-आकृति ➢ प्रमुख नदियां
  - ➢ जलप्रपात एवं गर्म कुंड ➢ मिट्टी ➢ सिंचाई
  - ➢ जल विद्युत परियोजनाएं ➢ बाढ़
  - ➢ जलवायु, पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन
  - ➢ वन, वन्यजीव अभयारण्य एवं उद्यान
- **बिहार की राजव्यवस्था** — 32-36
- **बिहार की अर्थव्यवस्था** — 36-53
  - ➢ बजट ➢ आर्थिक सर्वेक्षण ➢ कृषि ➢ उद्योग
  - ➢ अधिसंरचना ➢ नगर एवं ग्रामीण विकास ➢ स्वास्थ्य
- **बिहार में पर्यटन** — 54-62
- **बिहार की महत्वपूर्ण योजनाएं** — 62-64
- **बिहार में कला एवं संस्कृति** — 65
- **विविध** — 66-75
- **अद्यतन-सामयिकी** — 76-80

https://telegram.me/study_with_pdf

बिहार (एक दृष्टि में)

- **नाम** - बिहार (संभवतः बौद्ध विहारों की अधिकता के कारण)
- **स्थापना दिवस** - 22 मार्च
  - 12 दिसंबर, 1911 को बिहार को बंगाल से पृथक प्रांत बनाने की घोषणा दिल्ली दरबार में हुई।
  - 22 मार्च, 1912 को बिहार एवं उड़ीसा संयुक्त प्रांत के गठन की घोषणा विधिवत जारी की गई (इससे पूर्व बिहार अविभाजित बंगाल का भाग था)।
  - बंगाल प्रेसिडेंसी से अलग होकर बिहार एवं उड़ीसा (वर्तमान ओडिशा) संयुक्त रूप से एक प्रांत के रूप में 1 अप्रैल, 1912 को अस्तित्व में आया।
  - 28 मार्च, 1936 को बिहार के लिए पृथक विधान परिषद के गठन का आदेश पारित किया गया।
  - 1 अप्रैल, 1936 को बिहार एवं उड़ीसा दोनों अलग-अलग राज्य के रूप में अस्तित्व में आए।
  - 25 अप्रैल, 2000 को पृथक राज्य झारखंड के गठन के लिए बिहार राज्य पुनर्गठन विधेयक, 2000 को स्वीकृति प्रदान की गई।
  - 2 अगस्त, 2000 को लोक सभा ने एवं 11 अगस्त, 2000 को राज्य सभा ने बिहार राज्य पुनर्गठन विधेयक, 2000 को पारित कर दिया।
  - 25 अगस्त, 2000 को विधेयक पर राष्ट्रपति डॉ. के.आर. नारायणन की मंजूरी के साथ बिहार राज्य दो हिस्सों में विभाजित हो गया।
  - 15 नवंबर, 2000 को झारखंड एक नए राज्य के रूप में अस्तित्व में आया।
- **प्रदेश की राजधानी** - पटना
- **उच्च न्यायालय** - पटना (स्थापना 1 दिसंबर, 1913 उद्‌घाटन 3 फरवरी, 1916)
- **क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्यों में क्रम** - भारत का 12वां (जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन के पश्चात) सबसे बड़ा राज्य है। राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेशों में समग्र रूप से 13वां स्थान (लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश को शामिल करने के पश्चात) है।
- **जनसंख्या की दृष्टि से भारत में स्थान** - तीसरा (2011 की जनगणना के अनुसार)
- **राजकीय भाषा** - हिन्दी
- **द्वितीय राजकीय भाषा** - उर्दू

राजकीय प्रतीक

- **राजकीय वृक्ष** - पीपल
- **राजकीय पुष्प** - गेंदा
- **राजकीय पशु** - बैल (2013 से पहले रीछ था)
- **राजकीय पक्षी** - गौरैया (Sparrow) (पहले नीलकंठ/नक्ता था)

भौगोलिक परिदृश्य

- **अक्षांशीय विस्तार** - 24°20'10" से 27°31'15" उत्तरी अक्षांश
- **देशांतरीय विस्तार** - 83°19'50" से 88°17'40" पूर्वी देशांतर
- **क्षेत्रफल** - 94,163 वर्ग किमी.
- **लंबाई (उत्तर से दक्षिण)**- 345 किमी.
- **चौड़ाई (पूरब से पश्चिम)**- 483 किमी.
- **शहरी क्षेत्रफल** - 1095.49 वर्ग किमी.
- **ग्रामीण क्षेत्रफल** - 92257.51 वर्ग किमी.
- **समुद्र तल से ऊंचाई** - 173 फीट
- **सामान्य वर्षण** - 1205 मिमी. (वर्ष 2017-18 में 994.4 मिमी.)
- **औसत वर्षा दिवस** - 52.5 दिन (एक वर्ष में)

अवस्थिति

- बिहार, भारत के पूर्वी भाग में स्थित है।
- यह एक भू-आवेष्ठित राज्य है।
- यह उत्तर में नेपाल देश, दक्षिण में झारखंड, पूर्व में झारखंड एवं पश्चिम बंगाल तथा पश्चिम में उत्तर प्रदेश राज्य से घिरा है।
- बिहार-नेपाल की संयुक्त अंतरराष्ट्रीय सीमा 729 किमी. लंबी है।

https://telegram.me/study_with_pdf

प्रशासनिक परिदृश्य

- प्रमंडल - 9 (पटना, मगध, सारण, तिरहुत, दरभंगा, कोसी, पूर्णिया, मुंगेर एवं भागलपुर)
- जिला - 38
- अनुमंडल - 101
- सामुदायिक विकास खंड - 534
- पंचायत - 8,406
- राजस्व ग्राम - 45,103
- नगरीय संकुल/समूह - 14
- नगर - 199
- पुलिस थाना - 853
- पुलिस जिला - 44
- महानगर - 1 (पटना)

  विधानमंडल - द्विसदनीय (विधानसभा एवं विधान परिषद)
- विधानसभा की सीटों की संख्या - 243
- विधान परिषद में सदस्यों की संख्या - 75
- लोक सभा में सीटों की संख्या - 40
- राज्य सभा में सदस्यों की संख्या - 16
- लोक सभा में अनुसूचित जाति की आरक्षित सीटें - 06
- विधानसभा में अनुसूचित जाति की आरक्षित सीटें - 38
- विधानसभा में अनुसूचित जनजाति की आरक्षित सीटें - 02

राज्य की सीमा को स्पर्श करने वाले राज्य - 3

झारखंड - रोहतास, औरंगाबाद, गया, नवादा, जमुई, बांका, भागलपुर, कटिहार

उत्तर प्रदेश - रोहतास, कैमूर, बक्सर, आरा, सारण, सिवान, गोपालगंज, पश्चिम चंपारण

पश्चिम बंगाल - कटिहार, पूर्णिया, किशनगंज

- राज्य की सीमा को स्पर्श करने वाला देश - नेपाल
- नेपाल से सटे बिहार के जिले - पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, सीतामढ़ी, मधुबनी, सुपौल, अररिया, किशनगंज
- भारत के कुल क्षेत्रफल में प्रतिशत - 2.86%
- कुल वन (बिहार के क्षेत्रफल का प्रतिशत) - 7.76%
- जलवायु - मानसूनी
- सबसे बड़ी नदी - गंगा
- सबसे गर्म कुंड - ब्रह्मकुंड
- सर्वाधिक पाई जाने वाली मिट्टी - जलोढ़
- सर्वप्रमुख खाद्य फसल - चावल
- सर्वाधिक क्षेत्रफल वाले 3 जिले (घटते क्रम में) - (1) पश्चिम चंपारण (2) गया (3) पूर्वी चंपारण
- सबसे कम क्षेत्रफल वाले 3 जिले (बढ़ते क्रम में) - (1) शिवहर (2) अरवल (3) शेखपुरा

जनसंख्या - 2011

- कुल जनसंख्या - 104,099,452 (लगभग 10.41 करोड़)
- पुरुष जनसंख्या - 54,278,157
- महिला जनसंख्या - 49,821,295
- जनसंख्या घनत्व - 1106 प्रति वर्ग किमी.
- जनसंख्या वृद्धि दर - 25.42%

  (भारत की कुल जनसंख्या का 8.60%)
- लिंगानुपात - 918 (शिशु लिंगानुपात - 935)
- साक्षरता दर - 61.80%
- पुरुष साक्षरता दर - 71.2%
- महिला साक्षरता दर - 51.5%
- ग्रामीण साक्षरता दर - 59.78%

  (पुरुष - 69.67%, महिला - 49%)
- शहरी साक्षरता दर - 76.86%

  (पुरुष - 82.56%, महिला - 70.49%)
- ग्रामीण जनसंख्या - 88.71%
- शहरी जनसंख्या - 11.29%
- सर्वाधिक जनसंख्या वाले तीन जिले - (1) पटना (5838465), (2) पूर्वी चंपारण (5,099,371), (3) मुजफ्फरपुर (4,801,062)
- न्यूनतम जनसंख्या वाले तीन जिले - (1) शेखपुरा (636,342), (2) शिवहर (656,246), (3) अरवल (700,843)
- सर्वाधिक जनघनत्व वाले 3 जिले - (1) शिवहर (1880), (2) पटना (1823), (3) दरभंगा (1728)
- न्यूनतम जनघनत्व वाले 3 जिले - (1) कैमूर (488), (2) जमुई (568), (3) बांका (674)

https://telegram.me/study_with_pdf

- सर्वाधिक लिंगानुपात वाले 3 जिले - (1) गोपालगंज (1021), (2) सिवान (988), (3) सारण (954)
- न्यूनतम लिंगानुपात वाले 3 जिले - (1) मुंगेर (876), (2) भागलपुर (880), (3) खगड़िया (886)
- सर्वाधिक साक्षरता दर वाले 3 जिले - (1) रोहतास (73.37), (2) पटना (70.68), (3) भोजपुर (70.47)
- न्यूनतम साक्षरता दर वाले 3 जिले - (1) पूर्णिया (51.08), (2) सीतामढ़ी (52.05), (3) कटिहार (52.24)
- सर्वाधिक पुरुष साक्षरता वाला जिला - रोहतास
- न्यूनतम पुरुष साक्षरता वाला जिला - पूर्णिया
- सर्वाधिक महिला साक्षरता वाला जिला - रोहतास
- न्यूनतम महिला साक्षरता वाला जिला - सहरसा

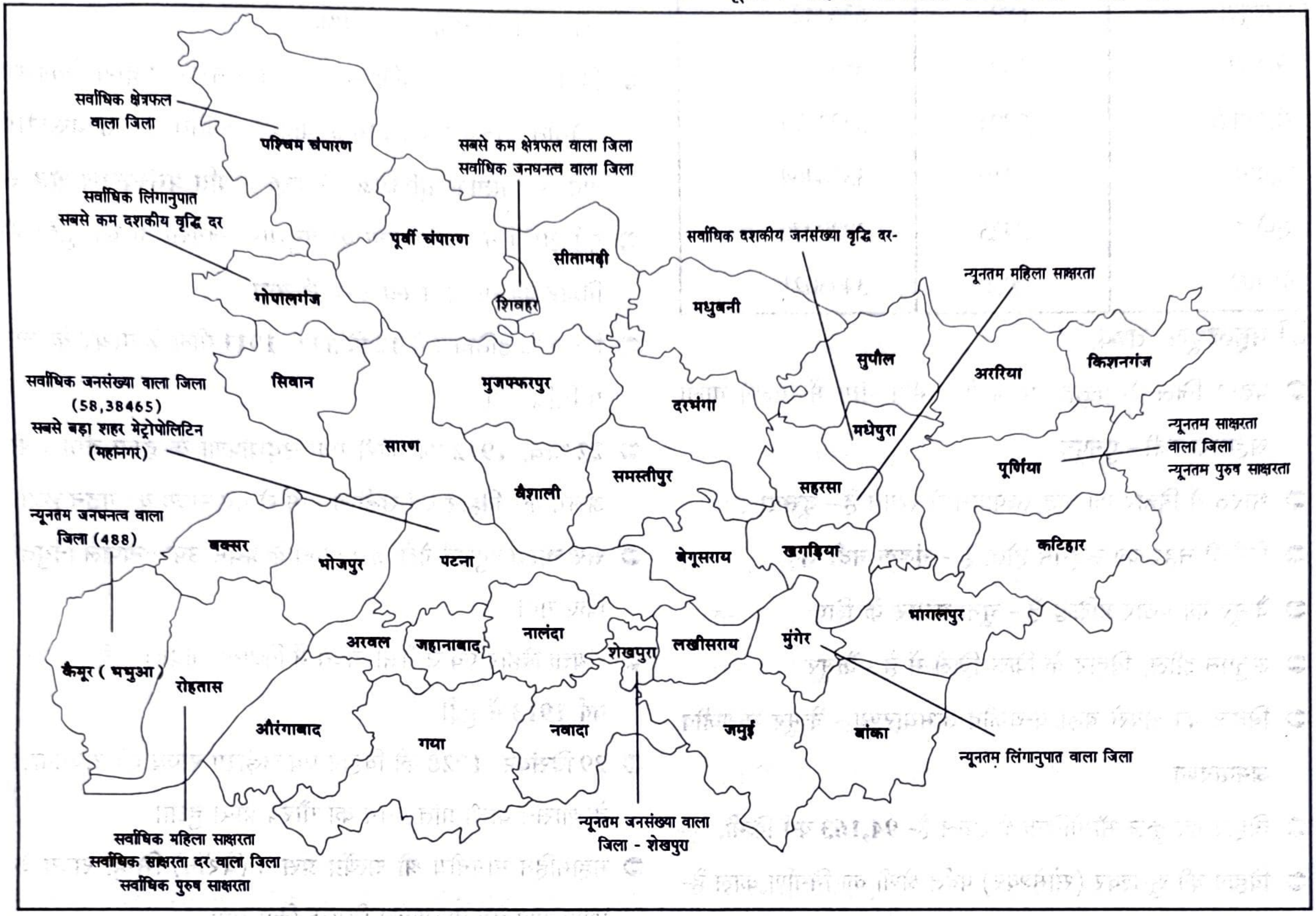

जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)	जनसंख्या
अररिया	2830	2811569
अरवल	638	700843
औरंगाबाद	3305	2540073
बांका	3020	2034763
बेगूसराय	1918	2970541
भागलपुर	2569	3037766
भोजपुर	2395	2728407
बक्सर	1703	1706352
दरभंगा	2279	3937385
गया	4976	4391418
गोपालगंज	2033	2562012
जमुई	3098	1760405
जहानाबाद	931	1125313
कैमूर (भभुआ)	3352	1626384
कटिहार	3057	3071029
खगड़िया	1486	1666886
किशनगंज	1884	1690400
लखीसराय	1228	1000912
मधेपुरा	1788	2001762
मधुबनी	3501	4487379
मुंगेर	1419	1367765
मुजफ्फरपुर	3172	4801062
नालंदा	2355	2877653
नवादा	2494	2219146
पश्चिम चंपारण	5228	3935042
पटना	3202	5838465
पूर्वी चंपारण	3968	5099371

https://telegram.me/study_with_pdf

पूर्णिया	3229	3264619
रोहतास	3881	2959918
सहरसा	1687	1900661
समस्तीपुर	2904	4261566
सारण	2641	3951862
शेखपुरा	689	636342
शिवहर	349	656246
सीतामढ़ी	2294	3423574
सिवान	2219	3330464
सुपौल	2425	2229076
वैशाली	2036	3495021

❑ महत्वपूर्ण तथ्य

- पटना जिले के फतुहा स्थल के समीप गंगा में मिलने वाली सहायक नदी - **पुनपुन**
- भारत में बिहार का जूट उत्पादन में स्थान है - **दूसरा**
- त्रिवेणी नहर का उद्‌गम होता है - **गंडक नदी से**
- कैमूर का पठार प्रसिद्ध है - **चूना पत्थर के लिए**
- अनुपम झील, बिहार के किस जिले में है - **कैमूर**
- बिहार का सबसे बड़ा वन्यजीव अभयारण्य - **कैमूर वन्यजीव अभयारण्य**
- बिहार का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल है- **94,163 वर्ग किमी.**
- बिहार की सुमेश्वर (सोमेश्वर) पर्वत श्रेणी का निर्माण काल है- **प्लीस्टोसीन काल**
- बिहार में राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार के अनुसार **5358** किमी. (31 मार्च, 2019 तक) जबकि बिहार आर्थिक समीक्षा के अनुसार 4917 किमी. (सितंबर, 2019 तक) है।
- छोटा नागपुर के जंगल की मुख्यत: वनस्पतियां हैं - **पर्णपाती**
- गौतमबुद्ध वन्यजीव अभयारण्य और राष्ट्रीय उद्यान अवस्थित है - **बिहार के गया जिले में**
- वर्तमान (2020) बिहार में कुल जिलों की संख्या है - **38**
- बिहार की मुख्य खाद्यान्न फसलें हैं - **चावल, गेहूं, मक्का**
- किस खनिज के उत्पादन में बिहार का एकाधिकार है- **पाइराइट**
- बिहार राज्य का देशांतरीय विस्तार है - **83° 19' 50" पूर्व से 88° 17' 40" पूर्व देशांतर तक।**
- बिहार को स्पर्श करने वाले भारतीय राज्य हैं- **उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल एवं झारखंड**
- गंडक, घाघरा (सरयू) एवं सोन नदी गंगा में क्रमशः मिलती हैं - **पहलेजा (पटना), रेविलगंज (सारण) एवं विगवारा (पटना) के पास**
- आर्थिक समीक्षा 2019-20 के अनुसार, वर्ष 2017-18 में बिहार की शस्य गहनता है- **144%**
- बिहार सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा विकसित 'निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क' संबंधित है- **उच्चस्तरीय अवसंरचनात्मक सुविधाओं से युक्त निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र से**
- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, जनसंख्या की दृष्टि से बिहार का भारत में स्थान है- **तीसरा**
- बिहार के इतिहास में **12 दिसंबर, 1911** मील के पत्थर के रूप में चिह्नित है।
- **22 मार्च, 1912** को जारी एक उद्‌घोषणा के द्वारा बंगाल से अलग कर **बिहार** एवं **उड़ीसा** नाम से नए राज्य का गठन हुआ।
- **सर चार्ल्स स्टुअर्ट बेले,** इस राज्य के **प्रथम उपराज्यपाल** नियुक्त किए गए।
- संयुक्त बिहार एवं उड़ीसा राज्य में विधायी प्राधिकार की स्थापना **वर्ष 1913** में हुई।
- **29 दिसंबर, 1920** को बिहार एवं उड़ीसा राज्य को राज्यपाल के शासन वाला प्रांत बनने का गौरव प्राप्त हुआ।
- महामहिम माननीय **श्री सत्येंद्र प्रसन्न (बैरॉन) सिन्हा** राज्य के प्रथम भारतीय राज्यपाल नियुक्त किए गए।
- **मार्च, 1920** में लेजिस्लेटिव कौंसिल के भवन का निर्माण शुरू हुआ और यह उसी वर्ष बनकर तैयार हो गया।
- संयुक्त बिहार एवं उड़ीसा राज्य के अंतिम राज्यपाल **सर जेम्स डेविड सिफ्टॉन** हुए।
- **गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1935** की व्यवस्थाओं के अनुरूप **22-29 जनवरी, 1937** की अवधि में बिहार विधानसभा के चुनाव संपन्न हुए।
- **20 जुलाई, 1937** को **डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा** के नेतृत्व में **प्रथम सरकार** गठित हुई। **22 जुलाई, 1937** को विधानमंडल का प्रथम अधिवेशन हुआ।
- **31 अक्टूबर, 1939** को तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा ने अपना इस्तीफा दे दिया और बिहार विधानसभा विघटित हो गई।

https://telegram.me/study_with_pdf

बिहार का इतिहास

❑ प्राचीन इतिहास

- मुंगेर से **मध्य पाषाण युग** के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- **चिरांद** (सारण जिला) और **चेचर** (वैशाली जिला) से **नवपाषाण युग** के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- प्राचीन बिहार के इतिहास की जानकारी अथर्ववेद एवं पंचविश ब्राह्मण में मिलती है।
- अथर्ववेद और पंचविश ब्राह्मण से पता चलता है कि मगध में ब्रात्य रहते थे, किंतु ऋग्वेद में उल्लेख है कि मगध के सबसे प्राचीन वासी क्षत्रिय थे। उन्हें आर्य हेय दृष्टि से देखते थे, क्योंकि वे वैदिक बलि के बारे में नहीं जानते थे।
- कनिंघम ने बोधगया में बोधगया मंदिर को खोजा। उन्होंने गिरियक पहाड़ी में उत्खनन कर इंद्रशिला गुफा का पता लगाया, जिसका वर्णन ह्वेनसांग और फाह्यान ने किया है।
- कनिंघम की सबसे बड़ी उपलब्धि बड़गांव का पता लगाना था, जो राजगीर के समीप प्राचीन नालंदा महाविहार का स्थल है। यहां से दो अभिलेख भी प्राप्त हुए, जिन पर 'नालंदा' उत्कीर्ण है।
- कनिंघम ने बिहार शरीफ में घोसरांवा गांव की पहचान कन्नौज के राजा यशोवर्मन द्वारा स्थापित गांव के रूप में की।
- कनिंघम ने बसाढ़ के अवशेषों के आधार पर वैशाली के प्राचीन स्थल का पता लगाया। चंपारण जनपद के केशरिया स्तूप, लौरिया-अरेराज के अशोक स्तंभ का भी कनिंघम ने पता लगाया।
- उत्तर वैदिक काल से बिहार का यह क्षेत्र प्राचीन इतिहास का अंग बन गया।
- आधुनिक राजगृह और गया के पास के क्षेत्र अथर्ववेद में वर्णित हैं।
- कोढ़ को हटाने वाली औषधि का आविष्कार मगध में रहने वाली 'असुरमायारूप' नामक प्रथम स्त्री चिकित्सक ने किया था।
- बिहार के मिथिला क्षेत्र में आर्यों का प्रवेश उत्तर वैदिक काल में हुआ था।
- विश्व में सबसे पहली गणतंत्रात्मक शासन पद्धति का जन्म वैशाली में हुआ।
- **विदेह माधव** की कहानी **शतपथ ब्राह्मण** में मिलती है, जिसमें विदेह माधव **सरस्वती नदी** के तट पर रहते थे तथा **वैश्वानर (अग्नि)** को मुख में धारण किए हुए थे। घृत का नाम लेते ही अग्नि मुख से बाहर आ गई तथा नदियों को जलाती हुई **सदानीरा (बिहार की वर्तमान गंडक नदी)** के तट पर ठहर गई। विदेह माधव अग्नि के पीछे-पीछे अपने **गुरु गौतम राहूगण** के साथ सदानीरा के तट तक आए। सदानीरा नदी कोसल और **विदेह** की सीमा थी।
- छठीं शताब्दी ई.पू. के 16 महाजनपदों में से **बिहार के 3 महाजनपदों मगध, वज्जि** और **अंग** का वर्णन **अंगुत्तर निकाय (बौद्ध साहित्य)** एवं **भगवती सूत्र (जैन साहित्य)** में मिलता है।
- **अंग (आधुनिक भागलपुर व मुंगेर जनपद)** की राजधानी चंपा थी। बिंबिसार ने इसे मगध में मिला लिया था।
- वज्जि संघ मगध के उत्तर दिशा में आठ गणराज्यों का एक संघ था जिसमें **विदेह, वज्जि** और **लिच्छवि** विशेष प्रसिद्ध थे।
- वज्जि संघ में सबसे प्रबल लिच्छवि थे जिनकी राजधानी **वैशाली** थी, जो आधुनिक वैशाली जनपद का बसाढ़ गांव था।
- **विदेह** अपने **दार्शनिक राजाओं** के लिए प्रसिद्ध था। इसकी राजधानी **मिथिला थी।**

❑ बौद्ध संगीतियां

क्रम	स्थान	समय	अध्यक्ष	शासक	महत्वपूर्ण तथ्य
प्रथम	राजगृह (सप्तपर्णि गुफा)	483 ई.पू.	महाकश्यप	अजातशत्रु (हर्यंक वंश)	विनय पिटक एवं सुत्त पिटक का संकलन
द्वितीय	वैशाली	383 ई.पू.	सर्वकामी	कालाशोक (शिशुनाग वंश)	बौद्ध धर्म स्थाविर एवं महासांघिक में विभाजित
तृतीय	पाटलिपुत्र	247 ई.पू.	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अशोक (मौर्य वंश)	तीसरा पिटक अभिधम्म पिटक जोड़ा गया
चौथी	कुंडलवन (कश्मीर)	प्रथम शताब्दी ईस्वी	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)	कनिष्क (कुषाण वंश)	बौद्ध धर्म हीनयान एवं महायान में विभाजित

(नोट : - **चौथी बौद्ध संगीति बिहार में नहीं हुई थी।**)

https://telegram.me/study_with_pdf

जैन संगीतियां

प्रथम	पाटलिपुत्र	310 ई.पू.	स्थूलभद्र	चंद्रगुप्त मौर्य	जैन धर्म दिगंबर एवं श्वेतांबर में विभाजित, 12 अंगों का संपादन
द्वितीय	वल्लभी (गुजरात)	512 ई.	देवर्धि-क्षमाश्रमण		धर्मग्रंथों का अंतिम संकलन कर लिपिबद्ध किया गया

महात्मा बुद्ध

- **जन्म** - 563 ई.पू., कपिलवस्तु के **लुंबिनी** में, **शाक्य कुल**
- **मृत्यु** - 483 ई.पू., **कुशीनगर** में
- **बचपन का नाम** - सिद्धार्थ, **पिता** - शुद्धोधन, **माता** - महामाया, **सौतेली मां** - प्रजापति गौतमी, **पत्नी** - यशोधरा (बिम्बा, गोपा, भद्कच्छना), **पुत्र** - राहुल
- 29 वर्ष में गृहत्याग (महाभिनिष्क्रमण), 35 वर्ष की आयु में ज्ञान की प्राप्ति (6 वर्ष की तपस्या के पश्चात)।
- **वैशाख पूर्णिमा** की रात **पीपल वृक्ष** के नीचे **निरंजना नदी** के तट, पर ज्ञान की प्राप्ति, तथागत एवं बुद्ध कहलाए।
- बौद्ध धर्म के संस्थापक
- **बौद्ध धर्म के त्रिरत्न** - बुद्ध, धम्म और संघ।
- **बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य** - दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध, दुःख निरोधगामिनीप्रतिपदा।
- **अष्टांगिक मार्ग** - सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि।
- **प्रतीत्यसमुत्पाद** बुद्ध के उपदेशों का सार है।

महावीर

- **जन्म** - 599 ई.पू., वैशाली के निकट **कुंडग्राम**, **ज्ञातृक** कुल
- **मृत्यु** - 527 ई.पू., **पावापुरी** में
- **पिता** - सिद्धार्थ, **माता** - त्रिशला (लिच्छवि राजकुमारी), **पत्नी**- यशोदा, **पुत्री** - प्रियदर्शना, **जामाता** - जामालि
- 30 वर्ष में गृहत्याग, 42 वर्ष की आयु में **कैवल्य** (सर्वोच्च ज्ञान) की प्राप्ति (12 वर्ष तपस्या)।
- **ज्ञान प्राप्ति** - जृम्भिकग्राम के निकट **ऋजुपालिका** नदी के किनारे **साल** वृक्ष के नीचे
- कैवल्य प्राप्त होने के बाद केवलिन, जिन (विजेता), अर्हंत (योग्य) एवं **निर्ग्रंथ** (बंध रहित) कहलाए।
- जैन धर्म के **24वें तीर्थंकर।**
- **जैन धर्म के त्रिरत्न** - सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् चरित्र।
- **पंच महाव्रत** - सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय और ब्रह्मचर्य।
- महावीर ने पांचवां व्रत **ब्रह्मचर्य** दिया, जबकि शेष चार व्रत **पार्श्वनाथ** द्वारा प्रतिपादित थे।
- **स्यादवाद (अनेकांतवाद)** या **सप्तभंगी** को ज्ञान की **सापेक्षता का सिद्धांत** कहा जाता है।

मगध साम्राज्य का उत्कर्ष

- पुराणों के अनुसार, मगध पर शासन करने वाला पहला राजवंश बृहद्रथ वंश था। जरासंध इसी वंश का शासक था, जिसका विवरण महाभारत में भी मिलता है।
- अन्य साहित्यिक स्रोतों के अनुसार मगध का पहला राजवंश **हर्यंक वंश** था, जिसकी स्थापना **बिंबिसार (544-492 ई.पू.)** ने की थी। बिंबिसार ने **कोसल** की राजकुमारी **कोसला देवी** (प्रसेनजित की बहन) से विवाह कर **काशी** को दहेज में प्राप्त किया। इसके अलावा उसने **वैशाली** की राजकुमारी **चेल्लना** से भी विवाह किया। बिंबिसार ने अंग नरेश ब्रह्मदत्त को विजित कर अंग राज्य को मगध में मिला लिया। उसका अवन्ति के शासक चंडप्रद्योत के साथ युद्ध हुआ था। कालांतर में **प्रद्योत के इलाज** के लिए उसने अपने वैद्य **जीवक** को भेजा। **बिंबिसार महात्मा बुद्ध का अनुयायी था।**
- **बौद्ध ग्रंथों** के अनुसार, उसके पुत्र अजातशत्रु ने उसकी हत्या कर मगध का शासक (492-460 ई.पू.) बना।
- अजातशत्रु द्वारा बिंबिसार की हत्या से क्रोधित काशी नरेश प्रसेनजित ने मगध से काशी वापस ले लिया। कालांतर में दोनों में युद्ध और संधि हो जाती है।
- अजातशत्रु का **काशी** की राजकुमारी **वाजिरा** से विवाह होता है व काशी पुनः प्राप्त हो जाती है। **अजातशत्रु** ने अपने **मंत्री वस्सकार** की मदद से **वज्जि संघ में फूट** डलवा दिया और लिच्छवियों पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया।
- उसके ही शासनकाल में **महात्मा बुद्ध की मृत्यु (483 ई.पू.)** हुई। 483 ई.पू. में इसके ही संरक्षण में **प्रथम बौद्ध संगीति** का आयोजन **राजगृह में महाकश्यप** की अध्यक्षता में हुई।

https://telegram.me/study_with_pdf

➲ अजातशत्रु की मृत्यु के बाद उसका पुत्र **उदयिन मगध का शासक** (460 ई.पू.) बना।

➲ उसने अपनी **राजधानी राजगृह (गिरिव्रज) से पाटलिपुत्र (गंगा तथा सोन नदी के संगम पर बसाया गया नया नगर)** स्थानांतरित की।

➲ उदयिन के तीन पुत्रों अनिरुद्ध, मुंडक और नाग दशक (दर्शक) ने क्रमशः अल्पकाल तक शासन किया।

➲ **शिशुनाग वंश (412 से 344 ई.पू.)** - शिशुनाग हर्यंक वंश के अंतिम राजा नाग दशक का आमात्य व काशी का राज्यपाल था।

➲ **शिशुनाग ने अवंति, कोशल और वत्स को विजित कर** मगध साम्राज्य का विस्तार किया।

➲ उसके पश्चात उसका पुत्र **कालाशोक** (काकवर्ण) शासक बना।

➲ इसके समय में ही वैशाली में **द्वितीय बौद्ध संगीति** (383 ई.पू.) आयोजित हुई, जिसमें **स्थाविर** और **महासांघिक** के रूप में बौद्ध धर्म का विभाजन हो गया।

➲ **नंदिवर्धन** इस वंश का अंतिम शासक था।

➲ **नंद वंश (344-323 ई.पू.) - महापद्म नंद** ने शिशुनाग वंश का अंत कर नंद वंश की स्थापना की।

➲ पुराणों में उसे **'सर्वक्षत्रांतक'** कहा गया है। उसे **'एक छत्र'** अथवा **'एकराट'** भी कहा जाता था।

➲ उसे शूद्र व दासीपुत्र भी बताया गया है। उसे पौरव, इक्ष्वाकु, पांचाल, कौरव, हैहय, कलिंग, शूरसेन, मैथिल, अश्मक, वीतिहोत्र राज्यों का शासक बताया गया है। उसके समय में मगध साम्राज्य की सीमा गंगा घाटी को पार कर गई थी।

➲ इस वंश का अंतिम शासक **धननंद** था। उसी के समय यूनानियों (सिकंदर) का आक्रमण हुआ था।

❑ मौर्य वंश

➲ पुराण, बौद्ध एवं जैन साहित्य **कौटिल्य के अर्थशास्त्र** तथा विदेशी लेखकों के द्वारा मौर्य वंश के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। **स्ट्रैबो** एवं **जस्टिन ने चंद्रगुप्त मौर्य को 'सैण्ड्रोकोट्टस'**, जबकि **एरियन** और **प्लूटॉर्क** ने **'एण्ड्रोकोट्टस'** कहा है।

➲ **विलियम जोंस** ने सर्वप्रथम **'सैण्ड्रोकोट्टस' की पहचान** भारतीय ग्रंथों में वर्णित **चंद्रगुप्त मौर्य** से की।

➲ **जेम्स प्रिंसेप ने 1837 ई.** में ब्राह्मी लिपि को अनूदित किया।

➲ **326 ई.पू. में मकदूनिया (यूनान) के शासक सिकंदर** का भारत पर आक्रमण होता है। सिंधु नदी को पार करके सिकंदर झेलम (वितस्ता) के तट तक आ जाता है। यहीं उसका पोरस से युद्ध होता है, जिसे 'वितस्ता' या 'हाइडेस्पीज' का युद्ध कहते हैं।

➲ व्यास नदी के तट पर सिकंदर की सेना आगे बढ़ने से इंकार कर देती है। व्यास नदी से ही नंद साम्राज्य की सीमा आरंभ होती थी। उस समय नंद वंश का शासक **धननंद** था।

➲ सिकंदर भारत में 19 महीने रहा।

❑ चंद्रगुप्त मौर्य (323 से 298 ई.पू.)

➲ अपने गुरु चाणक्य की सहायता से धननंद को पराजित कर चंद्रगुप्त मगध का शासक बना।

➲ 305 ई.पू. के आस-पास सेल्युकस निकेटर से चंद्रगुप्त मौर्य का युद्ध हुआ। युद्धोपरांत हुई संधि से चंद्रगुप्त को एरिया (काबुल), अराकोसिया (कंधार), जेड्रोसिया (मकरान) तथा पेरीपेमिसदाई (हेरात) का क्षेत्र प्राप्त हुआ साथ ही यूनानी राजकुमारी से उसका विवाह भी हुआ।

➲ सेल्युकस निकेटर ने अपने राजदूत **'मेगस्थनीज'** को चंद्रगुप्त के दरबार में भेजा था।

➲ मेगस्थनीज ने **'इंडिका'** नामक पुस्तक की रचना की थी।

➲ जीवन के अंतिम समय में चंद्रगुप्त अपने पुत्र बिंदुसार को सत्ता सौंप कर जैन मुनि भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) चले गए और वहीं सल्लेखना (उपवास) से अपने प्राण त्याग दिए।

❑ बिंदुसार (298 से 272 ई.पू.)

➲ इसे अमित्रघात, भद्रसेन, सिंहसेन आदि कहा गया है।

➲ इसी के समय सीरिया के शासक एंटियोकस का राजदूत **डायमेकस** तथा मिस्र के शासक टालमी द्वितीय फिलाडेल्फस का राजदूत **डायोनिसियस** मौर्य दरबार में आए थे।

➲ बिंदुसार आजीवक संप्रदाय का अनुयायी था।

❑ अशोक (272 से 232 ई.पू.)

➲ सिंहासन पर बैठने के 4 वर्ष बाद 269 ई.पू. में राज्याभिषेक। राज्याभिषेक से पूर्व वह उज्जैन का राज्यपाल था।

➲ 261 ई.पू. में (राज्याभिषेक के नौवें वर्ष) कलिंग विजय।

➲ सिंहली अनुश्रुति के अनुसार, निग्रोथ के प्रवचन से अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाया और मोग्गलिपुत्त तिस्स का शिष्य बना। इससे पूर्व अशोक शैव था।

➲ राज्याभिषेक के 10वें वर्ष उसने **'बोधगया'** की यात्रा की। 14वें वर्ष धम्म महामात्रों की नियुक्ति की। 20वें वर्ष लुंबिनी गया और उसे उल्विक (करमुक्त) घोषित किया तथा भाग (एक कर) को घटाकर 1/8 कर दिया।

https://telegram.me/study_with_pdf

❑ अशोक के अभिलेख

- ➲ अशोक के अभिलेखों में शाहबाज गढ़ी एवं मान सेहरा (पाकिस्तान) के अभिलेख खरोष्ठी लिपि में उत्कीर्ण हैं।
- ➲ तक्षशिला से अरामेइक लिपि में उत्कीर्ण अभिलेख, शरेकुना से यूनानी तथा अरामेइक लिपियों में उत्कीर्ण अभिलेख प्राप्त हुए हैं।
- ➲ अशोक का इतिहास भी हमें इन्हीं अभिलेखों से प्राप्त होता है। अभी तक अशोक के 40 अभिलेख प्राप्त हो चुके हैं।

❑ अशोक के वृहद शिलालेख

- ➲ **धौली**- यह ओडिशा के पुरी जिले में स्थित है।
- ➲ **शाहबाज गढ़ी**- यह पाकिस्तान (पेशावर) में स्थित है।
- ➲ **मान सेहरा**- यह पाकिस्तान के हजारा जिले में स्थित है।
- ➲ **कालसी**- यह वर्तमान उत्तराखंड (देहरादून) राज्य में स्थित है।
- ➲ **जौगढ़** - यह ओडिशा के जौगढ़ में स्थित है।
- ➲ **सोपारा** - यह महाराष्ट्र के थाणे जिले में स्थित है।
- ➲ **एरागुडि** - यह आंध्र प्रदेश के कुर्नूल जिले में स्थित है।
- ➲ **गिरनार** - यह गुजरात के काठियावाड़ में जूनागढ़ के पास स्थित है।

❑ अशोक के लघु शिलालेख

- ➲ **ब्रह्मगिरि** - यह मैसूर के चित्रदुर्ग में स्थित है।
- ➲ **सिद्धपुर** - यह ब्रह्मगिरि से एक मील उत्तर-पूर्व में स्थित है।
- ➲ **जतिंग रामेश्वर** - यह ब्रह्मगिरि से तीन मील उत्तर-पूर्व में स्थित है।
- ➲ **अहरौरा** - यह उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में स्थित है।
- ➲ **सारो-मारो** - यह मध्य प्रदेश के शहडोल जिले में स्थित है।
- ➲ **नेत्तूर** - यह कर्नाटक के बेल्लारी जिले में स्थित है।
- ➲ **रूपनाथ** - यह मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में स्थित है।
- ➲ **गुर्जरा** - यह मध्य प्रदेश के दतिया जिले में स्थित है।
- ➲ **भाब्रू** - यह राजस्थान के जयपुर जिले में स्थित है।
- ➲ **मास्की** - यह रायचूर जिले में स्थित है।
- ➲ बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु अशोक ने दूतों एवं प्रचारकों को विदेश भेजा। अपने दूसरे तथा 13वें शिलालेख में उसने उन देशों का नाम लिखवाया जहां दूत भेजे गए थे।
- ➲ दक्षिण सीमा पर स्थित राज्य चोल, पाण्ड्य, सत्तियपुत्त, केरलपुत्त एवं ताम्रपर्णि बताए गए हैं।

❑ अशोक के लघु स्तंभ लेख

- ➲ सम्राट अशोक की राजकीय घोषणाएं जिन स्तंभों पर उत्कीर्ण हैं, उन्हें लघु स्तंभ लेख कहा जाता है। महत्वपूर्ण अभिलेख निम्न स्थानों पर स्थित हैं -
- ➲ **सांची** - मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में है।
- ➲ **सारनाथ** - उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में है।
- ➲ **रुम्मिनदेई** - नेपाल के तराई में है।
- ➲ **कौशाम्बी** - प्रयागराज (पूर्व में इलाहाबाद) के निकट है।
- ➲ **निगली सागर** - नेपाल के तराई में है।
- ➲ **वैशाली** - सिंह शीर्ष (केवल शेर, लेखरहित) बिहार में स्थित है।

❑ अशोक के गुहा लेख

- ➲ दक्षिण बिहार के गया जिले में स्थित बराबर नामक तीन गुफाओं की दीवारों पर अशोक के उत्कीर्ण लेख प्राप्त हुए हैं।
- ➲ इन सभी की भाषा प्राकृत तथा ब्राह्मी लिपि में है। केवल दो अभिलेखों शाहबाज गढ़ी तथा मान सेहरा की लिपि ब्राह्मी न होकर खरोष्ठी है। यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती है।
- ➲ तक्षशिला से अरामेइक लिपि में लिखा एक भग्न अभिलेख, कंधार के पास शरेकुना नामक स्थान से यूनानी तथा अरामेइक द्विभाषीय अभिलेख प्राप्त हुआ है।

❑ अशोक के स्तंभ लेख

- ➲ अशोक के स्तंभ लेखों की संख्या सात है, जो छः भिन्न स्थानों में पाषाण स्तंभों पर उत्कीर्ण पाए गए हैं। इन स्थानों के नाम हैं-
- ➲ **कौशाम्बी स्तंभ लेख** - इलाहाबाद में अकबर द्वारा लाया गया था।
- ➲ **दिल्ली टोपरा स्तंभ लेख** - यह स्तंभ लेख प्रारंभ में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में पाया गया था। यह मध्ययुगीन सुल्तान फिरोजशाह तुगलक द्वारा दिल्ली लाया गया। इस पर अशोक के सातों अभिलेख उत्कीर्ण हैं।
- ➲ **दिल्ली-मेरठ स्तंभ लेख** - यह स्तंभ लेख भी पहले मेरठ में था, जो बाद में फिरोजशाह द्वारा दिल्ली लाया गया।
- ➲ **लौरिया अरराज तथा लौरिया नंदनगढ़ स्तंभ लेख** - यह स्तंभ लेख बिहार राज्य के चंपारण जिले में है।
- ➲ **रामपुरवा स्तंभ लेख** - चंपारण, बिहार राज्य में है।

❑ प्रांतीय प्रशासन

- ➲ चंद्रगुप्त मौर्य ने शासन संचालन को सुचारू रूप से चलाने के लिए अपने राज्य को चार प्रांतों में विभाजित किया, जिन्हें 'चक्र' कहा जाता था। इन प्रांतों का शासन सम्राट के प्रतिनिधियों द्वारा संचालित होता था। सम्राट अशोक के काल में प्रांतों की संख्या पांच हो गई थी।

https://telegram.me/study_with_pdf

प्रांत		राजधानी
प्राची (मध्य प्रदेश)	-	पाटलिपुत्र
उत्तरापथ	-	तक्षशिला
दक्षिणापथ	-	सुवर्णगिरि
अवंति राष्ट्र	-	उज्जयिनी
कलिंग	-	तोसलि

➲ प्रांतों (चक्रों) का प्रशासन कुमारामात्य/कुमार/आर्यपुत्र नामक पदाधिकारियों द्वारा होता था।

➲ प्रांत, मंडल में तथा मंडल, जिलों में विभक्त थे जिन्हें आहार/विषय कहा जाता था, जिसका प्रशासक 'विषयपति' कहलाता था।

➲ जिले का प्रशासनिक अधिकारी **स्थानिक** था।

➲ **गोप** दस गांवों का प्रशासक था।

❑ नगर प्रशासन

➲ मेगस्थनीज के अनुसार, नगरीय प्रशासन 30 सदस्यों के मंडल द्वारा चलाया जाता था। यह मंडल छः समितियों में विभाजित था।

प्रथम समिति	उद्योग-शिल्पों का निरीक्षण
द्वितीय समिति	विदेशियों की देखरेख करना
तृतीय समिति	जनगणना
चतुर्थ समिति	व्यापार-वाणिज्य की व्यवस्था
पंचम समिति	विक्रय की व्यवस्था, निरीक्षण
षष्ठ समिति	बिक्री कर व्यवस्था

➲ नगर में पुलिस व्यवस्था थी, जिसे 'रक्षित' कहा जाता था।

➲ यूनानी स्रोतों में वर्णित अधिकारी - एग्रोनोमोई (जिलाधिकारी), एंटीनोमोई (नगर आयुक्त)।

➲ **सैन्य व्यवस्था** - सैन्य व्यवस्था छः समितियों में विभक्त थी, जो सैन्य विभाग द्वारा निर्दिष्ट थी। प्रत्येक समिति में पांच सैन्य विशेषज्ञ होते थे। पैदल सेना, अश्व सेना, गज सेना, रथ सेना तथा नौसेना की व्यवस्था थी।

➲ सैनिक प्रबंध का सर्वोच्च अधिकारी **अंतपाल** कहलाता था। यह सीमांत क्षेत्रों का भी व्यवस्थापक होता था। मेगस्थनीज के अनुसार, चंद्रगुप्त मौर्य की सेना में छः लाख पैदल, पचास हजार अश्वारोही, नौ हजार हाथी तथा आठ सौ रथों से सुसज्जित अजेय सैनिक थे।

➲ **अशोक के परवर्ती मौर्य सम्राट** - मगध साम्राज्य के महान मौर्य सम्राट अशोक की मृत्यु 232 ई.पू. (लगभग) में हुई थी। अशोक के उपरांत अगले पांच दशक तक उनके निर्बल उत्तराधिकारी शासन संचालित करते रहे।

➲ **अशोक के उत्तराधिकारी** - अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य पश्चिमी और पूर्वी भाग में बंट गया।

➲ पश्चिमी भाग पर कुणाल शासन करता था, जबकि पूर्वी भाग पर संप्रति का शासन था, लेकिन 180 ई.पू. तक पश्चिमी भाग पर बैक्ट्रिया तथा यूनानियों का पूर्ण अधिकार हो गया था। पूर्वी भाग पर दशरथ का राज्य था।

➲ अंतिम मौर्य सम्राट वृहद्रथ की हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र ने कर दी। इससे मौर्य साम्राज्य समाप्त हो गया।

❑ शुंग वंश

➲ मौर्य शासक वृहद्रथ की हत्या कर उसका सेनापति पुष्यमित्र शुंग (184 ई.पू.) मगध का शासक बना।

➲ उसकी उपाधि 'सेनानी' थी। उसने यवन आक्रमण को विफल किया।

➲ पुष्यमित्र ने दो अश्वमेध यज्ञ किए। इसके पुरोहित पतंजलि थे।

➲ उसके बाद उसका पुत्र अग्निमित्र शासक बना। इसी अग्निमित्र और मालविका से जुड़ी कहानी पर महाकवि **कालिदास ने 'मालविकाग्निमित्रम्'** नामक नाटक की रचना की।

➲ देवभूति इस वंश का अंतिम शासक था।

❑ कण्व वंश

➲ देवभूति के मंत्री वसुमित्र ने उसकी हत्या कर कण्व वंश की नींव डाली।

➲ सुशर्मा इस वंश का आखिरी शासक था।

❑ कुषाण वंश

➲ कनिष्क ने पाटलिपुत्र को विजित कर अश्वघोष को अपने साथ ले गया।

* कुषाणकालीन **'नागार्जुन'** नालंदा के एक प्रसिद्ध रसायनविद् थे। प्रयोगशाला में प्रयोग किए जाने वाले उपकरण 'बीकर' का आविष्कार नागार्जुन ने किया था।

➲ कुषाण साम्राज्य के बाद पाटलिपुत्र पर लिच्छवियों का शासन रहा।

❑ गुप्त वंश

➲ समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति, कुमारगुप्त का बिलसंड स्तंभ लेख तथा स्कंदगुप्त का भितरी स्तंभ लेख के आधार पर निष्कर्षतः इस वंश का प्रथम शासक 'श्री गुप्त' था, जिसकी उपाधि 'महाराज' थी। इसका उत्तराधिकारी घटोत्कच था।

➲ चंद्रगुप्त प्रथम पहला शासक था जिसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।

➲ उसने लिच्छवि राजकुमारी 'कुमारदेवी' से विवाह किया।

➲ अपने राज्याभिषेक (319 ईस्वी) के आधार पर इसने गुप्त संवत की शुरुआत की।

https://telegram.me/study_with_pdf

- संपूर्ण बिहार और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्से उसके राज्य में शामिल थे।

समुद्रगुप्त

- अभिलेखों और सिक्कों पर इसे 'पराक्रमांक', 'अप्रतिरथ', 'व्याघ्रपराक्रम', 'सर्वराजोच्छेता' आदि उपाधियां प्रदान की गई हैं।
- इतिहासकार स्मिथ ने इसे 'भारत का नेपोलियन' कहा है।
- उत्तरापथ के द्वितीय अभियान में नौ राजाओं को विजित किया।
- दक्षिणापथ अभियान में बारह राजाओं को विजित किया।
- दक्षिणापथ अभियान में विजित क्षेत्रों पर समुद्रगुप्त ने केवल अधिराजत्व का दावा किया। उसकी नीति 'ग्रहण-मोक्ष-अनुग्रह' की थी।
- अशोक के इलाहाबाद स्तंभ लेख पर समुद्रगुप्त की प्रशस्ति उसके संधिविग्रहिक एवं राजकवि हरिषेण ने लिखा है।

रामगुप्त

- इसकी ऐतिहासिकता संदिग्ध है।

चंद्रगुप्त द्वितीय

- इसे देवराज, देवगुप्त, देव श्री, विक्रमादित्य आदि नामों/ उपाधियों से भी जाना जाता है।
- इसने **ध्रुव देवी** से विवाह किया था।
- दिल्ली के मेहरौली स्थित लौह स्तंभ लेख पर चंद्र शासक द्वारा सिंधु के पार बाह्लीको और पूर्व में बंग शासकों पर विजय का वर्णन है। चंद्र की पहचान चंद्रगुप्त द्वितीय से की जाती है।
- इसने अपनी **पुत्री प्रभावती** का विवाह **वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय** से किया था।
- चीन के यात्री **फाह्यान** ने इसके समय में ही भारत की यात्रा की थी। वह लगभग 14 वर्ष भारत में रहा।
- ऐसा माना जाता है कि उसके दरबार में नौ रत्न विराजते थे जिसमें कालिदास, धनवंतरि, क्षपणक, अमर सिंह, शंकु, बेताल भट्ट, घटकर्पर, वाराहमिहिर, वररुचि जैसे विद्वान शामिल थे।

कुमारगुप्त प्रथम

- मंदसौर अभिलेख (वत्सभट्टि रचित प्रशस्ति) से कुमारगुप्त के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।
- स्कंदगुप्त के भितरी अभिलेख से ज्ञात होता है कि कुमारगुप्त के शासनकाल में पुष्यमित्रों का आक्रमण हुआ था, जिसे रोकने के लिए कुमारगुप्त ने स्कंदगुप्त को भेजा था।
- नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना इसी के काल में हुई थी।
- कुमारगुप्त ने 'महेन्द्रादित्य' की उपाधि धारण की थी।

स्कंदगुप्त

- जूनागढ़ अभिलेख से पता चलता है कि स्कंदगुप्त ने म्लेच्छों (हूणों) के आक्रमण को विफल कर दिया था।
- उसने सुदर्शन झील (चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा निर्मित) का पुनरुद्धार करवाया था।
- **कहौम अभिलेख** के अनुसार, उसकी उपाधि 'शक्रादित्य' थी।
- उसने चीन में अपना राजदूत भेजा था।

गुप्त काल का उत्तरार्द्ध

- चीनी यात्री सुंगयुन ने 515-520 ई. में भारत की यात्रा की थी।
- ह्वेनसांग 629 ई. से 645 ई. तक (16 वर्ष) भारत में रहा।
- ह्वेनसांग के अनुसार, मगध के शासक नरसिंह गुप्त 'बालादित्य' ने मिहिरकुल (हूण) को पराजित किया था।
- स्कंदगुप्त के बाद पुरुगुप्त, कुमारगुप्त द्वितीय, बुधगुप्त, नरसिंह गुप्त 'बालादित्य', वैन्यगुप्त, कुमारगुप्त तृतीय ने शासन किया। विष्णुगुप्त-गुप्त वंश का अंतिम शासक था, जिसने मगध पर शासन किया।
- **गुप्त वंश के साथ ही मगध साम्राज्य का अंत हो गया।**

पाल वंश

- पाल वंश का संस्थापक गोपाल (750-770 ई.) को माना जाता है। बिहार उसके राज्य में शामिल था।
- गोपाल ने ओदंतपुरी महाविहार और विश्वविद्यालय की स्थापना की जो बिहार शरीफ, नालंदा जिले में स्थित थे।
- यह महाविहार हिरण्य प्रभात पर्वत पर पंचानन नदी के किनारे स्थित था।

धर्मपाल (770-810 ई.)

- इसी के समय त्रिपक्षीय संघर्ष शुरू हुआ। प्रतिहार नरेश वत्सराज ने धर्मपाल को पराजित किया। आगे चलकर राष्ट्रकूट नरेश ध्रुव ने धर्मपाल और वत्सराज दोनों को पराजित किया।
- ध्रुव के दक्षिण लौटने पर धर्मपाल ने कन्नौज पर आक्रमण कर इन्द्रायुध को परास्त कर अपने समर्थक चक्रायुध को कन्नौज के सिंहासन पर बैठाया।
- धर्मपाल के समय ही प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय (वत्सराज का पुत्र) ने मुंगेर तक का क्षेत्र कुछ समय के लिए विजित कर लिया था।
- धर्मपाल ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की तथा बौद्ध विहारों का निर्माण करवाया।
- विक्रमशिला महाविहार और विश्वविद्यालय भागलपुर जिले में शहर से लगभग 50 किमी. पूर्व में अंतीचक गांव में स्थित हैं।
- सोमपुरा महाविहार (बांग्लादेश के नवगांव जिले के पहाड़पुर गांव में) का निर्माण भी धर्मपाल ने करवाया था। वर्तमान में यह यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल है।

https://telegram.me/study_with_pdf

- धर्मपाल को अभिलेखों में 'परमसौगात' कहा गया है। गुजराती कवि सोड्ढल ने इसे 'उत्तरापथस्वामी' कहा है।

❑ **देवपाल (810-850 ई.)**

- इसने मुंगेर को अपनी राजधानी बनाया।
- इसने जावा, सुमात्रा (इंडोनेशिया) के शैलेंद्र वंशी शासक 'बालपुत्रदेव' को नालंदा में विहार बनवाने हेतु 5 गांव प्रदान किए।

❑ **महिपाल प्रथम**

- इसे पाल वंश की पुनर्स्थापना का श्रेय दिया जाता है।
- इसी के समय राजेंद्र चोल ने आक्रमण किया था।
- बौद्ध भिक्षु 'अतिस दीपंकर' के नेतृत्व में इसने तिब्बत में एक दूतमंडल भेजा।

❑ **रामपाल**

- रामपाल इस वंश का अंतिम शासक माना जाता है। इसी के समय **कैवर्त विद्रोह** हुआ था।

❑ **कर्नाट वंश**

- इस वंश का संस्थापक नान्यदेव था। इसके बाद गंगदेव फिर उसका पुत्र नरसिंह देव शासक बना।
- नरसिंह देव के समय ही बख्तियार खिलजी ने बिहार पर आक्रमण किया तथा नालंदा, विक्रमशिला जैसे महाविहारों को ध्वस्त कर दिया।

मध्यकालीन इतिहास

❑ **बिहार में इस्लामिक सत्ता का प्रवेश**

- बख्तियार खिलजी ने 1193 ई. से 1206 ई. के मध्य बिहार व बंगाल पर आक्रमण कर विजित किया। वह कुतुबुद्दीन ऐबक का सैन्य कमांडर था। 1206 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।
- 1225 ई. में इल्तुतमिश ने बिहार पर आक्रमण किया।
- इल्तुतमिश ने मलिक जानी को बिहार में अपना पहला सूबेदार नियुक्त किया।
- बिहार पर तुर्कों का वर्चस्व 1324 ई. में गयासुद्दीन तुगलक के आक्रमण के बाद कायम हुआ।
- बिहार के तिरहुत क्षेत्र का विलय मुहम्मद-बिन-तुगलक के काल में किया गया। इसका नाम तुगलकपुर रख दिया गया।
- 1398-99 ई. में तैमूर के आक्रमण ने दिल्ली सल्तनत को व्यापक क्षति पहुंचाई। इसके परिणामस्वरूप बिहार में वर्चस्व के लिए जौनपुर और बंगाल के शासकों में प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई।
- 1495-96 ई. के आस-पास सिकंदर लोदी ने दरिया खां नूहानी को बिहार का राज्यपाल नियुक्त किया।
- 1526 ई. में बाबर ने पानीपत के युद्ध में इब्राहिम लोदी को परास्त किया। इसके बाद दरिया खां के पुत्र बहार खां ने बिहार में स्वतंत्र रियासत की घोषणा कर दी।
- शेरशाह - **जन्म** 1472 ई. (कुछ विद्वानों के अनुसार, 1486 ई.), **बचपन का नाम** - फरीद, **पिता** - हसन खां (सासाराम के जागीरदार), **शिक्षा** - जौनपुर में।
- बहार खां लोहानी ने फरीद को 'शेर खां' की उपाधि दी।
- मुहम्मद शाह (बहार खां लोहानी) की मृत्यु के पश्चात उसकी विधवा पत्नी (दूदू बेगम) से शेर खां ने विवाह कर लिया।
- 1529 ई. में महमूद लोदी की तरफ से घाघरा युद्ध में भाग लिया।
- 1529 ई. में बंगाल के नुसरत शाह को पराजित कर **'हजरत-ए-आला'** की उपाधि धारण की।
- 1530 ई. में 'लाड मलिका' (चुनार के फौजदार ताज खां की विधवा) से विवाह किया।
- 1534 ई. में हुए सूरजगढ़ के युद्ध में बंगाल के महमूद शाह को पराजित किया।
- 1539 ई. में चौसा के युद्ध में हुमायूं को पराजित कर 'शेरशाह' की उपाधि धारण की।
- 1540 ई. में कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध में हुमायूं को परास्त कर 'द्वितीय अफगान साम्राज्य' और सूरवंश की स्थापना की।
- 1543 ई. में रायसीन विजय कर वहां के शासक पूरणमल को विश्वासघात से मार डाला और भीषण कत्लेआम करवाया, जो शेरशाह पर एक कलंक है।
- 1544 ई. में मेवाड़ विजय की।
- 1545 ई. में कालिंजर अभियान में घायल होने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।
- शेरशाह ने अपने साम्राज्य को सरकारों में विभाजित किया था। आरंभ में 47 सरकारें थीं। बंगाल विजय के बाद उसे 16 सरकारों में विभाजित किया। इस प्रकार कुल सरकारों की संख्या 63 हो गई। 'सरकार' का प्रशासन शिकदार-ए-शिकदारन तथा मुंशिफ-ए-मुशिफान द्वारा चलाया जाता था।
- उसने भू-राजस्व व्यवस्था हेतु मुख्यत: रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू की थी। उसने चांदी का 'रुपया' चलाया था।
- अब्बास खां सरवानी ने उसकी जीवनी लिखी है।
- शेरशाह ने सासाराम (बिहार) में अपना मकबरा बनवाया था। यह मकबरा एक कृत्रिम झील के मध्य अष्टकोणीय आकार में लाल

https://telegram.me/study_with_pdf

बलुआ पत्थरों से बना है।

- उसके बाद उसका पुत्र जलाल खां 'इस्लामशाह' के नाम से शासक बना।
- 1574-75 ई. में बिहार पुनः मुगल साम्राज्य में शामिल हो गया।
- औरंगजेब ने अजीमुश्शान को बिहार का सूबेदार बनाया। उसने पटना का नाम 'अजीमाबाद' कर दिया था।
- फर्रुखशियर का राज्याभिषेक पटना में हुआ था।
- 1701 ई. में औरंगजेब ने मुर्शीद कुली खां को बंगाल, बिहार, उड़ीसा का सूबेदार नियुक्त किया था। उसने 1704 ई. में बंगाल की राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद स्थानांतरित कर दिया था।
- गिरिया के युद्ध के बाद अलीवर्दी खां (1740-56 ई.) नवाब बना। वह अंतिम शक्तिशाली नवाब था।
- 1756 ई. में सिराजुद्दौला (अलीवर्दी खां का नाती) बंगाल का नवाब बना।
- 23 जून, 1757 को प्लासी के युद्ध में वह अंग्रेजों से हार गया।
- 28 जून, 1757 को मीरजाफर बंगाल का नवाब बना।

आधुनिक इतिहास

बिहार में यूरोपीय कंपनियों का प्रवेश

- पटना में डचों ने 1638 ई. में अपना व्यापारिक केंद्र स्थापित किया।
- वर्तमान पटना कॉलेज और कलेक्ट्रेट डचों की अफीम की कोठी हुआ करती थी।
- सूती वस्त्र, अफीम, नील आदि यहां से निर्यात होता था।
- 1760 ई. में मीरजाफर के स्थान पर मीरकासिम को बंगाल का नवाब बनाया गया।
- 1763 ई. मीरकासिम को हटाकर, मीरजाफर को पुनः बंगाल का नवाब बनाया गया।
- 19 जुलाई, 1763 मीरकासिम को एडम्स थॉमस ने 'कटवा के युद्ध' में पराजित किया। इसके बाद गिरिया तथा उधवा नाला के युद्ध में भी वह पराजित हुआ।
- 22 अक्टूबर, 1764 को मीरकासिम, अवध का नवाब शुजाउद्दौला तथा मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय की संयुक्त सेना 'बक्सर के युद्ध' में मेजर हेक्टर मुनरो से पराजित हो गई।
- 12 अगस्त, 1765 को इलाहाबाद की संधि के तहत मुगल सम्राट शाहआलम-II को 26 लाख रुपये वार्षिक भुगतान के बदले ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हो गई।

प्रमुख विद्रोह

- क्लाइव के काल में मुंगेर और इलाहाबाद के सैनिकों ने विद्रोह किया था, जिसे श्वेत विद्रोह कहा जाता है।
- 1760-61 ई. में नील विद्रोह हुआ।
- **वहाबी आंदोलन** - इसके प्रवर्तक अब्दुल वहाब थे। भारत में इसे सैयद अहमद बरेलवी ने लोकप्रिय बनाया। पटना इस आंदोलन का महत्वपूर्ण केंद्र था।
- **फराजी आंदोलन** - हाजी शरीयतुल्ला इसके मुख्य नेता थे। पटना इसका केंद्र था।
- ब्रिटिश राज के दौरान बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में स्थित कैदियों को पीतल का लोटा दिया जाता था, परंतु 1856 में इसके स्थान पर मिट्टी के बर्तन दिए गए जिससे 'लोटा विद्रोह' भड़का।
- हाजीपुर, तिरहुत, सारण और पूर्णिया में शोरे को इकट्ठा करने एवं तैयार करने का काम नोनिया करते थे। कंपनी राज होने के बाद शोरे की इजारेदारी अधिक थी। फलतः नोनिया चोरी एवं गुप्त रूप से शोरे का व्यापार करने लगे, जिससे इससे जुड़े व्यापारियों को अंग्रेजी क्रूरता का शिकार होना पड़ा, जो 1770-1800 ई. के बीच भड़के नोनिया विद्रोह का प्रमुख कारण था।

वर्ष	विद्रोह	प्रमुख क्षेत्र	नेतृत्वकर्ता	विशेषताएं
1767–77	ढाल विद्रोह	सिंहभूम	राजा जगन्नाथ ढाल	
1769–1805	चुआर विद्रोह		रघुनाथ महतो, श्याम गंजम, मंगल सिंह, दुर्जन सिंह, जगन्नाथ पातर आदि	
1770–71	चेरो विद्रोह	पलामू	चिरंजीत राय, जयनाथ सिंह	पलामू की राजगद्दी पर कब्जा करने के लिए, गोपाल राय पलामू का राजा घोषित
1772–82	पहाड़िया विद्रोह	संथाल परगना	जगन्नाथ देव, रानी सर्वेश्वरी	
1789–1832	तमाड़ विद्रोह	तमाड़	भोलानाथ सहाय, विष्णु मानकी (1789), दुखन मुंडा (1807), ठाकुर विश्वनाथ सिंह (1796)	

https://telegram.me/study_with_pdf

1784	तिलका विद्रोह	राजमहल क्षेत्र	तिलका मांझी	इन्हें आदि विद्रोही भी कहा जाता था।
1820–21	हो विद्रोह	कोल्हान	पोटो सरदार	
1831–32	कोल विद्रोह	छोटानागपुर खास, पलामू, सिंहभूम	सिंगराई मानकी, सुर्गा मुंडा, बुद्ध भगत, बिंदराई मानकी	
1832–33	भूमिज विद्रोह	बड़ाभूम (वीरभूम)	गंगा नारायण	अंग्रेजों ने इसे गंगा नारायण का हंगामा कहा था।
1855–56	संथाल विद्रोह	संथाल परगना	सिदो, कान्हू, चांद, भैरव	इसे संथाल हूल भी कहा जाता है। हूल का शाब्दिक अर्थ है- विद्रोह या बगावत।
1858–95	सरदारी लड़ाई	छोटानागपुर	कोल सरदार	इसे मुल्की (मातृभूमि) या मिल्की (जमीन) की लड़ाई भी कहा जाता है। यह विद्रोह कोलों के जमीन को दूसरे लोगों द्वारा हथिया लिए जाने का परिणाम था।
1874-75	खरवार आंदोलन	संथाल परगना	भगीरथ मांझी	मूल चरित्र जनजातीय सुधारवादी। खरवार संथाल की एक उपजाति है, जो प्राचीन मूल्यों की पुनर्स्थापना करना चाहती थी। आरंभ में एकेश्वरवाद एवं सामाजिक सुधार की शिक्षा देता था। केवल सूर्य एवं दुर्गा की पूजा करने एवं अन्य सभी का परित्याग करने पर जोर। मद्यनिषेध, नाच-गाना पर प्रतिबंध आदि।
	सफाहोर आंदोलन		लाल हेम्ब्रम (लाल बाबा)	यह आंदोलन खरवार आंदोलन की ही एक उपधारा थी। चारित्रिक शुद्धता पर बल।
1899–1900	मुंडा विद्रोह	दक्षिणी रांची	बिरसा मुंडा	
1914-1919	ताना भगत आंदोलन		जतरा भगत, सिद्धू भगत एवं अन्य	
1931	हरिबाबा आंदोलन	सिंहभूम	दुका हो (हरि बाबा)	

❑ कोल विद्रोह

- यह बिहार का पहला सुसंगठित और व्यापक जनजातीय विद्रोह था।
- इस विद्रोह से केवल हजारीबाग का क्षेत्र ही अछूता रहा था।
- इस विद्रोह का तात्कालिक कारण बना सिंगराई मानकी के अधिकारों को छीनकर सिक्खों को दे दिया जाना एवं उसकी बहनों पर किया गया अत्याचार।
- दिकुओं द्वारा किए गए इस प्रकार के कुकृत्यों के कारण सिंगराई मानकी एवं सुर्गा मुंडा ने अन्य आदिवासियों के साथ मिलकर विद्रोह का बिगुल फूंक दिया।
- शीघ्र ही यह विद्रोह एक हिंसक रूप ग्रहण कर समस्त क्षेत्र में फैल गया। अंततः एक लंबे संघर्ष के पश्चात यह विद्रोह भी दबा दिया गया।
- कोल विद्रोह के बाद छोटानागपुर की शासन व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए।
- अब इस क्षेत्र पर शासन के लिए भारत चार्टर अधिनियम, 1833 के तहत विनियमन रेगुलेशन (XIII) का प्रावधान लागू किया गया।
- इस कानून के अंतर्गत छोटानागपुर खास, पलामू, खड़गडीहा, रामगढ़ और कोररूंडा को पूर्व रामगढ़ जिला से अलग कर इन्हें जंगल महाल व ट्रिब्युटरी महाल के एक गैर-रेगुलेशन प्रांत के रूप में संगठित कर दक्षिण-पश्चिम सीमांत एजेंसी का नाम दिया गया।
- इस प्रशासनिक क्षेत्र पर शासन की जिम्मेदारी गवर्नर जनरल के प्रतिनिधि को सौंपी गई एवं इस पद पर प्रतिनियुक्त प्रथम प्रतिनिधि कैप्टन थॉमस विलकिंसन थे।
- ये वही विलकिंसन थे, जिन्होंने कोल विद्रोह के दमन में अग्रणी

https://telegram.me/study_with_pdf

भूमिका निभाई थी एवं आगे जनसाधारण में किसुन साहेब के नाम से प्रसिद्ध हुए।

- आगे विलकिंसन ने ही विलकिंसन रूल बनाया, जिसे कोल्हान क्षेत्र में 1837 ई. में लागू किया गया।

❑ संथाल विद्रोह

- **इस विद्रोह का मुख्य कारण था**–जमींदारों द्वारा लगान की अत्यधिक वसूली, महाजनों द्वारा संथालों का शोषण, पुलिस व न्यायालय का पक्षपातपूर्ण व्यवहार तथा सरकार द्वारा भागलपुर से बर्दवान के बीच रेल बिछाने के कार्य में संथालों से बेगारी करवाना।
- **इस विद्रोह का मुख्य उद्देश्य था**–दिकुओं को भगाना, विदेशी शासन का अंत करना तथा अबुआ राज अर्थात अपना शासन स्थापित करना।
- 30 जून, 1855 को भोगनाडीह (साहिबगंज) में संथाल प्रतिनिधियों ने एकत्रित होकर विद्रोह का निर्णय लिया।
- इस बैठक में सिदो को राजा, कान्हू को मंत्री, चांद को प्रशासक तथा भैरव को सेनापति चुना गया।
- संथाल विद्रोह में महिलाओं ने भी हिस्सा लिया था, जिसका उदाहरण सिदो-कान्हू की बहनों (फूलो और झानो) के रूप में मिलता है।
- इस विद्रोह का प्रसार भागलपुर से बर्दवान तक हो गया था। बरहैत विद्रोहियों का मुख्य केंद्र था।
- दामिन-ए-कोह में सिदो, कान्हू, चांद तथा भैरव ने, हजारीबाग में अर्जुन मांझी तथा भैरव मांझी ने एवं वीरभूम में गोरा मांझी ने विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया।
- विद्रोहियों ने महाजनों, दिकुओं एवं सरकारी भवनों को निशाना बनाया।
- इस विद्रोह के प्रति सरकार ने दमनकारी रुख अपनाया एवं अत्यधिक बर्बरता से विद्रोह एवं विद्रोहियों का दमन किया।
- सर्वप्रथम मेजर बरो को विद्रोह के दमन हेतु भेजा गया, जिन्हें पीरपैंती के मैदान में संथालों ने पराजित किया।
- इस विद्रोह के दमन का मुख्य श्रेय कैप्टेन अलेक्जेंडर को दिया जाता है एवं इस कार्य में उन्हें लेफ्टिनेंट थॉमसन और रीड ने सहयोग प्रदान किया था।
- कान्हू संघर्ष में मारा गया, फिर चांद एवं भैरव मारे गए। अंततः फरवरी, 1856 में सिदो को पकड़कर बरहैत में फांसी दे दी गई।
- इस विद्रोह के पश्चात (1858 ई.) ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी प्रशासनिक व्यवस्था में बड़े पैमाने पर परिवर्तन एवं सुधार किए।
- एलिस एडम्स की रिपोर्ट के आधार पर 1855 के अधिनियम 37 के अंतर्गत दामिन-ए-कोह का नाम बदलकर संथाल परगना कर दिया गया जिसमें दुमका, देवघर, गोड्डा एवं राजमहल चार जिले थे।
- साथ ही 1860 ई. में संथाल परगना काश्तकारी अधिनियम पारित कर संथालों के अधिकार पुनः बहाल किए गए। संथाल परगना क्षेत्र में शासन के लिए एक कमिश्नर की नियुक्ति की गई।
- भागलपुर के कमिश्नर जॉर्ज यूल की सहायता से एक नया पुलिस कानून जिसे 'यूल नियम' (1856) कहते हैं, लाया गया।
- इसके अंतर्गत पारंपरिक ग्राम प्रधान व्यवस्था को लागू कर आम सहमति के आधार पर ग्राम प्रधान को पुलिस शक्तियां दी गई।
- संथाल विद्रोह के महत्व को दर्शाते हुए कार्ल मार्क्स ने इसे भारत की प्रथम जनक्रांति माना, जो ब्रिटिश शासन को तो नहीं उखाड़ पाया किंतु सफाहोर आंदोलन को जन्म देने का कारण अवश्य बन गया।
- वर्तमान में झारखंड सरकार संथाल विद्रोह के सम्मान में 30 जून को 'हूल दिवस' के रूप में मनाती है।

❑ मुंडा विद्रोह

- बिहार में इस आंदोलन की व्यापकता को देखते हुए ही इसे 'उलगुलान' या 'महान हलचल' की संज्ञा दी जाती है।
- 1899–1900 ई. में हुए इस आंदोलन ने दक्षिण रांची सहित अन्य क्षेत्रों को भी प्रभावित किया था।
- चूंकि यह विद्रोह मुंडाओं का संगठित विद्रोह था, अतः इसे मुंडा विद्रोह कहा जाता है।
- यह विद्रोह सामूहिक भू-स्वामित्व व्यवस्था का जमींदारी भू-स्वामित्व व्यवस्था में परिवर्तन के कारण घटित हुआ, जिसका चरमोत्कर्ष बिरसा के धार्मिक-राजनीतिक आंदोलन के रूप में हुआ।
- बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर, 1875 को रांची (वर्तमान खूंटी) जिले के उलिहातू गांव में हुआ था।
- बिरसा के आरंभिक शिक्षक का नाम जयपाल एवं बिरसा के धार्मिक गुरु का नाम आनंद पांडे था, जो एक वैष्णव धर्मावलंबी थे।
- बिरसा के परिवार ने ईसाई धर्म को अपना लिया एवं 1886 ई. में जर्मन ईसाई मिशन द्वारा संचालित बाईबासा के एक उच्च विद्यालय में बिरसा का दाखिला दाउद नाम से हुआ।
- आगे बिरसा ने ईसाई धर्म को त्याग दिया एवं आनंद पांडे के संपर्क में आए, जहां इन्होंने वैष्णव धर्म को जाना।
- फिर बिरसा ने मुंडा, वैष्णव और ईसाई धर्म के दर्शनों का मिला-जुला एक धर्म चलाया, जिसे लोगों ने 'बिरसा धर्म' कहा एवं इनके अनुयायी बिरसाइत कहे गए।
- उन्होंने लोगों को साफ-सुथरा रहने, नशाबंदी, सामाजिक कुरीतियों एवं अंधविश्वासों को त्यागने और सबसे बढ़कर एकेश्वरवाद की ओर उन्मुख होने के लिए प्रेरित किया। बिरसा ने केवल 'सिंगाबोंगा' की पूजा करने पर बल दिया।

https://telegram.me/study_with_pdf

- 1895 ई. में बिरसा को राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया और हजारीबाग केंद्रीय कारागार में जुर्माना एवं दो साल के कारावास की सजा दी गई।
- परंतु दो वर्षों के बाद 30 नवंबर, 1897 के दिन बिरसा को रांची जेल से छोड़ दिया गया।
- रिहा होने के बाद बिरसा ने अपनी गतिविधियों को तेज कर दिया एवं मुंडाओं को हथियारबंद करना प्रारंभ कर दिया।
- 25 दिसंबर, 1899 को उलगुलान की आग सिंहभूम के चक्रधरपुर और रांची के खूंटी, करी, तोरपा, तमाड़, बसिया क्षेत्रों में भड़क उठी।
- विद्रोहियों ने ईसाइयों की भीड़ और गिरजाघरों पर हमला किया।
- प्रारंभ में निशाने पर सभी ईसाई धर्मावलंबी थे, परंतु बाद में निर्दोषों की हत्या से बचने के उद्देश्य से केवल अंग्रेज अफसरों के खिलाफ कार्यवाही की गई।
- सरकार ने इस विद्रोह का कड़ाई से दमन किया।
- 9 जनवरी, 1900 को डोम्बारी से कुछ दूर सैल रैकाब पहाड़ी पर विद्रोहियों एवं अंग्रेजों में लड़ाई हुई, जिसमें कमिश्नर फारबेस एवं डिप्टी कमिश्नर स्ट्रीट फील्ड के हाथों विद्रोहियों की पराजय हुई।
- 3 मार्च, 1900 को 500 रुपये के सरकारी ईनाम के लालच में जीराकेल गांवों के लोगों ने बिरसा मुंडा के गुप्त स्थान के बारे में अंग्रेजों को जानकारी दे दी और बिरसा को चक्रधरपुर (सिंहभूम) से पकड़ लिया गया।
- 1 जून, 1900 को डिप्टी कमिश्नर ने ऐलान किया कि बिरसा को हैजा हो गया है और 9 जून, 1900 को बिरसा ने जेल में अंतिम सांस ली।
- **विद्रोह के कारण**—मुंडा खूंटकट्टी व्यवस्था को समाप्त करना, बैठ बेगारी प्रथा का प्रचलन करना, मिशनरियों के भ्रामक नीतियां एवं उनसे मुंडाओं का मोह भंग होना, पुलिस एवं कानून व्यवस्था से निराशा। **तात्कालिक कारण** - 1894 का छोटानागपुर का वन सुरक्षा अधिनियम।
- **विद्रोह के मुख्य उद्देश्य**—स्वतंत्र मुंडा राज्य की स्थापना करना, दिकुओं से अपनी भूमि वापस प्राप्त कर उन्हें अपने क्षेत्र से निकालना, ईसाई धर्म का विरोध करना।
- **विद्रोह के महत्वपूर्ण परिणाम**— वर्ष 1902 में गुमला एवं वर्ष 1903 में खूंटी को अनुमंडल के रूप में स्थापित किया जाना, 1908 के छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम पारित कर खूंटकट्टी अधिकारों को पुनर्स्थापित करना, बंधुआ मजदूरी पर प्रतिबंध एवं भू-राजस्व की दरें निर्धारित करना।

टाना/ताना भगत आंदोलन

- ताना का शाब्दिक अर्थ है—तानना या खींचना। ये भगत अपनी खराब स्थिति को खींचकर दूर फेंकना एवं उन्नत स्थिति को प्राप्त करना चाहते थे, इसलिए इन्हें ताना भगत एवं इनके आंदोलन को ताना भगत आंदोलन कहा गया।
- यह आंदोलन अपने शुरुआती चरण में कुरुख धरम (कुरूख या उरांव का मूल धर्म) के नाम से जाना गया था।
- अप्रैल, 1914 से उसने उरांवों में धार्मिक सुधार संबंधी कार्यों पर जोर दिया। उसने केवल धर्मेश (उरांवों के देवता) की आराधना पर बल दिया, पशु बलि, मांस-मदिरा एवं कुरीतियों के त्याग पर बल दिया। वस्तुत: जतरा भगत के नेतृत्व में ऐलान हुआ कि मालगुजारी नहीं देंगे, बेगारी नहीं करेंगे और कर नहीं देंगे। उसने दिकुओं के यहां मजदूरी न करने का अभियान चलाया, जिस कारण उसे वर्ष 1916 में कारागार में डाल दिया गया। प्राय: आदिवासियों द्वारा जतरा भगत को बिरसा मुंडा का ही एक रूप माना जाता है एवं उसे जर्मन कैसर बाबा भी कहा जाता था।
- आगे ताना भगत आंदोलन को देवमनियां भगत, शिबू भगत, बलराम भगत, भीखू भगत ने नेतृत्व प्रदान किया।
- उन्होंने पलामू के राजा के समक्ष चार सूत्री मांगें प्रस्तुत की—

(i) उन्हें स्वशासन प्रदान किया जाए।
(ii) राजपद समाप्त किया जाए।
(iii) समानता स्थापित की जाए।
(iv) भू-राजस्व समाप्त किया जाए।

- पलामू के राजा ने उपर्युक्त मांगों को ठुकरा दिया, लेकिन फिर भी ये मांगें जनजातीय आंदोलन में आए बदलावों को दर्शाती हैं।
- दिसंबर, 1919 को तुरिया भगत एवं जीतू भगत ने चौकीदारी टैक्स एवं जमींदारों को मालगुजारी नहीं देने का आंदोलन चलाया। परंतु समय बीतने के साथ ताना भगत आंदोलन क्षीण पड़ने लगा तथा इस धार्मिक आंदोलन को राजनीतिक रंग में रंगने की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। इसी समय ताना भगतों ने गांधीजी के बारे में सुना तथा वे यह समझने लगे कि गांधीजी के रूप में जतरा भगत का पुनर्जन्म हुआ है।
- जब गांधीजी ने असहयोग आंदोलन आरंभ किया तो सिद्धू भगत के नेतृत्व में ताना भगत भी पहली बार भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित हुए।
- ताना भगतों ने शराब दुकानों पर धरना देकर, सत्याग्रह प्रदर्शनों में भाग लेकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रियता का परिचय दिया। उन्होंने गांधीजी से प्रभावित होकर चरखा एवं खादी वस्त्रों को भी अपनाया।

https://telegram.me/study_with_pdf

- कांग्रेस के इतिहास में भी दर्ज है कि वर्ष 1922 में कांग्रेस के गया अधिवेशन और वर्ष 1923 के नागपुर सत्याग्रह में बड़ी संख्या में ताना भगत शामिल हुए थे।
- वर्ष 1940 में कांग्रेस के अधिवेशन में ताना भगतों ने महात्मा गांधी को 400 रुपयों की भेंट दी थी।

❑ 1857 का विद्रोह

- 3 जुलाई, 1857 को पीर अली के नेतृत्व में पटना में विद्रोह हुआ।
- 25 जुलाई, 1857 को दानापुर में सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।
- आरा (जगदीशपुर, भोजपुर जिला) के जमींदार बाबू कुंवर सिंह ने विद्रोही सैनिकों का नेतृत्व 26 जुलाई को आरा में किया। कुंवर सिंह ने पूर्वी उत्तर प्रदेश तक के क्षेत्र पर अंग्रेजी राज्य को समाप्त कर दिया था। युद्ध में घायल कुंवर सिंह की मृत्यु अप्रैल, 1858 में हुई । इसके बाद उनके भाई अमर सिंह ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया।

* वर्ष 1907 में 'बिहार टाइम्स' के संपादक महेश नारायण की मृत्यु के पश्चात पृथक बिहार के लिए आंदोलन का नेतृत्व सच्चिदानंद सिन्हा ने किया। * ब्रह्मदेव नारायण, अली इमाम, मजहरुल हक और हसन इमाम भी इस आंदोलन में डॉ. सिन्हा के साथ हो गए।

- **चंपारण सत्याग्रह** - नील की खेती करवाने वाले अंग्रेज और स्थानीय किसानों के मध्य एक समझौता होता था, जिसमें किसानों को अपनी भूमि के 3/20वें भाग पर नील की खेती करनी होती थी, इसे 'तिन-कठिया पद्धति' कहते थे।
- कृत्रिम रंगों के विकास के बाद नील का व्यापार लाभदायी नहीं रहा, इस कारण अंग्रेज किसानों की भूमि छोड़ने लगे और बदले में मुआवजे की मांग कर रहे थे, जिसे देने में किसान असमर्थ थे।
- **मुरली भरहवा गांव के निवासी राजकुमार शुक्ल** किसानों की समस्या लेकर कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन, 1916 में गांधीजी से मिले। इसके बाद वे कलकत्ता में भी गांधीजी से मिले।
- 10 अप्रैल, 1917 को गांधीजी पटना पहुंचे। वहां से वे चंपारण पहुंचे। यहां मजिस्ट्रेट ने उन्हें वापस जाने को कहा, जिसे गांधीजी ने मानने से इंकार कर दिया।
- गांधीजी ने लगभग 8000 किसानों से वार्ता की।
- पटना में गांधीजी मजहरुल हक से मिले। इसके बाद बागान मालिक संघ के सचिव जेम्स विलसन से भी मिले।
- 15 अप्रैल को गांधीजी मोतिहारी पहुंचे।
- 22 अप्रैल को गांधीजी बेतिया पहुंचे। यहां वे हजारीमल धर्मशाला में रुके।
- गांधीजी के साथ राजकुमार शुक्ल, ब्रज किशोर प्रसाद, रामनवमी प्रसाद, राजेंद्र प्रसाद, जे.बी. कृपलानी, प्रभूदास आदि थे।
- चंपारण जांच समिति में श्रीमती कस्तूरबा, डॉ. देव, ब्रज किशोर प्रसाद, धरनीधर प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिंह, रामनवमी प्रसाद, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, महाराजा कृत्यानंद सिंह, महात्मा गांधी तथा एफ.जी. स्लाई (अध्यक्ष) आदि शामिल थे।
- वर्ष 1918 में चंपारण एग्रेरियन एक्ट ने तिन-कठिया कानून को समाप्त कर दिया।
- 24 मई, 1918 को गांधीजी ने मोतिहारी आश्रम का शिलान्यास किया।
- **खिलाफत आंदोलन** - वर्ष 1919-20 में हसन इमाम के नेतृत्व में पटना में चलाया गया।
- **असहयोग आंदोलन** - डॉ. राजेंद्र प्रसाद, ब्रज किशोर प्रसाद, मजहरुल हक, हसन इमाम, मोहम्मद शफी आदि प्रमुख नेताओं ने बिहार में असहयोग आंदोलन का नेतृत्व किया।
- मदरलैंड नामक अखबार मजहरुल हक ने निकाला था।
- 1 अगस्त, 1920 से 12 फरवरी, 1922 तक असहयोग आंदोलन चला।
- वर्ष 1922 में कांग्रेस का गया में अधिवेशन हुआ, जिसके अध्यक्ष चितरंजन दास (देशबंधु) थे।
- **किसान सभा** - वर्ष 1929 में स्वामी सहजानंद ने बिहार प्रांतीय किसान सभा की स्थापना सोनपुर के मेले में की। स्वामी सहजानंद अध्यक्ष तथा श्रीकृष्ण सिन्हा सचिव बने।
- वर्ष 1936 में लखनऊ में अखिल भारतीय किसान सभा का गठन हुआ।
- **बड़हिया ताल या बकाश्त आंदोलन** - लगान अदा न करने पर किसानों की भूमि जमींदार के पास चली जाती थी, जिसे बकाश्त कहते थे।
- यह आंदोलन कार्यानंद शर्मा के नेतृत्व में मुंगेर (1936-38) में चलाया गया।
- नासिक जेल में वर्ष 1933 में आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण आदि ने अखिल भारतीय समाजवादी संगठन बनाने की योजना बनाई।
- वर्ष 1931 में पटना में बिहार सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई।
- वर्ष 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई।
- **सविनय अवज्ञा आंदोलन** - वर्ष 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पारित।
- 26 जनवरी, 1930 को स्वाधीनता दिवस मनाया गया।
- राजेंद्र प्रसाद ने महात्मा गांधी की सहमति से चौकीदारी कर की ना-अदायगी का आंदोलन चलाया।
- बिपिन बिहारी वर्मा के नेतृत्व में सारण और चंपारण में नमक सत्याग्रह आंदोलन चलाया गया।

 https://telegram.me/study_with_pdf

- राजेंद्र प्रसाद और जे.बी. कृपलानी ने मोतिहारी में नमक कानून भंग किया।
- मुंगेर के बरही में सरकारी तंत्र निष्प्रभावी हो गया था।
- **भारत छोड़ो आंदोलन** - 9 अगस्त, 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ।
- ऑपरेशन 'जीरो ऑवर' चलाकर सरकार ने सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया।
- 11 अगस्त को पटना सचिवालय कांड में कई छात्रों की जान चली गई। छात्रों के जुलूस पर जिलाधिकारी जी. आर्चर ने गोली चलवाई थी।
- राजेंद्र प्रसाद को बांकीपुर जेल में रखा गया था।
- 'आजाद दस्ते' का गठन जयप्रकाश नारायण ने किया था।
- **स्वतंत्रता प्राप्ति** - 9 दिसंबर, 1946 को संविधान सभा के अस्थायी अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को बनाया गया।
- 11 दिसंबर, 1946 को डॉ. राजेंद्र प्रसाद अध्यक्ष चुने गए।
- 2 जनवरी, 1946 को श्री श्रीकृष्ण सिन्हा के नेतृत्व में बिहार में प्रांतीय सरकार का गठन हुआ।
- 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू हुआ और बिहार भारत संघ के एक राज्य के रूप में इसमें शामिल हुआ।

बिहार का भूगोल

- बिहार 83°19'50" पूर्व से 88°17'40" पूर्व देशांतर के मध्य स्थित है। *भारत के पूर्वी भाग में अवस्थित बिहार का क्षेत्रफल 94163 वर्ग किमी. है, जिसका देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में लगभग 2.86 प्रतिशत हिस्सा है।
- **बिहार क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का 12वां (जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन के पश्चात) सबसे बड़ा राज्य है।** राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेशों में समग्र रूप से 13वां स्थान (लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश को शामिल करने के पश्चात) है।

❑ बिहार की भूगर्भिक संरचना

चट्टानों के प्रकार	क्षेत्र
धारवाड़	- दक्षिण-पूर्व बिहार, जैसे- मुंगेर, जमुई, नवादा - अभ्रक के निक्षेप पाए जाते हैं।
विंध्यन	- दक्षिण-पश्चिम बिहार, कैमूर एवं सोन नदी घाटी (रोहतास) में
टर्शियरी	- बिहार के हिमालयी तराई क्षेत्र में, मुख्यत: पश्चिम चंपारण में
क्वार्टनरी	- हिमालय एवं छोटानागपुर पठारी क्षेत्र के भागों में। बिहार के अधिकांश भागों में यह चट्टान पाई जाती है।

❑ भू-आकृतिक विभाजन

- बिहार को मुख्यत: तीन भू-आकृतिक प्रदेशों में बांटा जा सकता है- शिवालिक श्रेणी, बिहार का मैदान और दक्षिणी पठारी क्षेत्र।
- बिहार की सुमेश्वर (सोमेश्वर) श्रेणी और शिवालिक श्रेणी का निर्माण एक ही काल 'प्लीस्टोसीन काल' में हुआ है।
- शिवालिक श्रेणी का विस्तार बिहार में पश्चिम चंपारण के उत्तरी भाग में है।
- इसे रामनगर दून, सुमेश्वर श्रेणी एवं हरहा घाटी के रूप में उप-विभाजित किया जा सकता है।
- सुमेश्वर श्रेणी का विस्तार पश्चिम चंपारण जिले में है, जिसकी **सर्वोच्च चोटी 'फोर्ट सुमेश्वर' 880 मीटर** (लगभग 2884 फीट) ऊंची है।
- इस क्षेत्र में सुमेश्वर, भिखनाठोरी, कापन तथा हरहा प्रमुख दर्रे हैं, जिनसे भारत और नेपाल के बीच संपर्क मार्ग बनता है।
- बिहार के मैदान को दो भागों में बांटा जा सकता है - गंगा का उत्तरी मैदान एवं गंगा का दक्षिणी मैदान।

2. गंगा का मैदान–गंगा के मैदान का क्षेत्रफल 90,650 वर्ग किलोमीटर है, जो बिहार के कुल क्षेत्रफल का 96.27 प्रतिशत है। यह मैदान उत्तर में शिवालिक श्रेणी से लेकर दक्षिण में छोटानागपुर पठार तक फैला हुआ है। भूगर्भिक दृष्टि से यह मैदान अग्रभीर (Foredeep) है।

- गंगा का उत्तरी मैदान गंगा में उत्तर दिशा से मिलने वाली सहायक नदियों के अवक्षेप से बना है, जबकि गंगा का दक्षिणी मैदान गंगा में दक्षिण दिशा से मिलने वाली सहायक नदियों के अवक्षेप से बना है।
- उत्तरी मैदान का विस्तार पश्चिम एवं पूर्वी चंपारण (तराई क्षेत्र), समस्तीपुर, बेगूसराय, सहरसा, कटिहार आदि जिलों में है।
- बिहार के उत्तरी गंगा के मैदान में प्राकृतिक रूप से जलमग्न निम्न भू-भाग पाया जाता है, जिसे 'चौर' या 'मन' कहा जाता है। 'चौर' का प्रमुख उदाहरण पश्चिम चंपारण का लखनी चौर, पूर्वी चंपारण का बहादुरपुर एवं सुंदरपुर चौर आदि हैं।

https://telegram.me/study_with_pdf

- दक्षिणी मैदान गया, राजगीर, गिरियक, बराबर, खड़गपुर, शेखपुरा, जमालपुर, बिहार शरीफ आदि पहाड़ियों से घिरा त्रिभुजाकार मैदान है।
- इस क्षेत्र में टाल (निम्न भूमि) क्षेत्र पाए जाते हैं, जिनका विस्तार पटना से लखीसराय तक है। इस टाल क्षेत्र में बड़हिया एवं मोकामा टाल क्षेत्र प्रसिद्ध हैं।
- गंगा के मैदान में बाढ़ क्षेत्र में बनने वाली विशिष्ट आकृति क्षेत्र दियारा भूमि है।
- उत्तरी गंगा मैदान में चौर (निम्न भूमि) एवं मन (गोखुर झील) की आकृति पाई जाती है।
- **दक्षिणी पठारी क्षेत्र** - यह पश्चिम में कैमूर से लेकर पूर्व में बांका तक विस्तृत है।
- यह नीस, शिष्ट और ग्रेनाइट चट्टानों से बना है।
- इसके अंतर्गत रोहतास एवं कैमूर जिले में कैमूर का पठार है, जहां बलुआ पत्थर मिलते हैं।
- गया, मंदार, बराबर और जेवियन की पहाड़ियां, राजगीर और शेखपुरा पहाड़ियां, बिहार शरीफ, मुंगेर और जमालपुर की पहाड़ियां हैं।
- सोन नदी, कैमूर के पठार को छोटानागपुर के पठार से अलग करती है।

❑ बिहार की प्रमुख नदियां

- बिहार में 273.3 हजार हेक्टेयर में जल क्षेत्र का और लगभग 3,200 किमी. लंबाई में नदियों का विस्तार है। दोनों का राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में 3.9 प्रतिशत हिस्सा है (स्रोत- बिहार आर्थिक समीक्षा 2016-17)।
- कर्मनाशा, गंडक और घाघरा नदियां उत्तर प्रदेश और बिहार के मध्य सीमा रेखा निर्धारित करती हैं।
- **बिहार की सीमा में बहने वाली नदियों में सबसे बड़ी नदी गंगा है।** यह बिहार में भोजपुर और सारण जिलों के मध्य सीमा बनाती हुई प्रवेश करती है। गंगा की सहायक नदियों में गंडक, सोन, पुनपुन, घाघरा (सरयू), कोसी, महानंदा इत्यादि प्रमुख हैं।
- अन्नपूर्णा पहाड़ी से निकल कर गंडक नदी नेपाल होते हुए उत्तर बिहार के हाजीपुर और सोनपुर नामक नगरों से बहती हुई मुजफ्फरपुर तथा सारण जिलों की सीमा बनाती हुई गंगा में मिल जाती है।
- सोमेश्वर की पहाड़ियों से निकली बूढ़ी गंडक पूर्व चंपारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा और उत्तरी मुंगेर जिलों में बहती हुई गंगा में मिल जाती है। इसे गंगा की सात धाराओं में से एक मानी जाने वाली गंडकी नदी का प्रतिरूप माना जाता है। इसे शुरुआत में सिकराना नदी के नाम से भी जानते हैं। बाण गंगा, हरहा, मनियरी इसकी प्रमुख सहायक नदियां हैं।
- हिमालय की महाभारत श्रेणियों से निकली बागमती नदी बाढ़ के दिनों में अक्सर अपना प्रवाह मार्ग बदल लेती है, जिससे दरभंगा, मधुबनी तथा मुजफ्फरपुर जिलों में अत्यधिक जान-माल की हानि होती है। लाखनदेई, चकनाहा, लाल बकेया, जमुने, बागमती कोला इसकी प्रमुख सहायक नदियां हैं।
- नेपाल के सप्तकौशिकी से निकलने वाली **कोसी नदी अपना मार्ग बदलने के लिए कुख्यात है। इस नदी को 'बिहार का शोक' या 'बिहार का अभिशाप' कहते हैं।** यह गंगा से मिलने के पूर्व स्वयं डेल्टा बनाती है।
- अमरकंटक से निकलकर सोन नदी झारखंड के पलामू तथा बिहार के रोहतास, औरंगाबाद, भोजपुर और पटना जिलों की सीमा बनाती हुई पटना से पहले गंगा में मिल जाती है।
- फल्गु नदी छोटानागपुर के पठार से निकलती है। गया के निकट इसका विशाल पाट है।
- **बिहार के बेगूसराय में कांवर झील एशिया की सबसे बड़ी शुद्ध जल (वेटलैंड एरिया) की झील है।**

	नदी	उद्गम	मुहाना/संगम	विशेषताएं
1.	गंगा	गंगोत्री के गोमुख से (उत्तराखंड)	बंगाल की खाड़ी -	- पटना, बक्सर, मोकामा, भागलपुर, मुंगेर जिले गंगा के तट पर स्थित। भोजपुर और सारण जिलों के बीच सीमा बनाते हुए बिहार में प्रवेश।
2.	घाघरा (सरयू)	माप्चाचुंगो ग्लेशियर (तिब्बत पठार)	गंगा नदी (रेविलगंज, सारण)	- गुथानी, सिवान के समीप बिहार में प्रवेश - बिहार एवं उत्तर प्रदेश की सीमा का निर्धारण - लंबाई 917 किमी.
3.	गंडक	नेपाल हिमालय	गंगा नदी (पहलेजा घाट के	- नेपाल में सप्तगंडकी के नाम से प्रसिद्ध। इसकी 7 मुख्य

https://telegram.me/study_with_pdf

		(अन्नपूर्णा पर्वत और धौलागिरि श्रेणी के समीप)	निकट पटना)	सहायिकाएं हैं - (1) त्रिशूली (2) बूढ़ी गंडक (3) मस्यिांगदी (4) सेती (5) दरौंदी (6) मादी (7) काली गंडक - नारायणी, शालिग्रामी के नाम से प्रसिद्ध - लंबाई 640 किमी. - हाजीपुर, सोनपुर, मुजफ्फरपुर तट पर बसे नगर हैं
4.	बूढ़ी गंडक	चौतरबा और बिसम्भरपुर पश्चिम चंपारण	गंगा नदी (खगड़िया के निकट)	- लंबाई लगभग 320 किमी.। - मसान, बलोर, पण्डई, सिक्ता, तिलवे, तिऊर, धनौती, कोहरा, दन्दा आदि सहायक नदियां हैं। - बाढ़ के दिनों में मार्ग बदल लेती है।
5.	बागमती	शिवपुरी श्रेणी (हिमालय) नेपाल से	कोसी नदी (बदलाघाट)	- कुल लंबाई - 589 किमी.
6.	कमला	महाभारत श्रेणी (सिंधुलिया गढ़ी) नेपाल से	बागमती (बदलाघाट के पास)	- मिथिला क्षेत्र की प्रसिद्ध नदी। - मैनावती, धौरी, बलान मुख्य सहायक नदियां। - इन नदियों से मिलने के बाद इसका नाम कमला बलान हो जाता है। - मधुबनी जिले में जयनगर के पास भारत में प्रवेश - कुल लंबाई 328 किमी.
7.	कोसी	नेपाल एवं तिब्बत	गंगा नदी (कुरसेला, कटिहार जिला)	- अरुण, सोन कोसी और तमूर कोसी के संगम से कोसी (हिमालय क्षेत्र से) बनती है। - भारतीय सीमा में हनुमान नगर के समीप (नेपाल) से प्रवेश करती है। - मार्ग परिवर्तन के लिए कुख्यात। - 'बिहार का शोक' कहा जाता है।
8.	महानंदा	दार्जिलिंग	गंगा नदी (गोडागारी घाट, बांग्लादेश)	- महानंदा दार्जिलिंग से निकलती है। उत्तर दिनाजपुर, बिहार के किशनगंज, मालदा (पश्चिम बंगाल) होते हुए बांग्लादेश में गंगा नदी से मिल जाती है। - इसकी लंबाई 360 किमी. है।
9.	सोन	मैकाल पर्वत के अमरकंटक श्रेणी से (मध्य प्रदेश)	गंगा नदी (पटना के निकट)	- लंबाई 784 किमी. - मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार में प्रवाहित। प्रमुख सहायक नदियां - बनास, गोपद, रिहंद, कन्हार, उत्तरी कोयल आदि।
10.	पुनपुन	छोटानागपुर पठार (पलामू, झारखंड)	गंगा नदी (फ़तुहा, पटना)	-
11.	कर्मनाशा	कैमूर पर्वत (कैमूर, बिहार)	गंगा नदी (चौसा)	- उत्तर प्रदेश एवं बिहार के बीच सीमा बनाती है। - बिहार में इसे अशुभ/अपवित्र नदी माना जाता है।
12.	अजय	देवघर, झारखंड	भागीरथी नदी (पश्चिम बंगाल)	- यह बिहार के मुंगेर जिले में प्रवाहित होती है।
13.	किउल	तीसरी पहाड़ी क्षेत्र (खड़गडीहा गिरिडीह, झारखंड)	गंगा नदी (सूरजगढ़, लखीसराय)	- बिहार और झारखंड में प्रवाहित। - जमुई, लखीसराय, किउल नगर तट पर हैं।
14.	फल्गु	लीलाजन (निरंजना) और मोहना के संगम से (गया, बिहार)	पुनपुन नदी	- बौद्धों एवं हिंदुओं के लिए महत्वपूर्ण । - पितृपक्ष के दौरान पिण्डदान के लिए प्रसिद्ध।

https://telegram.me/study_with_pdf

➲ **गंगा नदी में उत्तर दिशा से मिलने वाली नदियां** - घाघरा (सरयू), गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, कमला बलान, कोसी, महानंदा आदि।

➲ **गंगा नदी में दक्षिण दिशा से मिलने वाली नदियां** - कर्मनाशा, सोन, पुनपुन, फल्गु , किउल आदि।

❑ बिहार के प्रमुख जलप्रपात

नाम	जिला	विशेषता
➲ तलहार कुंड	कैमूर	- दुर्गावती नदी के समीप - कैमूर पठार पर अवस्थित - ऊंचाई 80 मीटर
➲ करकट गढ़ (चैनपुर)	कैमूर	- कैमूर पर्वत श्रृंखला पर उत्तर प्रदेश सीमा के निकट
➲ ककोलत	ककोलत, नवादा	- ककोलत पहाड़ी पर अवस्थित - ऊंचाई 150-160 फीट
➲ तुतला प्रपात	सासाराम	- तुतला भवानी मंदिर के निकट
➲ मजहर कुंड	सासाराम	- ताराचंदी (कैमूर पहाड़ी में)
➲ धुआं कुंड	सासाराम	- मजहर कुंड के निकट- धोबा नदी पर 30 मीटर ऊंचा

❑ महत्वपूर्ण जलकुंड

नाम	उद्गम स्थल
➲ ब्रह्मकुंड	- राजगीर (सबसे अधिक गर्म)
➲ सप्तधारा/सतधरवा	- राजगीर
➲ सूर्यकुंड	- राजगीर
➲ मखदूम कुंड	- राजगीर
➲ ऋषिकुंड	- मुंगेर
➲ सीता कुंड	- मुंगेर
➲ लक्ष्मण कुंड	- मुंगेर
➲ रामेश्वर कुंड	- मुंगेर

❑ बिहार की मिट्टियां

	मिट्टी	जिला
➲ **गंगा का उत्तरी मैदान**	पर्वतपदीय चूनेदार	पश्चिम चंपारण के उत्तर-पश्चिम भाग में
	तराई	पश्चिम चंपारण से लेकर किशनगंज तक
	बांगर	पूर्णिया, सहरसा (कोसी नदी क्षेत्र)
	अम्लीय	दरभंगा, मुजफ्फरपुर। इसे करैल या कैवाल मिट्टी भी कहा जाता है।
	बलसुंदरी	पूर्णिया के दक्षिणी भाग से सहरसा, दरभंगा और मुजफ्फरपुर के दक्षिणी भाग तक, सारण एवं चंपारण के कुछ भाग
	खादर	नवीन जलोढ़ मिट्टी
➲ **गंगा का दक्षिणी मैदान**	टाल मिट्टी	बक्सर से पीरपैंती तक (पटना, मुंगेर एवं भागलपुर में अधिकता)
	बलथर	कैमूर पठार, राजमहल की पहाड़ियां, छोटानागपुर के पहाड़ी क्षेत्र के निकट। लोहा का अंश अधिक होने के कारण रंग लाल होता है।
	लाल-बलुई	कैमूर एवं रोहतास के पठारी भाग। मोटे अनाजों की खेती के लिए उपयुक्त

❑ बिहार में सिंचाई

➲ वर्तमान में बिहार की सिंचित भूमि के साधन निम्न हैं–

क्रम	स्रोत	सिंचित क्षेत्र (प्रतिशत में)
1.	नहर	30.7
2.	तालाब	1.9
3.	नलकूप	63.1
4.	कुआं	0.7
5.	अन्य साधन	3.5

बृहद एवं मध्यम सिंचाई के तहत सिंचाई क्षमता सृजन (2018-19)

योजना का नाम	सृजित सिंचाई क्षमता (हे. में)
दुर्गावती जलाशय योजना	2190
पश्चिमी कोसी नहर प्रणाली	160
कुंडघाट जलाशय योजना	600
लवाइच रामपुर बराज	500
जहानाबाद जिले में सेंघवा चेक डैम	2100
नालंदा जिले में पंचाने नदी पर वीयर	2400
दानवार झील जल निकासी एवं सिंचाई योजना	4800
योग	**12750**

https://telegram.me/study_with_pdf

- गंडक परियोजना बिहार एवं उत्तर प्रदेश की संयुक्त सिंचाई परियोजना है। यह बिहार के वाल्मीकि नगर के निकट गंडक नदी पर निर्मित है।
- गंडक परियोजना से दो नहरें निकाली गई हैं–1. तिरहुत नहर (पश्चिम की ओर) तथा 2. सारण नहर (पूर्व की ओर)।
- तिरहुत नहर से सारण जिले के 4.8 लाख हेक्टेयर भूमि की, जबकि सारण नहर से चंपारण, मुजफ्फरपुर एवं दरभंगा जिलों की लगभग 6.9 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई की जाती है।
- बिहार की प्रथम बृहद सिंचाई परियोजना सोन परियोजना का निर्माण 1874 ई. में डेहरी के पास बारुन नामक स्थान पर बांध बना कर किया गया था।
- डेहरी के पास से सोन नदी से दो नहरें निकाली गई हैं–पूर्वी सोन नहर तथा पश्चिमी सोन नहर।
- **पूर्वी सोन नहर** की कुल लंबाई 130 किलोमीटर है। इस नहर से औरंगाबाद, गया, जहानाबाद, अरवल और पटना के लगभग 2.5 लाख हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई होती है।
- **पश्चिमी सोन नहर** डेहरी के पास से निकलती है। इस नहर से रोहतास, कैमूर, बक्सर, भोजपुर आदि जिलों में लगभग 3 लाख हेक्टेयर से अधिक भूमि की सिंचाई की जाती है।
- सोन नहर पर दो जल विद्युत केंद्र स्थापित किए गए हैं–

(i) डेहरी जल विद्युत केंद्र (6.6 मेगावॉट) तथा

(ii) बारुन जल विद्युत केंद्र (3.3 मेगावॉट)

- वर्ष 1973 में मध्य प्रदेश, बिहार और उत्तर प्रदेश के मध्य सोन नदी से संबंधित जल बंटवारा समझौता किया गया। बाण सागर जलाशय का निर्माण मध्य प्रदेश के शहडोल जिले में सोन नदी पर बांध बनाकर किया गया है।
- बाण सागर समझौते के तहत सोन और उसकी सहायक नदियों का कुल वार्षिक जल प्रवाह 14,250 लाख एकड़ फीट संभावित है, जिसमें बिहार को 7,750 लाख एकड़ फीट, उत्तर प्रदेश को 1,250 लाख एकड़ फीट और मध्य प्रदेश को 5,250 लाख एकड़ फीट आवंटित किया गया।
- समझौते में यह भी प्रावधान था कि यदि सोन के क्षेत्र में कम जल उपलब्धता होगी, तो तीनों राज्यों के हिस्से में जो कटौती होगी, उससे सोन नहर के लिए सुरक्षित 50 लाख एकड़ फीट जल आवंटन प्रभावित नहीं होगा।
- बाण सागर जलाशय से मध्य प्रदेश, बिहार और उत्तर प्रदेश को 2 : 1 : 1 के अनुपात में जल आवंटित किया जाएगा तथा इसके निर्माण की लागत भी इसी अनुपात में बांटी गई थी।
- बहुउद्देश्यीय परियोजना के अतिरिक्त कुछ अन्य नहरों का भी बिहार में विकास किया गया गया है–

1. **ढाका नहर**–पूर्व चंपारण।
2. **तेउर नहर**–पूर्व चंपारण में तेउर नदी पर।
3. **कमला नहर**–कमला नदी पर (दरभंगा एवं मधुबनी जिले में)
4. **सकरी नहर**–सकरी नदी पर (गया एवं मुंगेर जिले में)
5. **यमुना नहर**–यमुना नदी के बाईं ओर (जहानाबाद जिले में)

- दुर्गावती जलाशय योजना कैमूर एवं रोहतास जिलों की सिंचाई योजना है। दुर्गावती नदी कैमूर की पहाड़ी से निकलकर कर्मनाशा नदी में मिलती है। ऊपरी किऊल जलाशय परियोजना किऊल नदी पर बांध बनाकर निर्मित की गई है। इससे लखीसराय एवं मुंगेर में सिंचाई होती है।
- बागमती परियोजना के अंतर्गत सीतामढ़ी के डांग के पास रामनगर में बांध बनाकर नहर निकाली गई है। बरनाल जलाशय योजना जमुई जिले की बरनाल नदी पर निर्मित है।
- सिंचाई सुविधाओं की बेहतर नीति-निर्माण के कारण बिहार में सिंचाई क्षेत्रों में लगातार वृद्धि हुई है। मार्च, 2018-19 तक सृजित सिंचाई क्षमता 72.07 लाख हेक्टेयर थी, जो चरम सिंचाई क्षमता का 61.31 प्रतिशत है। प्रयुक्त सिंचाई क्षमता 64.38 लाख हेक्टेयर है।
- 93.6 लाख हेक्टेयर विस्तार वाले बिहार राज्य में तीन स्पष्ट कृषि जलवायु क्षेत्र मौजूद हैं–(1) 13 जिलों वाला उत्तर-पश्चिम जोन, जिसमें 1040 मिमी. से 1450 मिमी. तक वार्षिक वर्षा होती है और मिट्टी बलुई दोमट है; (2) 8 जिलों वाला उत्तर-पूर्व जोन, जिसमें वार्षिक वर्षा 1200 मिमी. से 1700 मिमी. के मध्य रहती है और मिट्टी दोमट या चिकनी दोमट है; तथा (3) 17 जिलों वाला दक्षिणी जोन, जिसमें 990 मिमी. से लेकर 1240 मिमी. तक वार्षिक वर्षा होती है और मिट्टी बलुई दोमट, दोमट, चिकनी दोमट और चिकनी मिट्टी है।
- कमांड क्षेत्र विकास एवं जल प्रबंधन (सीएडीडब्ल्यूएम) का क्रियान्वयन प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना 'हर खेत को पानी' के तहत किया जा रहा है। त्वरित सिंचाई लाभ योजना के तहत, प्राथमिकता वाली 99 चिह्नित योजनाओं में से 2 योजनाएं बिहार में हैं - दुर्गावती जलाशय योजना और पुनपुन बराज योजना।

https://telegram.me/study_with_pdf

❑ सिंचाई परियोजनाएं

- वृहद सिंचाई परियोजनाएं - 10 हजार हेक्टेयर से अधिक कृषि योग्य क्षेत्रफल
- मध्यम सिंचाई परियोजनाएं - 2000 से 10 हजार हेक्टेयर कृषि योग्य क्षेत्रफल
- लघु सिंचाई परियोजनाएं - 2000 हेक्टेयर तक कृषि योग्य क्षेत्रफल

❑ बिहार में वर्ष 2018-19 तक चरम, सृजित और उपलब्ध सिंचाई क्षमता (क्षेत्रफल लाख हेक्टेयर में)

सिंचाई क्षमता का प्रकार	चरम क्षमता	सृजित क्षमता	प्रयुक्त क्षमता
वृहद एवं मध्यम सिंचाई	53.53	30.04	26.56
लघु सिंचाई	64.01	42.03	37.82
योग	117.54	72.07	64.38

- बिहार में नलकूपों से 63.1% क्षेत्र में सिंचाई की जाती है, जबकि नहरों द्वारा 30.7% क्षेत्र में सिंचाई की जाती है।
- **बिहार शताब्दी निजी नलकूप योजना :** यह योजना राज्य के सभी 38 जिलों में हर प्रखंड में चल रही है।
- **त्वरित सिंचाई लाभ योजना :** यह योजना नवादा, रोहतास, कैमूर और सीतामढ़ी में चल रही है। इस योजना के तहत दुर्गावती जलाशय योजना और पुनपुन बराज योजना का विकास किया जा रहा है।

❑ चालू सिंचाई योजनाएं

चालू वृहद सिंचाई योजनाएं

1. पश्चिमी कोसी नहर परियोजना अवशेष कार्य
2. उत्तर कोयल जलाशय योजना
3. बटाने जलाशय योजना
4. बरनार जलाशय योजना (सोनो काउजवे सहित) का निर्माण कार्य
5. कुंडघाट जलाशय योजना
6. बटेश्वर स्थान गंगा पंप नहर योजना
7. ढाढर मोड़ (Diversion) योजना
8. दुर्गावती बायां मुख्य नहर से निःसृत सिंचाई योजना का निर्माण कार्य
9. दुर्गावती जलाशय योजना
10. पुनपुन बराज योजना

❑ चालू मध्यम सिंचाई योजनाएं

1. बिहुल नदी पर लक्ष्मीपुर ग्राम के निकट बांध का निर्माण कार्य।
2. दरभंगा जिला के अलीनगर प्रखंड स्थित गरौल बांध सिंचाई योजना।
3. दरभंगा जिला के अलीनगर प्रखंड पुरानी कमला नदी के बघेला घाट पर सिंचाई योजना।
4. दरभंगा जिला के अंतर्गत टिकमा नदी पर सिंचाई योजना।
5. मुंगेर जिला के अंतर्गत पहाड़ियों से निःसृत झरनों, जलस्रोतों पर आधारित सिंचाई योजना का निर्माण कार्य।
6. मुंगेर जिला के अंतर्गत इंद्ररूख चेक डैम के ऊपरी प्रवाह (अप स्ट्रीम) में झाना नदी/डकरा नदी के गाद सफाई का कार्य।
7. जहानाबाद जिला अंतर्गत सेंधवा चेक-डैम का निर्माण कार्य ।
8. मसौढ़ी प्रखंड में दरधा नदी पर बेर्रा ग्राम के निकट बेर्रा बराज का निर्माण कार्य।
9. जमुई जिला के अंतर्गत घोरघट नाला में घोरघट बांध योजना का निर्माण कार्य।
10. नालंदा जिला के अंतर्गत रहुई प्रखंड के मई फरीदा पंचायत में पंचाने नदी पर बांध निर्माण कार्य।
11. नालंदा जिला के अंतर्गत वेन प्रखंड में छकौरी बिगहा एवं मुरबावां स्थित बांध के निर्माण एवं मरम्मत कार्य।
12. नालंदा जिला के अंतर्गत चंडी प्रखंड में दयालपुर के पास मोहाने नदी को चिरैया नदी से जोड़ने का कार्य।
13. कचनावा बांध निर्माण कार्य।
14. मुहाने नदी बहुउद्देशीय मध्यम सिंचाई योजना।
15. मलई बराज योजना का निर्माण कार्य।
16. कर्मनाशा नदी पर जैतपुरा पंप नहर योजना का निर्माण कार्य।
17. धौस नदी पर बलवा बराज निर्माण योजना।
18. मंडई योजना।
19. कर्मनाशा नदी पर निकृष पंप नहर योजना का निर्माण कार्य।
20. दनबार झील जल निकासी एवं सिंचाई योजना।

❑ पूरी की गई प्रमुख सिंचाई परियोजनाएं

क्र.सं.	कार्य का नाम	लाभार्थी जिला का नाम
1.	सोन नहर प्रणाली	भोजपुर, रोहतास, पटना, जहानाबाद, गया, औरंगाबाद
2.	सोन उच्चस्तरीय नहर	रोहतास, औरंगाबाद, गया, कैमूर
3.	बदुआ जलाशय योजना	भागलपुर, मुंगेर
4.	चंदन जलाशय योजना	भागलपुर
5.	निचली मोरहर सिंचाई योजना	गया
6.	निचली किउल जलाशय योजना	मुंगेर
7.	कोसी प्रोजेक्ट सम्मिलित राजपुर नहर	पूर्णिया, कटिहार, सहरसा, मधेपुरा, किशनगंज, सुपौल, अररिया

https://telegram.me/study_with_pdf

8.	कोहिरा बांध	कैमूर
9.	मुसाखंड सिंचाई योजना	कैमूर
10.	गंडक परियोजना सम्मिलित त्रिवेणी, ढाका नहरें	पूर्वी और पश्चिम चंपारण, सारण, सिवान, गोपालगंज, वैशाली, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर
11.	लीलाजन सिंचाई योजना	गया
12.	सकरी सिंचाई योजना	गया, नवादा
13.	उदरस्थान सिंचाई योजना	जहानाबाद, गया, नालंदा
14.	ऊपरी मोरहर सिंचाई योजना	गया, नवादा
15.	कमला, बलान और त्रिशुला सिंचाई योजना	मधुबनी

❑ **पूर्ण मध्यम सिंचाई योजनाएं**

1.	अद्री सिंचाई योजना	औरंगाबाद
2.	बिरहा सिंचाई योजना	गया
3.	चोरथंडा सिंचाई योजना	गया
4.	धुवा सिंचाई योजना	औरंगाबाद
5.	हुलिया सिंचाई योजना	औरंगाबाद
6.	केशर सिंचाई योजना	औरंगाबाद
7.	कंचन सिंचाई योजना	औरंगाबाद
8.	निचली काराबार सिंचाई योजना	औरंगाबाद
9.	मनसर सिंचाई योजना	औरंगाबाद
10.	नीरा सिंचाई योजना	औरंगाबाद
11.	ऊपरी करिबार सिंचाई योजना	गया
12.	टेकरी सिंचाई योजना	गया
13.	अजन (कुकुरजाप) जलाशय योजना	जमुई
14.	अमृति सिंचाई योजना	जमुई
15.	बदुआ बेलहरमा लिंक नहर	बांका
16.	बागरा सिंचाई योजना	मुंगेर
17.	बाजन सिंचाई योजना	जमुई
18.	बसकुंड जलाशय योजना	लखीसराय
19.	बेलहरना जलाशय योजना	बांका
20.	तारकोल जलाशय योजना	नवादा
21.	ओरहनी जलाशय योजना	भागलपुर
22.	बेलिया बांध योजना	जमुई
23.	बिलासी जलाशय योजना	बांका
24.	चिचरूओन पंप योजना	मुंगेर
25.	डाकरा जलाशय योजना	भागलपुर
26.	फिरंगी बीघा योजना	शेखपुरा
27.	जलकुंड जलाशय योजना	मुंगेर
28.	कैलाशघाटी सिंचाई योजना	जमुई
29.	कमरगंज पंप नहर	भागलपुर
30.	करिहारी छिछली योजना	जमुई
31.	कोरिहारी सिंचाई योजना	जमुई, नवादा और शेखपुरा
32.	खलखलिया बांध (गेबुआ बांध) योजना	भागलपुर
33.	खड़गपुर झील सिंचाई योजना	मुंगेर
34.	खंड बेहरी सिंचाई योजना	मुंगेर
35.	कुंडघाट (जलाशय) योजना	जमुई
36.	महेन बांध योजना	मुंगेर
37.	महमूदा सिंचाई योजना	भागलपुर
38.	मोरवे जलाशय योजना	लखीसराय
39.	नागी जलाशय योजना	जमुई
40.	नकटी जलाशय योजना	मुंगेर
41.	श्रीखंडी सिंचाई योजना	जमुई
42.	सनहौला बांध योजना	भागलपुर
43.	सूरजगढ़ पंप नहर योजना	लखीसराय
44.	ताती सिंचाई योजना	शेखपुरा
45.	भरारी सिंचाई योजना	रोहतास
46.	कामहारी सिंचाई योजना	आरा
47.	काओ सिंचाई योजना	रोहतास
48.	सौरा योजना	कैमूर
49.	बागलती सिंचाई योजना	गया
50.	बथुवा नंदनी सिंचाई योजना	जहानाबाद
51.	सिनाने सिंचाई योजना	नालंदा
52.	ऊपरी जमुना सिंचाई योजना	जहानाबाद
53.	छरियारी सिंचाई योजना	जहानाबाद
54.	फिरंगी बीघा सिंचाई योजना	गया
55.	घोरा कटोरा सिंचाई योजना	राजगीर (बंद)
56.	गोइठा सिंचाई योजना	नालंदा

https://telegram.me/study_with_pdf

57.	गोखले सिंचाई योजना	गया
58.	गुलसकारी सिंचाई योजना	गया
59.	जाब जलाशय योजना	पटना
60.	कनकबीघा सिंचाई योजना	जहानाबाद
61.	करुआ सिंचाई योजना	पटना
62.	कधार सिंचाई योजना	गया
63.	कोल महादेव जलाशय	नवादा
64.	कुल्थी सिंचाई योजना	नालंदा
65.	लोकेन सिंचाई योजना	नालंदा
66.	महाबोधि सिंचाई योजना	गया
67.	महमूद सिंचाई योजना	जहानाबाद
68.	महुगेन सिंचाई योजना	गया
69.	मुदार सिंचाई योजना	नालंदा
70.	निश्चलगंज सिंचाई योजना	नालंदा
71.	नितेन सिंचाई योजना	गया
72.	पैमार बांध योजना	नालंदा, जहानाबाद
73.	पाइन सिंचाई योजना	शेखपुरा
74.	पंचेन सिंचाई योजना	नालंदा
75.	फुलवरिया जलाशय योजना	नवादा
76.	पुरैना सिंचाई योजना	नवादा
77.	सांसी सिंचाई योजना	नालंदा
78.	श्रीनावा सिंचाई योजना	नालंदा

❑ बिहार की प्रमुख नदी घाटी परियोजनाएं

क्र.सं.	नाम	नदी	राज्य/देश
1.	कोसी जलविद्युत परियोजना	कोसी	बिहार (भारत) और नेपाल
2.	सोन परियोजना	सोन	बिहार
3.	गंडक परियोजना	गंडक	बिहार, उत्तर प्रदेश, नेपाल
4.	बाणसागर परियोजना	सोन	बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश

❑ कोसी जलविद्युत परियोजना

➲ भारत और नेपाल के मध्य इस परियोजना के लिए वर्ष 1954 में आपसी सहमति हुई थी।

➲ इसके अंतर्गत नेपाल के भीमनगर में कोसी बैराज का निर्माण किया गया है।

➲ इस बैराज का निर्माण वर्ष 1959 में प्रारंभ हुआ तथा वर्ष 1963 में पूर्ण हुआ।

➲ पूर्वी कोसी नहर मुख्य सिंचाई परियोजना एवं पश्चिमी कोसी नहर मुख्य सिंचाई परियोजना का निर्माण किया गया था।

➲ इनका निर्माण कार्य वर्ष 1961 में प्रारंभ किया गया।

➲ पूर्वी कोसी नहर से लाभान्वित जिले हैं - अररिया, सहरसा, खगड़िया, सुपौल, पूर्णिया, मधेपुरा और कटिहार।

➲ पश्चिमी कोसी नहर से लाभान्वित जिले हैं- दरभंगा, सुपौल, समस्तीपुर और मधुबनी।

➲ कोसी पूर्वी नहर विद्युत गृह की स्थापना वर्ष 1978 में हुई थी।

❑ गंडक परियोजना

➲ गंडक परियोजना भारत और नेपाल की संयुक्त परियोजना है।

➲ इस परियोजना के लिए भारत और नेपाल के मध्य दिसंबर, 1959 में एक समझौता हुआ था।

➲ इस परियोजना के अंतर्गत पश्चिम चंपारण जिले में पूर्वी जलविद्युत परियोजना स्थापित की गई है।

➲ यह जलविद्युत परियोजना वर्ष 1964 में प्रारंभ की गई तथा वर्ष 1968 में पूर्ण हुई ।

➲ इस परियोजना के तहत गंडक नदी पर दो सिंचाई परियोजनाएं निर्मित की गईं।

➲ प्रथम, पश्चिमी गंडक नहर परियोजना। इससे नेपाल के साथ-साथ उत्तर प्रदेश के देवरिया, गोरखपुर, महाराजगंज और कुशीनगर लाभान्वित होते हैं।

➲ इस परियोजना को वर्ष 1961 में योजना आयोग द्वारा मंजूरी प्राप्त हुई थी।

➲ द्वितीय, पूर्वी गंडक नहर परियोजना। इससे बिहार लाभान्वित होता है। इससे लाभान्वित जिले हैं- मुजफ्फरपुर, पूर्वी चंपारण, वैशाली, पश्चिम चंपारण, सारण, गोपालगंज और सिवान।

❑ सोन परियोजना

➲ सोन नदी पर सोन जलविद्युत परियोजना का निर्माण किया गया है।

➲ इसके तहत सोन बैराज, पूर्वी एवं पश्चिमी लिंक नहर तथा दो नहर सिंचाई परियोजनाएं निर्मित की गई हैं।

➲ सोन बैराज जिसे इंद्रापुरी (कदवन) बैराज भी कहा जाता है, एक जलाशय है, जिसका निर्माण वर्ष 1960 में प्रारंभ हुआ तथा वर्ष 1965 में पूर्ण हुआ।

➲ सोन पूर्वी एवं पश्चिमी लिंक नहर पर विद्युत गृह का निर्माण किया गया, जिसे क्रमशः वर्ष 1986 एवं 1993 में पूर्ण किया गया था।

https://telegram.me/study_with_pdf

- सोन नहर मुख्य (Major) सिंचाई परियोजना से लाभान्वित जिले हैं- भोजपुर, अरवल, पटना, औरंगाबाद, रोहतास, कैमूर (भभुआ), बक्सर।
- सोन उच्चस्तरीय नहर मुख्य सिंचाई परियोजना से लाभान्वित जिले हैं - अरवल, कैमूर (भभुआ), गया, औरंगाबाद, रोहतास, जहानाबाद।
- सोन नहर प्रणाली भारत की प्राचीन नहर प्रणाली में से एक है। यह 1874 ई. से परिचालन में है।

अन्य प्रमुख नहरें

नहर	नदी
त्रिवेणी नहर	गंडक
कमला नहर	कमला
तिरहुत नहर	गंडक
तिऊर नहर	गंडक

नदियों का अंतर्संबंधन

- बिहार राज्य पानी के मामले में विरोधाभासी समस्या से पीड़ित है। उत्तर बिहार बाढ़ का सामना करता है, तो दक्षिण बिहार सूखा-प्रवण है। दक्षिण बिहार में सूखे के समाधान और उत्तर बिहार में बाढ़ का खतरा कम करने के लिए राज्य की नदियों को आपस में जोड़ने की योजना है।

जलविद्युत परियोजनाएं

परियोजना		जिला
डेहरी	-	रोहतास
वरुण	-	औरंगाबाद
वाल्मीकि नगर	-	पश्चिम चंपारण
कटैया	-	सुपौल
अगनूर	-	अरवल
नसीरगंज	-	रोहतास
त्रिवेणी	-	पश्चिम चंपारण
श्रीखंडी	-	रोहतास
सेबारी	-	रोहतास
बेलसार	-	अरवल
अरवल	-	अरवल
जैनागरा	-	रोहतास

बिहार में बाढ़

- बिहार भारत का सर्वाधिक बाढ़प्रवण राज्य है। यहां बाढ़ लगभग नियमित घटना है, हालांकि उसकी तीव्रता में अंतर होता है।
- राज्य में कुल बाढ़ प्रभावित क्षेत्र 68,800 वर्ग किमी. है, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किमी. का 73.06 प्रतिशत है।
- उत्तर बिहार का मैदानी भाग बाढ़ के लिहाज से खासतौर पर असुरक्षित है और यहां की 76 प्रतिशत आबादी बाढ़प्रवण है।
- भारत के 400 लाख हेक्टेयर बाढ़प्रवण क्षेत्र में बिहार के बाढ़प्रवण क्षेत्र का हिस्सा लगभग 17.2 प्रतिशत है।
- इसी प्रकार, देश की कुल बाढ़ प्रभावित आबादी का 22.1 प्रतिशत हिस्सा बिहार में निवास करता है।
- बिहार में बड़े पैमाने की बाढ़ों का मुख्य कारण यह है कि उत्तर बिहार की लगभग सारी नदियां उत्तर में स्थित नेपाल की तीखी ढाल से दक्षिण दिशा में बहकर आती हैं और अपने साथ भारी मात्रा में गाद लाती हैं, जिससे नदियों के बेसिन उथले होते जाते हैं।
- इसके अलावा छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और झारखंड से बहकर आने वाली नदियां दक्षिण से उत्तर की ओर बहती हैं।
- ये सारी नदियां अंततः विभिन्न स्थानों पर गंगा में मिल जाती हैं। वर्षा ऋतु में ऐसी सारी नदियां बिहार में बाढ़ संबंधी असुरक्षित स्थिति की स्रोत बनती हैं।
- बाढ़ों से बचने के लिए बिहार में 3,746 किमी. और नेपाल में 68 किमी. लंबाई में तटबंध बनाए गए हैं।
- इसके अलावा चंदन नदी बेसिन में 101 किमी. लंबाई में तटबंधों का निर्माण हो रहा है और महानंदा बेसिन में 1,196 किमी. लंबे तटबंध बनाने की योजना है।
- चूंकि ये तटबंध बाढ़ से बचाव के स्थायी समाधान नहीं हैं। इसलिए बाढ़ की परिघटना बिहार की आबादी को परेशान करती रहती है।

बाढ़प्रवण जिले

- बिहार 38 में से 28 जिले बाढ़ प्रवण हैं। इन 28 जिलों में से 15 को अत्यंत बाढ़प्रवण माना जाता है।

बिहार के बाढ़प्रवण जिले		
अत्यंत बाढ़प्रवण जिले	उत्तर बिहार	पूर्वी चंपारण, मुजफ्फरपुर, वैशाली, सीतामढ़ी, शिवहर, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, बेगूसराय, भागलपुर, कटिहार (15 जिले)।

https://telegram.me/study_with_pdf

अन्य बाढ़प्रवण जिले	उत्तर बिहार	पश्चिम चंपारण, सारण, सिवान, गोपालगंज, पूर्णिया, अररिया, किशनगंज (7 जिले)।
	दक्षिण बिहार	पटना, नालंदा, भोजपुर, बक्सर, लखीसराय, शेखपुरा (6 जिले)।

❑ **बिहार की जलवायु एवं पर्यावरण**

➲ अक्षांशीय विस्तार के आधार पर बिहार उपोष्ण जलवायु में स्थित प्रदेश है।

➲ बिहार के पूर्वी भाग में आर्द्र जलवायु तथा पश्चिमी भाग में अर्धशुष्क जलवायु है।

➲ बिहार राज्य की जलवायु मानसूनी प्रकार की है।

➲ यहां वर्ष में तीन प्रमुख मौसम होते हैं- ग्रीष्म ऋतु (मार्च से मध्य जून तक), वर्षा ऋतु (मध्य जून से मध्य अक्टूबर तक), शीत ऋतु (मध्य अक्टूबर से फरवरी तक)।

➲ राज्य में सर्वाधिक वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून से होती है।

❑ **जलवायु वर्गीकरण (कोपेन के अनुसार)**

➲ कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के अनुसार बिहार की जलवायु को **Cwg (मध्य तापीय/गंगा तुल्य)** से प्रदर्शित किया गया है, जिसे दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

➲ Cwa - किशनगंज, पश्चिम चंपारण, जोगवनी, अररिया आदि उत्तरी बिहार का क्षेत्र।

➲ Csa - पटना, गया, मुंगेर, जहानाबाद आदि दक्षिण बिहार का क्षेत्र।

❑ **पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन**

➲ बिहार का भौगोलिक क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किमी. है और यह उपोष्ण क्षेत्र में अवस्थित है। यहां नम उपोष्ण जलवायु है।

➲ जलवायु परिवर्तन के मामले में, बिहार में वर्ष 2018-19 जलवायु परिवर्तन को मुख्य धारा में लाने वाला वर्ष रहा है। सबसे पहले तो पर्यावरण एवं वन विभाग का नाम बदलकर पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग कर दिया गया है।

➲ **आपदा प्रबंधन :** पूरा बिहार प्राकृतिक और मानव-निर्मित, दोनों प्रकार की आपदाओं के लिहाज से असुरक्षित है। बिहार के 38 में से 28 जिले बाढ़प्रवण हैं और 33 जिले सिस्मिक जोन III, IV और V में आते हैं। दक्षिण बिहार के 8 जिले (गया, नवादा, जमुई, जहानाबाद, अरवल, औरंगाबाद, कैमूर और बांका) अत्यंत सूखाप्रवण हैं। इनके अलावा, राज्य के विभिन्न जिलों में अक्सर चक्रवाती आंधी/तेज आंधी/शीतलहर और मानवजनित आपदाएं भी आती रहती हैं। साथ ही अग्नि संबंधी दुर्घटनाएं भी आम बात हैं, जिससे आमतौर पर झोपड़ियों में रहने वाली गरीबी रेखा के नीचे की आबादी खास तौर पर प्रभावित होती है। अतः आपदाओं का कुशल प्रबंधन राज्य सरकार के लिए चिंता का मुख्य विषय है।

➲ वन विभाग का लगभग 74 प्रतिशत व्यय जलवायु परिवर्तन पर और इस व्यय का 24 प्रतिशत हिस्सा जलवायु संबंधित जोखिमों के लिहाज से अतिसंवेदनशील चीजों पर था। देश में प्रदूषण के बढ़ते स्तर के प्रति अनुक्रिया दर्शाते हुए पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) की शुरुआत की गई है, जिसके तहत प्रभावित शहरों को अपने शहर के लिहाज से स्वच्छ वायु कार्ययोजना बनाने का निर्देश दिया गया है। राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम के मद्देनजर बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण परिषद (बीएसपीसीबी) द्वारा पटना, गया और मुजफ्फरपुर के लिए स्वच्छ वायु कार्ययोजनाएं तैयार की जा रही हैं।

❑ **बिहार की कृषि-जलवायु विवरणी**

➲ भारत के पूर्वी भाग में अवस्थित बिहार का क्षेत्रफल 93.6 लाख हेक्टेयर है, जिसका देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में लगभग 3 प्रतिशत हिस्सा है।

➲ यहां की जलवायु मुख्यतः उपोष्ण है, ग्रीष्म ऋतु (मार्च से मई) के दौरान सर्वोच्च तापमान 40 डिग्री सेल्सियस के आस-पास पहुंच जाता है, जबकि शीत ऋतु (दिसंबर-जनवरी) में औसत तापमान 8 डिग्री सेल्सियस तक आ जाता है।

➲ बिहार में खरीफ, रबी और गरमा (जायद) कृषि के तीन मौसम हैं जिनमें चावल, गेहूं और मक्का के साथ-साथ अनेक बागवानी फसलें उत्पादित होती हैं।

➲ गंगा नदी बिहार को दो हिस्सों में बांटती है। उत्तर बिहार में हिमालय से निकलने वाली नदियों से पानी आता है और अधिकांश क्षेत्र बाढ़प्रवण है। वहीं, दक्षिण बिहार मध्य भारत की नदियों के पानी से लाभान्वित होता है, लेकिन सूखाप्रवण है। बिहार के कृषि जलवायु क्षेत्रों - उत्तर-पश्चिमी जलोढ़ मैदान, उत्तर-पूर्वी जलोढ़ मैदान और दक्षिण बिहार जलोढ़ मैदान- की विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

➲ ये विशेषताएं ही मिट्टी के गुणों, भौगोलिक क्षेत्र, वर्षापात और तापमान को निर्धारित करती हैं, जिनके कारण फसल पैटर्न पर प्रभाव पड़ता है।

➲ दक्षिण बिहार का जलोढ़ मैदान कम औसत वर्षापात वाला है, जहां सामान्यतः 1,102 मिमी. के आस-पास वर्षा होती है।

➲ इस क्षेत्र में 17 जिले हैं। दूसरी ओर उत्तर-पश्चिमी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक वर्षा होती है - क्रमशः 1,235 मिमी. और 1,382 मिमी.।

https://telegram.me/study_with_pdf

❑ बिहार के कृषि जलवायु क्षेत्र (जोन)

क्षेत्र	मिट्टी के प्रकार	औसत वर्षापात (मिमी.)	तापमान (डिग्री. से.)	मुख्य फसलें	जिले
उत्तर-पश्चिमी जलोढ़ मैदान	मध्यम अम्लीय, भारी गठन, बलुई दोमट से चिकनी दोमट तक बाढ़प्रवण	1235	अधिकतम - 36.6 न्यूनतम - 7.7	चावल, गेहूं, मक्का, आलू, ईख, आम, लीची	पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण सिवान, सारण, सीतामढ़ी, शिवहर, मुजफ्फरपुर, वैशाली, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, गोपालगंज, बेगूसराय
उत्तर-पूर्वी जलोढ़ मैदान	हल्का से मध्यम गठन, हल्की अम्लीय, बलुई से सिल्टयुक्त दोमट तक	1382	अधिकतम - 33.8 न्यूनतम - 8.8	मक्का, जूट, अनार	पूर्णिया, कटिहार, सहरसा, सुपौल मधेपुरा, खगड़िया, अररिया, किशनगंज
दक्षिण बिहार जलोढ़ मैदान	जलोढ़ से बलुई दोमट तक	1102	अधिकतम - 37.1 न्यूनतम - 7.8	चावल, गेहूं, आलू, आम, अमरूद	शेखपुरा, मुंगेर, जमुई, लखीसराय, भागलपुर, बांका, रोहतास, भोजपुर बक्सर, कैमूर, अरवल, पटना, नालंदा, नवादा, जहानाबाद, औरंगाबाद, गया

❑ बिहार में वन (भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2019)

- भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2019 के अनुसार, बिहार के कुल भौगोलिक क्षेत्र के 7.76 प्रतिशत भाग में वनावरण है जबकि वृक्षावरण कुल भौगोलिक क्षेत्र का 2.13 प्रतिशत है।
- बिहार में अभिलिखित वन क्षेत्र 6877 वर्ग किमी. है, जो उसके कुल भौगोलिक क्षेत्र का 7.30 प्रतिशत है।
- ISFR, 2017 (भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2017) की तुलना में ISFR, 2019 में बिहार में वनावरण में 0.10 प्रतिशत का परिवर्तन हुआ।
- भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2019 के अनुसार सर्वाधिक वनावरण क्षेत्र वाले बिहार के जिले हैं–भभुआ (कैमूर) - 1056.39 वर्ग किमी, पश्चिम चंपारण - 904.66 वर्ग किमी., रोहतास - 672.23 वर्ग किमी. तथा जमुई - 647.95 वर्ग किमी.।
- न्यूनतम वनावरण क्षेत्र वाले बिहार के जिले हैं–जहानाबाद - 0.0 वर्ग किमी., शेखपुरा- 1.00 वर्ग किमी., अरवल - 4.0 वर्ग किमी. एवं गोपालगंज- 4.91 वर्ग किमी।
- सर्वाधिक वनावरण प्रतिशत वाले बिहार के जिले हैं– जमुई - 69.60 वर्ग किमी, भभुआ (कैमूर) - 41.12 वर्ग किमी, गया - 29.04 वर्ग किमी, नवादा - 20.59 वर्ग किमी.।
- न्यूनतम वनावरण प्रतिशत वाले बिहार के जिले हैं– जहानाबाद - 0.00 प्रतिशत, शेखपुरा - 0.15 प्रतिशत, गोपालगंज - 0.16 प्रतिशत तथा बक्सर - 0.26 प्रतिशत। ज्ञातव्य हो कि भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2019 के अनुसार, जहानाबाद ऐसा जिला है जहां वनावरण का क्षेत्र एवं प्रतिशत दोनों शून्य है।
- भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2019 में वर्ष 2017 की तुलना में बांका जिले में सर्वाधिक 20.73 वर्ग किमी. तथा मुजफ्फरपुर में 19.82 वर्ग किमी. की वृद्धि हुई तथा रोहतास जिले में 33.77 वर्ग किमी. तथा गया में 14.69 वर्ग किमी., भभुआ (कैमूर) - 14.61 वर्ग किमी. की कमी हुई है।

जिला	भौगोलिक क्षेत्रफल	अति सघन वन	मध्यम सघन वन	खुला वन	कुल भौगोलिक	क्षेत्रफल का प्रतिशत
अररिया	2830	0.00	8.10	142.91	151.01	5.34
अरवल	638	0.00	1.63	2.37	4.00	0.63
औरंगाबाद	3305	0.00	62.26	94.50	156.76	4.74
बांका	3020	0.00	103.34	157.39	260.73	8.63
बेगूसराय	1918	0.00	28.64	53.31	81.95	4.27
भागलपुर	2569	0.00	46.21	23.52	69.73	2.91
भोजपुर	2395	0.00	19.44	12.81	32.25	1.89

https://telegram.me/study_with_pdf

बक्सर	1703	0.00	2.94	2.95	5.89	0.26
दरभंगा	2279	0.00	43.54	94.12	137.66	2.77
गया	4976	0.00	134.40	455.91	590.31	29.04
गोपालगंज	2033	0.00	1.98	2.93	4.91	0.16
जमुई	3098	28.97	351.69	267.29	647.95	69.60
जहानाबाद	931	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
कैमूर (भभुआ)	3332	0.00	525.14	531.25	1056.39	41.12
कटिहार	3057	0.00	6.03	55.95	61.98	2.03
खगड़िया	1486	0.00	3.18	15.27	18.45	1.24
किशनगंज	1884	0.00	16.33	87.37	103.70	5.50
लखीसराय	1228	17.00	144.42	18.99	180.41	14.69
मधेपुरा	1788	0.00	0.93	51.95	52.88	2.96
मधुबनी	3501	0.00	40.34	163.73	204.07	5.83
मुंगेर	1419	37.97	223.67	21.96	283.60	19.99
मुजफ्फरपुर	3172	0.00	52.17	109.65	161.82	5.10
नालंदा	2355	0.00	6.86	24.99	31.85	1.35
नवादा	2494	0.00	200.98	312.52	513.50	20.59
पश्चिम चंपारण	5228	249.19	550.24	105.23	904.66	17.30
पटना	3202	0.00	18.78	4.76	23.54	0.74
पूर्वी चंपारण	3968	0.00	65.04	98.82	163.86	4.13
पूर्णिया	3229	0.00	5.00	50.67	55.67	1.72
रोहतास	3881	0.00	352.52	319.71	672.23	17.32
सहरसा	1687	0.00	4.17	30.45	34.62	2.05
समस्तीपुर	2904	0.00	105.30	48.06	153.36	5.28
सारण	2641	0.00	26.30	32.83	59.13	2.24
शेखपुरा	689	0.00	1.00	0.00	1.00	0.15
शिवहर	349	0.00	2.00	18.58	20.58	5.90
सीतामढ़ी	2294	0.00	37.38	110.40	147.78	6.44
सिवान	2219	0.00	1.99	5.17	7.16	0.32
सुपौल	2425	0.00	3.89	134.89	138.78	5.72
वैशाली	2036	0.00	82.49	29.33	111.82	5.49
कुल	**94.163**	**333.13**	**3280.32**	**3692.54**	**7305.99**	**7.76**

- बिहार में 1 राष्ट्रीय उद्यान तथा 12 वन्यजीव अभयारण्य हैं, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 3.44 प्रतिशत आवरण करते हैं।
- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के अनुमानों के अनुसार, बिहार में बाघों की संख्या वर्ष 2010 के 8 से बढ़कर वर्ष 2018 में 31 हो गई है। इसी प्रकार, भागलपुर में गंगा में अवस्थित विक्रमशिला गांगेय डॉल्फिन अभयारण्य गांगेय डॉल्फिन (सूंस), ताजे पानी की मछलियों और कछुओं का निवास स्थान है।
- वाल्मीकि वन्यजीव अभयारण्य, वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान और वाल्मीकि टाइगर रिजर्व बिहार के पश्चिम चंपारण जिले में स्थित हैं।
- 899.38 वर्ग किमी. में विस्तृत इस वन्यजीव अभयारण्य में बाघ, तेंदुआ, भेड़िया, जंगली कुत्ता, लकड़बग्घा, वनबिलाव, मुसंग, ऊदबिलाव, गौर, सांभर, चीतल, काकड़, पाढ़ा, रीक्ष, अजगर, मकर, लंगूर, बंदर, गिद्ध इत्यादि पाए जाते हैं।
- एनविस सेंटर आन वाइल्ड लाइफ एंड प्रोटेक्टेड एरियाज, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, भारत सरकार के आंकड़ों के

https://telegram.me/study_with_pdf

अनुसार, बिहार में वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना 1989 में हुई थी, जिसका क्षेत्रफल 335.65 वर्ग किमी. है तथा वाल्मीकि बाघ अभयारण्य का क्षेत्रफल 899.38 वर्ग किमी. है।

➲ जबकि बिहार आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, बिहार में अभयारण्य की संख्या और उनका क्षेत्रफल निम्नलिखित सारणी में दिया जा रहा है-

अभयारण्य/शरणस्थली का नाम	अवस्थिति (जिला) और क्षेत्रफल	अधिसूचना की तिथि	वन्यजीवों की प्रजाति
वाल्मीकि बाघ शरणस्थली	पश्चिम चंपारण	7.08.2012	बाघ, गैंडा, काला, भालु, भारतीय स्लॉथ बीयर, ऊदबिलाव, भारतीय तेंदुआ, जंगली कुत्ता, भैंसा, जंगली सूअर, बार्किंग डीयर, सांभर, नीलगाय, लगड़बग्घा, तेंदुआ, बिल्ली, जंगली बिल्ली, फिशिंग कैंट, लंगूर, बंदर, उड़न गिलहरी, क्लाउडेड लेपर्ड, भारतीय गौर, नेवला
भीमबांध वन्यजीव अभयारण्य	मुंगेर	27.05.1976	काला भालू, सूअर, बार्किंग डीयर, स्पॉटेड डीयर हॉग हिरण, नीलगाय, तेंदुआ बिल्ली, जंगली बिल्ली, लंगूर बंदर, नेवला
गौतम बुद्ध वन्यजीव अभयारण्य	गया	14.09.1976	
पंत वन्यजीव अभयारण्य	नालंदा	25.05.1978	
कैमूर वन्यजीव अभयारण्य	कैमूर और रोहतास	20.07.1979	
रजौली (नवादा) वन्यजीव अभयारण्य	नवादा	10.05.2019	
उदयपुर वन्यजीव अभयारण्य	पश्चिम चंपारण	05.05.1978	दलदली वन सहित गोक्षुर झील
नागी डैम पक्षी अभयारण्य	जमुई	28.11.1983	जल पक्षी, प्रवासी पक्षी
नकटी डैम अभयारण्य	जमुई	22.07.1987	जल पक्षी, प्रवासी पक्षी
काबर झील पक्षी अभयारण्य	बेगूसराय	20.06.1989	जल पक्षी, प्रवासी पक्षी
कुशेश्वर स्थान पक्षी अभयारण्य	दरभंगा	05.07.1994	जल पक्षी, प्रवासी पक्षी
सलीम अली जुब्बा सहनी बड़ैला झील पक्षी अभयारण्य	वैशाली	28.01.1997	जल पक्षी, प्रवासी पक्षी
विक्रमशिला गांगेय डॉल्फिन अभयारण्य	भागलपुर	22.08.1990	गांगेय डॉल्फिन (सूंस), ताजा पानी की मछलियां और कछुए

➲ विक्रमशिला गांगेय डॉल्फिन अभयारण्य भागलपुर में गंगा में 60 किमी. की दूरी में अवस्थित है जो सूंस, ताजा पानी की मछलियों और कछुओं का निवास स्थान है। राज्य में जल-पक्षियों और प्रवासी पक्षियों के लिए पांच पक्षी अभयारण्य हैं। राज्य में भीमबांध वन्यजीव अभयारण्य, गौतम बुद्ध वन्यजीव अभयारण्य, पंत वन्यजीव अभयारण्य (राजगिर), कैमूर वन्यजीव अभयारण्य, रजौली वन्यजीव अभयारण्य (नवादा) और उदयपुर वन्यजीव अभयारण्य जैसे अनेक वन्यजीव अभयारण्य भी हैं। राज्य सरकार पारितंत्र विकास समितियों के जरिए वन्यजीवों और उनके निवास स्थानों के संरक्षण के लिए लोगों की भागीदारी को प्रोत्साहित कर रही है।

➲ कांवर झील पक्षी आश्रयणी (कांवर ताल), कुशेश्वर स्थान पक्षी आश्रयणी एवं सलीम अली जुब्बा साहनी बरैला झील पक्षी आश्रयणी (बरैला ताल) प्रमुख वेटलैंड के रूप में चिह्नित किए गए हैं।

➲ जैविक उद्यान, पटना में मैसूर चिड़ियाघर से 1 जोड़ा गैंडा के बदले 12 जानवरों को प्राप्त किया गया, जिनमें जिराफ, ब्लैक स्वान तथा गौर प्रमुख हैं।

➲ जैविक उद्यान में 3D थियेटर के निर्माण का कार्य राज्य सरकार के उपक्रम इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट अथॉरिटी को सौंपा गया है।

➲ राजगीर में एक चिड़ियाघर सफारी (Zoo Safari) को स्थापित करने के प्रस्ताव का सूत्रण किया गया है।

➲ संजय गांधी जैविक उद्यान, पटना 153 एकड़ में विस्तारित है। इस उद्यान में लगभग 100 प्रजातियों के 1164 वन्यप्राणियों का संरक्षण एवं संवर्धन किया जा रहा है। यह उद्यान गैंडा प्रजनन में एशिया के सबसे बड़े केंद्र एवं विश्व में दूसरे बड़े केंद्र के रूप में ख्याति प्राप्त है। इस उद्यान को राज्य का पहला पॉलीथीन/प्लास्टिक निषिद्ध क्षेत्र बनाया गया है।

➲ गया जिले में राजकीय वन प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना हुई है।

https://telegram.me/study_with_pdf

❑ बिहार विधायिका : इतिहास

- बिहार यानी सभ्यता, ज्ञान और शक्ति का केंद्र जिसने अपनी समृद्ध राजनैतिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपरा से पूरे विश्व को आलोकित किया है। वैशाली विश्व में गणतंत्र की जन्मस्थली रही है। यहां वज्जिसंघ के नेतृत्व में प्रथम गणराज्य की स्थापना हुई थी। प्राचीन काल में मगध, अंग, विदेह, वज्जिसंघ, अंगुत्तराप एवं कौशकी के रूप में चिह्नित साम्राज्य के तहत इस भू-भाग को राजनैतिक एकता प्राप्त हुई थी। गंगा और सोन नदी के तट पर अवस्थित पाटलिपुत्र मगध साम्राज्य का केंद्र बिंदु बना। काल खंड बदलता गया। बिहार, बंगाल प्रेसीडेंसी का अंग बना। परंतु बिहारवासी अपनी सक्रियता एवं कर्मठता के बल पर अलग पहचान बनाए रखने में सफल रहे। बिहार को बंगाल से अलग करने की मांग लगातार उठती रही। इस संबंध में सबसे महत्वपूर्ण दिन 12 दिसंबर, 1911 था जब ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम ने दिल्ली दरबार में बिहार एवं उड़ीसा को मिलाकर बंगाल से पृथक एक अलग राज्य बनाने की घोषणा की एवं इसका मुख्यालय पटना निर्धारित किया।
- 22 मार्च, 1912 को बंगाल से अलग होकर 'बिहार एवं उड़ीसा' एक संयुक्त प्रांत के रूप में अस्तित्व में आया और सर चार्ल्स स्टुअर्ट बेले इस राज्य के पहले उपराज्यपाल बने। इस नए राज्य के विधायी प्राधिकार के रूप में 43 सदस्यीय विधायी परिषद का गठन किया गया। इनमें 24 सदस्य निर्वाचित होते थे एवं 19 सदस्य उपराज्यपाल द्वारा मनोनीत होते थे। यही परिषद, सदस्यों के संख्या बल में अनेक परिवर्तनों के बाद आज बिहार विधानसभा के रूप में विद्यमान है। इस विधायी परिषद की प्रथम बैठक 20 जनवरी, 1913 को पटना में हुई।
- भारत सरकार अधिनियम, 1919 के द्वारा भारत में नई शासन पद्धति की शुरुआत हुई। इसके अनुसार, केंद्रीय स्तर पर द्विसदनीय विधायिका का प्रावधान किया गया जिसे संघीय विधानसभा एवं राज्य परिषद नाम दिया गया, जो कालांतर में भारतीय संविधान लागू होने के बाद लोक सभा एवं राज्य सभा के रूप में परिवर्तित हुए। इसी अधिनियम द्वारा प्रांतों में द्वितंत्रीय शासन व्यवस्था (डायर्की) की शुरुआत की गई, जिसके तहत प्रशासनिक विषयों को दो श्रेणियों क्रमशः आरक्षित एवं हस्तांतरित में बांटा गया। आरक्षित विषयों का प्रशासन राज्यपाल अपने कार्यकारी पार्षदों की सहायता से करते थे, जबकि अंतरित विषयों का प्रशासन राज्यपाल द्वारा प्रांतीय विधायी परिषद के सदस्यों में से नियुक्त मंत्रियों की सहायता से किया जाता था। बिहार एवं उड़ीसा को पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान करते हुए उपराज्यपाल की जगह राज्यपाल की नियुक्ति की गई। लॉर्ड सत्येंद्र प्रसन्ना सिन्हा इस प्रांत के पहले गवर्नर नियुक्त किए गए। बिहार एवं उड़ीसा प्रांतीय परिषद में निर्वाचित एवं मनोनीत सदस्यों की संख्या बढ़ाकर क्रमशः 76 एवं 27 कर दी गई।
- इस समय तक इस विधायी परिषद के लिए एक स्वतंत्र भवन एवं सचिवालय की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। फलस्वरूप वर्ष 1920 में एक नए भवन का निर्माण कराया गया एवं परिषद का काम इसी भवन में होने लगा। यही परिषद भवन आज बिहार विधानसभा का मुख्य भवन है। इसी भवन में ''बिहार एवं उड़ीसा प्रांतीय परिषद'' की प्रथम बैठक 7 फरवरी, 1921 को सर वाल्टर मोरे की अध्यक्षता में संपन्न हुई एवं इसे बिहार के प्रथम राज्यपाल श्री लॉर्ड सत्येंद्र प्रसन्ना सिन्हा ने संबोधित किया।
- प्रांतों में नई शासन व्यवस्था लागू होने के कुछ ही दिनों के पश्चात प्रांतीय विधायी परिषद को अधिक अधिकार दिए जाने की मांग उठने लगी। इधर महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन भी जोर पकड़ रहा था। भारत में चल रहे आंदोलन के दबाव में ब्रिटिश हुकूमत द्वारा भारत में उत्तरदायी शासन व्यवस्था कायम करने की घोषणा की गई। वर्ष 1930 से 1932 के बीच में तीन गोलमेज सम्मेलनों एवं पूना पैक्ट के परिप्रेक्ष्य में ब्रिटिश संसद द्वारा 'भारत सरकार अधिनियम, 1935' पारित किया गया। इस अधिनियम के तहत बिहार एवं उड़ीसा अलग–अलग स्वतंत्र प्रदेश के रूप में अस्तित्व में आए। प्रांतीय स्वरूपता की भी शुरुआत इसी अधिनियम से हुई । सबसे महत्वपूर्ण प्रावधान के रूप में अस्तित्व में आए प्रांतीय स्वायत्तता की भी शुरुआत इसी अधिनियम से हुई तथा प्रांतों में द्विसदनीय विधायिका की शुरुआत हुई। इसके अनुसार बिहार में पूर्व से कार्यरत परिषद् का नामकरण बिहार विधानसभा के रूप में किया गया एवं एक अलग उच्च एवं समीक्षात्मक सदन के रूप में बिहार विधान परिषद का गठन किया गया। इस प्रकार बिहार विधान परिषद् अस्तित्व में आई। 30 सदस्यों वाली नई बिहार विधान परिषद की प्रथम बैठक राजीव रंजन प्रसाद की अध्यक्षता में 22 जुलाई, 1936 को बिहार विधानसभा कक्ष के इतर उसी भवन में निर्मित नए सदन-कक्ष में संपन्न हुई और विधानसभा के सदस्यों की संख्या 152 कर दी गई। इस आधार पर जनवरी, 1937 में बिहार

https://telegram.me/study_with_pdf

विधानसभा के गठन हेतु चुनाव संपन्न हुए एवं 20 जुलाई, 1937 को डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा के नेतृत्व में विधिवत प्रथम सरकार गठित हुई। 22 जुलाई, 1937 को बिहार विधानमंडल के दोनों सदनों का प्रथम संयुक्त अधिवेशन हुआ। 25 जुलाई, 1937 को श्री रामदयालु सिंह बिहार विधानसभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

- वर्ष 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारंभ होने के उपरांत ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रांतीय उत्तरदायी सरकारों की सहमति लिए बगैर ही भारतीयों को इस युद्ध में झोंक दिया गया। इसके विरोधस्वरूप 31 अक्टूबर, 1939 को प्रधानमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा ने इस्तीफा दे दिया और बिहार विधानसभा भंग कर दी गई। वर्ष 1945 में द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात बिहार में पुनः विधानसभा चुनाव कराए गए और इसके बाद डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा के नेतृत्व में एक बार पुनः सरकार बनी। 25 अप्रैल, 1946 को श्री विंदेश्वरी प्रसाद वर्मा विधानसभा के अध्यक्ष हुए।
- वर्ष 1950 में भारतीय संविधान के लागू हो जाने के पश्चात इसके प्रावधानों के अनुरूप वर्ष 1952 एवं 1957 में क्रमशः पहले एवं दूसरे आम चुनाव संपन्न हुए। वर्ष 1952 के चुनाव में 330 सदस्यों का प्रत्यक्ष निर्वाचन हुआ तथा एक सदस्य अलग से मनोनीत किया गया। 'राज्य पुनर्गठन आयोग, 1956' की अनुशंसाओं के आधार पर बिहार की सीमाओं में पुनः परिवर्तन हुए। परिणामस्वरूप बिहार विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों की संख्या 330 से घटकर 318 हो गई एवं एक मनोनीत सदस्य का स्थान सुरक्षित रहा, अर्थात कुल सदस्यों की संख्या 319 रही। वर्ष 1977 में जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में बिहार विधानसभा के कुल निर्वाचित सदस्यों की संख्या 318 से बढ़कर 324 हो गई तथा एक मनोनीत सदस्य पूर्ववत रहे। इस प्रकार बिहार विधानसभा के कुल सदस्यों की संख्या 325 हो गई।
- नवंबर, 2000 में भारतीय संसद द्वारा 'बिहार पुनर्गठन विधेयक' पारित होने के पश्चात, बिहार से अलग होकर झारखंड एक पृथक राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। इसके फलस्वरूप, बिहार विधानसभा के लिए निर्वाचित कुल 324 सदस्यों में से 81 सदस्य एवं 1 मनोनीत सदस्य अर्थात कुल 82 सदस्य दिनांक 15 नवंबर, 2000 के बाद झारखंड विधानसभा के सदस्य हो गए। इस प्रकार बिहार विधानसभा में कुल 243 सदस्य ही शेष रह गए, जो अभी तक इसी स्वरूप में है। ठीक इसी प्रकार, वर्ष 1937 में बिहार विधान परिषद में सदस्यों की संख्या 30 थी। संविधान लागू होने के बाद यह 72 कर दी गई। वर्ष 1958 में यह संख्या बढ़कर 96 हो गई और वर्ष 2000 में झारखंड राज्य के गठन के बाद बिहार विधान परिषद की सदस्य संख्या घटकर 75 हो गई, जो अभी भी इसी स्वरूप में है।

❑ बिहार के प्रीमियर एवं मुख्यमंत्रियों की सूची

1. डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा — प्रीमियर — 20.07.1937-31.10.1939
   प्रीमियर — 02.01.1946-31.01.1952
2. डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा — मुख्यमंत्री — 29.04.1952-31.01.1961
   बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री, सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री रहे।
3. श्री दीप नारायण सिंह — मुख्यमंत्री — 1.02.1961-18.02.1961
   कार्यवाहक
4. श्री बिनोदानंद झा — मुख्यमंत्री — 18.02.1961-02.10.1963
5. श्री कृष्ण बल्लभ सहाय — मुख्यमंत्री — 2.10.1963-05.3.1967
6. श्री महामाया प्रसाद सिन्हा — मुख्यमंत्री — 5.03.1967-28.01.1968
   (बिहार के प्रथम गैर-कांग्रेसी मुख्यमंत्री)
7. श्री सतीश प्रसाद सिंह — मुख्यमंत्री — 28.01.1968-1.02.1968
8. श्री बिंदेश्वरी प्रसाद मंडल — मुख्यमंत्री — 1.02.1968-2.03.1968
9. श्री भोला पासवान शास्त्री — मुख्यमंत्री — 22.03.1968-29.06.1968
   (29.06.1968-26.02.1969 तक कुल 244 दिनों तक राष्ट्रपति शासन रहा)
10. श्री सरदार हरिहर सिंह — मुख्यमंत्री — 26.02.1969-22.06.1969
11. श्री भोला पासवान शास्त्री — मुख्यमंत्री — 22.06.1969-4.07.1969
    (06.07.1969-16.02.1970 तक कुल 225 दिनों तक राष्ट्रपति शासन रहा)
12. श्री दरोगा प्रसाद राय — मुख्यमंत्री — 16.02.1970-22.12.1970
13. श्री कर्पूरी ठाकुर — मुख्यमंत्री — 22.12.1970-2.06.1971
14. श्री भोला पासवान शास्त्री — मुख्यमंत्री — 2.06.1971-9.01.1972
    (09.01.1972-19.03.1972 तक कुल 70 दिनों तक राष्ट्रपति शासन रहा)
15. श्री केदार पाण्डेय — मुख्यमंत्री — 19.03.1972-2.07.1973
16. श्री अब्दुल गफूर — मुख्यमंत्री — 2.07.1973-11.04.1975
17. श्री जगन्नाथ मिश्र — मुख्यमंत्री — 11.04.1975-30.04.1977
18. श्री कर्पूरी ठाकुर — मुख्यमंत्री — 24.06.1977-21.04.1979
19. श्री रामसुन्दर दास — मुख्यमंत्री — 21.04.1979-17.02.1980
    (17.02.1980-8.06.1980 तक कुल 112 दिनों तक राष्ट्रपति शासन रहा।)
20. श्री जगन्नाथ मिश्र — मुख्यमंत्री — 8.06.1980-14.08.1983

https://telegram.me/study_with_pdf

21. श्री चंद्रशेखर सिंह मुख्यमंत्री 14.08.1983-12.03.1985
22. श्री बिंदेश्वरी दूबे मुख्यमंत्री 12.03.1985-13.02.1988
23. श्री भागवत झा आजाद मुख्यमंत्री 14.02.1988-10.03.1989
24. श्री सत्येंद्र नारायण सिन्हा मुख्यमंत्री 11.03.1989-6.12.1989
25. श्री जगन्नाथ मिश्र मुख्यमंत्री 6.12.1989-10.03.1990
26. श्री लालू प्रसाद यादव मुख्यमंत्री 10.03.1990-28.03.1995
28.03.1995-4.04.1995 तक राष्ट्रपति शासन रहा।
27. श्री लालू प्रसाद यादव मुख्यमंत्री 4.04.1995-25.07.1997
28. श्रीमती राबड़ी देवी मुख्यमंत्री 25.07.1997-11.02.1999
(बिहार की प्रथम महिला मुख्यमंत्री)
(11.02.1995-9.03.1999 तक राष्ट्रपति शासन रहा।)
29. श्रीमती राबड़ी देवी मुख्यमंत्री 9.03.1999-2.03.2000
30. श्री नीतीश कुमार मुख्यमंत्री 3.03.2000-10.03.2000
31. श्रीमती राबड़ी देवी मुख्यमंत्री 11.03.2000-06.03.2005
(07.03.2005-24.11.2005 तक कुल 262 दिनों तक राष्ट्रपति शासन रहा।)
32. श्री नीतीश कुमार मुख्यमंत्री 24.11.2005-25.11.2010
33. श्री नीतीश कुमार मुख्यमंत्री 26.11.2010-19.05.2014
34. श्री जीतन राम मांझी मुख्यमंत्री 20.05.2014-22.02.2015
35. श्री नीतीश कुमार मुख्यमंत्री 22.02.2015-19.11.2015
36. श्री नीतीश कुमार मुख्यमंत्री 20.11.2015...............

❑ बिहार विधानसभा के माननीय अध्यक्षों की सूची

1.	श्री रामदयालु सिंह	23.07.1937-11.11.1944
2	श्री बिंदेश्वरी प्रसाद वर्मा	25.04.1946-14.03.1962
3.	श्री लक्ष्मी नारायण सुधांशु	15.03.1962-15.03.1967
4.	श्री धनिकलाल मंडल	16.03.1967-10.03.1969
5.	श्री राम नारायण मंडल	11.03.1969-20.03.1972
6.	श्री हरिनाथ मिश्र	21.03.1972-26.06.1977
7.	श्री त्रिपुरारी प्रसाद सिंह	28.06.1977-22.06-1980
8.	श्री राधानंदन झा	24.06.1980-1.04.1985
9.	श्री शिवचंद्र झा	4.04.1985-23.01.1989
10.	श्री मोहम्मद हिदायतुल्ला खां	27.03.1989-19.03.1990
11.	श्री गुलाम सरवर	20.03.1990-9.04.1995
12.	श्री देव नारायण यादव	12.04.1995-6.03.2000
13.	श्री सदानंद सिंह	9.03.2000-28.06.2005
14.	श्री उदय नारायण चौधरी	30.11.2005-29.11.2010 2.12.2010-28.11.2015
15.	श्री विजय कुमार चौधरी	2.12.2015.................

❑ बिहार के उपराज्यपाल/राज्यपाल

उपराज्यपाल (बिहार एवं उड़ीसा) (1912-1920)

1.	सर चार्ल्स स्टुअर्ट बेले	1.04.1912-19.11.1915
2.	सर एडवर्ड अल्बर्ट गैट	19.11.1915-04.04.1918
3.	सर एडवर्ड वेरे लेविंग	5.04.1918-12.08.1918
4.	सर एडवर्ड अल्बर्ट गैट	12.08.1918-29.12.1920

❑ राज्यपाल (बिहार एवं उड़ीसा) (1920-1937)

1.	लार्ड सत्येंद्र प्रसन्न सिन्हा	29.12.1920-30.11.1921
2.	सर हैविलैंड ली मेसुरियर	30.11.1921-12.04-1922
2.	सर हेनरी व्हीलर	12.04.1922-26.03.1925
3.	सर ह्यूग मैकफरसन	27.03.1925-26.07.1925
4.	सर हेनरी व्हीलर	26.07.1925-7.04.1927
5.	सर ह्यूग लैन्सडाउन स्टीफेंसन	7.04.1927-26.04.1929
6.	सर जेम्स डेविड सिफ्टन	26.04.1929-25.08.1929
7.	सर ह्यूग लैन्सडाउन स्टीफेंसन	25.08.1929-5.06.1930
8.	सर जेम्स डेविड सिफ्टन	5.06.1930-21.09.1930
9.	सर ह्यूग लैन्सडाउन स्टीफेंसन	21.09.1930-7.04.1932
10.	सर जेम्स डेविड सिफ्टन	7.04-1932-12.10.1934
11.	जॉन टार्लटन व्हिट्टी (बाद में सर)	12.10.1934-11.02.1935
12.	सर जेम्स डेविड सिफ्टन	11.02.1935-10.03.1937

❑ बिहार के राज्यपाल (1937-1947)

1.	सर मौरिस गार्नियर हैलेट	11.03.1937-15.05.1938
2.	सर थॉमस अलेक्जेंडर स्टीवर्ट	15.05.1938-16.09.1938
3.	सर मौरिस गार्नियर हैलेट	17.09.1938-5.08.1939
4.	सर थॉमस अलेक्जेंडर स्टीवर्ट	6.08.1939-2.02.1943
5.	सर थॉमस जॉर्ज रदरफोर्ड	3.02.1943-6.09.1943
6.	श्री रॉबर्ट फ्रांसिस मुडी (बाद में सर)	7.09.1943-23.04.1944
7.	सर थॉमस जॉर्ज रदरफोर्ड	24.04.1944-12.05.1946
7.	सर ह्यूग डाउ	13.05.1946-14.08.1947

❑ बिहार के राज्यपाल (1947 से अब तक)

1.	श्री जयरामदास दौलतराम	15.08.1947-11.01.1948
2.	श्री माधव श्रीहरि एनी	12.01.1948-14.06.1952

https://telegram.me/study_with_pdf

3.	श्री आर.आर. दिवाकर	15.06.1952-15.07.1957
4.	श्री जाकिर हुसैन	6.07.1957-11.05.1962
5.	श्री एम.ए.एस. अय्यंगर	12.05.1962-6.12.1967
6.	श्री नित्यानंद कानूनगो	7.12.1967-20.01.1971
7.	श्री न्यायमूर्ति यू एन सिन्हा	21.01.1971-31.01.1971
8.	श्री देवकांत बरूआ	1.02.1971-4.02.1973
9.	श्री रामचंद्र धोंधिबा भंडारे	4.02.1973-15.06.1976
10.	श्री जगन्नाथ कौशल	16.06.1976-31.01.1979
11.	जस्टिस के.बी.एन. सिंह	27.05.1978-26.06.1978
12.	डॉ. अखलाकुर रहमान किदवई	31.01.1979-19.09.1979
13.	श्री पेंडेकांति वेंकटसुब्बियन	20.09.1979-15.03.1985
14.	श्री गोविंद नारायण सिंह	15.03.1985-25.02.1988
15.	जस्टिस दीपक कुमार सेन	26.02.1988-24.01.1989
16.	श्री राम चंद्र डी. प्रधान	24.01.1989-28.01.1989
17.	श्री जगन्नाथ पहाड़िया	29.01.1989-2.02.1989
18.	जस्टिस जी.जी. सोहोनी	3.03.1989-2.02.1990
19.	श्री मोहम्मद युनुस सलीम	2.02.1990-16.02.1990
20.	श्री बी. सत्यनारायण रेड्डी	16.02.1990-13.02.1991
21.	श्री मोहम्मद शफी कुरैशी	14.02.1991-18.03.1991
22.	डॉ. अखलाकुर रहमान किदवई	19.03.1991-13.08.1993
23.	श्री सुंदर सिंह भंडारी	14.08.1993-26.04.1998
24.	श्री जस्टिस बी.एम. लाल	27.04.1998-15.03.1999
25.	श्री सूरजभान	15.03.1999-5.10.1999
26.	श्री विनोद चंद्र पांडे	6.10.1999-22.11.1999
27.	श्री एम. रामा जोइस	23.11.1999-12.06.2003
28.	श्री वेद प्रकाश मारवाह	12.06.2003-31.10.2004
29.	डॉ. सरदार बूटा सिंह	1.11.2004-4.11.2004
30.	श्री गोपालकृष्ण गांधी	5.11.2004-29.01.2006
31.	श्री रामकृष्ण सूर्यभानजी गवई	31.01.2006-21.06.2006
32.	श्री रघुनंथनलाल भाटिया	22.06.2006-9.07.2008
33.	श्री देवानंद कोंवर	10.07.2008-28.06.2009
34.	डॉ. डी.वाई. पाटिल	29.06.2009-21.03.2013
35.	श्री केशरी नाथ त्रिपाठी	22.03.2013-26.11.2014
36.	श्री राम नाथ कोविंद	27.11.2014-15.08.2015
37.	श्री केशरी नाथ त्रिपाठी	16.08.2015-3.09.2017
38.	श्री सत्यपाल मलिक	4.09.2017-22.08.2018
39.	श्री लालजी टंडन	23.08.2018-28.07.2019
40.	श्री फागु चौहान	29.07.2019-अब तक

❑ बिहार का मंत्रिपरिषद (सितंबर, 2020 तक अद्यतन)

- **श्री नीतीश कुमार, मुख्यमंत्री :** सामान्य प्रशासन, गृह, मंत्रिमंडल सचिवालय, निगरानी, निर्वाचन, ऐसे सभी विभाग जो किसी को आवंटित नहीं हैं।
- श्री सुशील कुमार मोदी, उपमुख्यमंत्री : वित्त, वाणिज्य कर, पर्यावरण एवं वन, सूचना प्रौद्योगिकी।
- श्री बिजेंद्र प्रसाद यादव : ऊर्जा; मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन।
- श्री प्रेम कुमार : कृषि, पशु और मत्स्य संसाधन।
- श्री संजय कुमार झा : जल संसाधन।
- श्री नंद किशोर यादव : पथ निर्माण।
- श्री श्रवण कुमार : ग्रामीण विकास, संसदीय कार्य।
- श्री राम नारायण मंडल : राजस्व एवं भूमि सुधार।
- श्री जय कुमार सिंह : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ।
- श्री मंगल पाण्डेय : स्वास्थ्य।
- श्री प्रमोद कुमार : कला, संस्कृति और युवा मामले।
- श्री कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा : शिक्षा।
- श्री महेश्वर हजारी : योजना एवं विकास।
- श्री विनोद नारायण झा : लोक स्वास्थ्य, अभियंत्रण।
- श्री शैलेश कुमार : ग्रामीण कार्य।
- श्री सुरेश कुमार शर्मा : नगर विकास एवं आवास।
- श्री विजय कुमार सिन्हा : श्रम संसाधन।
- श्री संतोष कुमार निराला : परिवहन।
- श्री राणा रणधीर सिंह : सहकारिता।
- श्री खुर्शीद उर्फ फिरोज अहमद : अल्पसंख्यक कल्याण।
- श्री विनोद कुमार सिंह : पिछड़ा वर्ग और अति पिछड़ा वर्ग कल्याण।
- श्री मदन साहनी : खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण।
- श्री कृष्ण कुमार ऋषि : पर्यटन।
- श्री कपिल देव कामत : पंचायती राज।
- श्री दिनेश चन्द्र यादव : लघु जल संसाधन।
- श्री रमेश ऋषिदेव : अनुसूचित जाति/जनजाति कल्याण।
- श्री बृज किशोर बिंद : खान एवं भूतत्व।
- श्री अशोक चौधरी : भवन निर्माण।
- श्री लक्ष्मेश्वर राय : आपदा प्रबंधन।
- श्री श्याम रजक : उद्योग ।
- श्री नीरज कुमार : सूचना, जनसंपर्क।
- श्री राम सेवक सिंह : समाज कल्याण विभाग।
- श्रीमती बीमा भारती : गन्ना उद्योग विभाग।
- श्री नरेंद्र नारायण यादव : लघु जल संसाधन, विधि विभाग।

https://telegram.me/study_with_pdf

बिहार के नगरीय स्वशासन

- बिहार में 12 नगर निगम, 49 नगर परिषद, 82 नगर पंचायत हैं।

12 नगर निगम की सूची

प्रमंडल 1	जिला 2	क्र.सं. 3	नगर निगम का नाम 4	कुल जनसंख्या (2011 जनगणना) 5	कुल वार्डों की संख्या 6
पटना	पटना	1	पटना नगर निगम	1684222	75
	नालंदा	2	बिहार शरीफ नगर निगम	297268	46
	भोजपुर	3	आरा नगर निगम	261430	45
मगध	गया	4	गया नगर निगम	474093	53
भागलपुर	भागलपुर	5	भागलपुर नगर निगम	400146	51
तिरहुत	मुजफ्फरपुर	6	मुजफ्फरपुर नगर निगम	354462	49
दरभंगा	दरभंगा	7	दरभंगा नगर निगम	296039	48
मुंगेर	मुंगेर	8	मुंगेर नगर निगम	213303	45
	बेगूसराय	9	बेगूसराय नगर निगम	252008	45
पूर्णिया	पूर्णिया	10	पूर्णिया नगर निगम	282248	46
	कटिहार	11	कटिहार नगर निगम	240838	45
सारण	सारण	12	छपरा नगर निगम	202352	45
	कुल 12			4958409	593

बिहार पंचायती राज अधिनियम, 2006

- 8 अप्रैल, 2006 से लागू।
- इस अधिनियम के तहत बिहार में पहली बार पंचायत चुनाव मई-जून, 2006 में हुए।
- बिहार पंचायत अधिनियम के अनुसार, बिहार में त्रिस्तरीय पंचायती राज प्रणाली में सबसे निचले स्तर पर ग्राम पंचायत, प्रखंड स्तर पर पंचायत समिति और जिला स्तर पर जिला परिषदें हैं। ग्राम पंचायत के अध्यक्ष को मुखिया, पंचायत समिति के अध्यक्ष को प्रमुख और जिला परिषद के अध्यक्ष को अध्यक्ष कहा जाता है।
- त्रिस्तरीय पंचायतों के स्थानों या पदों में सभी कोटियों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया।
- पहले के अधिनियम में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण दिया गया था।
- नवीनतम अधिनियम में अत्यंत पिछड़ा वर्ग को 20 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है।
- अन्य व्यवस्थाएं 73वें संविधान संशोधन अधिनियम के समान हैं।

बिहार की अर्थव्यवस्था

बजट

- 25 फरवरी, 2020 को बिहार के उपमुख्यमंत्री एवं वित्तमंत्री सुशील कुमार मोदी ने वर्ष 2020-21 का बजट पेश किया।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 का कुल व्यय बजट अनुमान 2,11,761.49 करोड़ रुपये है, जो वित्तीय वर्ष 2019-20 के बजट अनुमान 2,00,501.01 करोड़ रुपये से 11,260.48 करोड़ रुपये अधिक है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में स्थापना एवं प्रतिबद्ध व्यय का बजट अनुमान 1,05,995.14 करोड़ रुपये है, जो वित्तीय वर्ष 2019-20 के बजट अनुमान 99,110.01 करोड़ रुपये से 6,885.13 करोड़ रुपये अधिक है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 का वार्षिक स्कीम का कुल बजट अनुमान 1,05,262.34 करोड़ रुपये है, जो वित्तीय वर्ष 2019-20 के बजट अनुमान 1,00,000.98 करोड़ रुपये से 5,261.36 करोड़ रुपये अधिक है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में कुल राजस्व व्यय 1,64,751.19 करोड़ रुपये अनुमानित किया गया है, जो वित्तीय वर्ष 2019-20 के बजट अनुमान 1,55,230.65 करोड़ रुपये से 9,520.54 करोड़ रुपये अधिक है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में कुल पूंजीगत व्यय 47,010.30 करोड़ रुपये अनुमानित किया गया है, जो वित्तीय वर्ष 2019-20 के बजट अनुमान 45,270.36 करोड़ रुपये से 1,739.94 करोड़ रुपये अधिक है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में राजस्व एवं पूंजीगत व्यय क्रमश: 1,64,751.19 करोड़ रुपये एवं 47,010.30 करोड़ रुपये है, जो

https://telegram.me/study_with_pdf

कुल व्यय 2,11,761.49 करोड़ रुपये का क्रमशः 77.80 प्रतिशत एवं 22.20 प्रतिशत है।

- वित्तीय वर्ष 2020-21 में विकासात्मक एवं गैर-विकासात्मक व्यय क्रमशः 1,51,831.93 करोड़ रुपये एवं 59,929.57 करोड़ रुपये है, जो कुल व्यय 2,11,761.49 करोड़ रुपये का क्रमशः 71.70 प्रतिशत एवं 28.30 प्रतिशत है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में कुल राजस्व प्राप्तियां 1,83,923.99 करोड़ रुपये अनुमानित हैं, जो वित्तीय वर्ष 2019-20 के बजट अनुमान 1,76,747.64 करोड़ रुपये से 7,176.35 करोड़ रुपये अधिक है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में राज्य के अपने स्रोतों से कर राजस्व प्राप्ति के रूप में 34,750.00 करोड़ रुपये अनुमानित है, जो वित्तीय वर्ष 2019-20 के बजट अनुमान 33,800.00 करोड़ रुपये से 950.00 करोड़ रुपये अधिक है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में राज्य के अपने स्रोतों से गैर-कर राजस्व के रूप में 5,239.28 करोड़ रुपये प्राप्त होने का अनुमान है, जो वित्तीय वर्ष 2019-20 के बजट अनुमान 4,806.47 करोड़ रुपये की तुलना में 432.81 करोड़ रुपये अधिक है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में राज्य को केंद्र सरकार से केंद्रीय करों में हिस्से के रूप में 91,180.60 करोड़ रुपये प्राप्त होने का अनुमान है। यह वित्तीय वर्ष 2019-20 के बजट अनुमान 89,121.79 करोड़ रुपये से 2,058.81 करोड़ रुपये अधिक है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में राज्य को केंद्र सरकार से सहायक अनुदान के रूप में 52,754.10 करोड़ रुपये प्राप्त होने का अनुमान है, जो वित्तीय वर्ष 2019-20 के बजट अनुमान 49,019.38 करोड़ रुपये से 3,734.72 करोड़ रुपये अधिक है। वित्तीय वर्ष 2020-21 में केंद्रीय प्रक्षेत्र स्कीम के लिए 504.01 करोड़ रुपये रखे गए हैं।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में 19,172.80 करोड़ रुपये राजस्व बचत रहने का अनुमान है, जो सकल राज्य घरेलू उत्पाद 6,85,797.00 करोड़ रुपये का 2.80 प्रतिशत है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में 20,374.00 करोड़ रुपये राजकोषीय घाटा रहने का अनुमान है, जो सकल राज्य घरेलू उत्पाद 6,85,797.00 करोड़ रुपये का 2.97 प्रतिशत है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में लोक ऋण का अधिशेष 1,63,903.88 करोड़ रुपये रहने का अनुमान है, जो राज्य सकल घरेलू उत्पाद 6,85,797.00 करोड़ रुपये का 23.90 प्रतिशत रहने का अनुमान है। अन्य दायित्वों के साथ लोक ऋण का अधिशेष 2,06,680.15 करोड़ रुपये रहने का अनुमान है, जो राज्य सकल घरेलू उत्पाद 6,85,797.00 करोड़ रुपये का 30.14 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

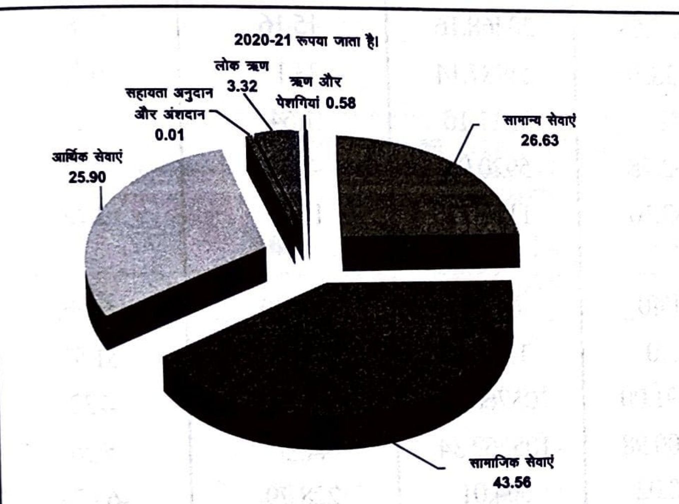

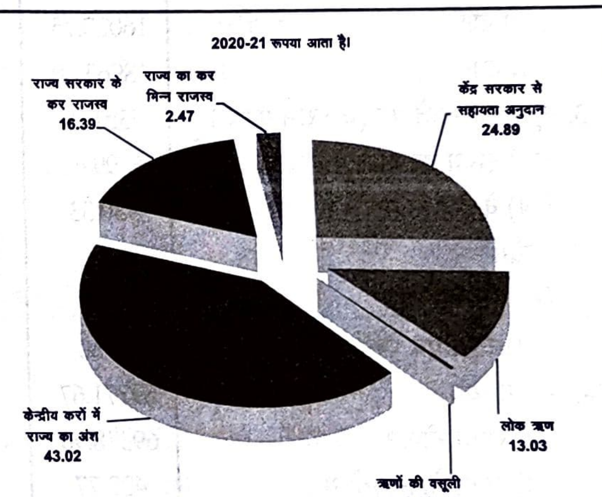

प्रमुख विभागवार वार्षिक स्कीम उद्व्यय (2020-21)

विभाग का नाम	स्कीम उद्व्यय (करोड़ रुपये)	प्रतिशत
शिक्षा विभाग	21264.24	20.20
ग्रामीण विकास विभाग	16014.88	15.21
ग्रामीण कार्य विभाग	9619.00	9.14
समाज कल्याण विभाग	7997.63	7.60
स्वास्थ्य विभाग	5610.00	5.33
पथ निर्माण विभाग	5581.00	5.30
लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग	5351.00	5.08
वित्त विभाग	3950.00	3.75
नगर विकास एवं आवास विभाग	3418.00	3.25
जल संसाधन विभाग	3000.00	2.85
अन्य विभाग	23456.59	22.29
योग	**105262.34**	**100.00**

- राजस्व प्राप्ति से राजस्व व्यय को घटाने के बाद अवशेष राशि राजस्व बचत होती है। वित्तीय वर्ष 2020-21 में राजस्व बचत 19,172.80 करोड़ रुपये का है। इस राजस्व अधिशेष का उपयोग भौतिक अधिसंरचना में निवेश यथा- सड़क, भवन, बिजली, विद्यालय, स्वास्थ्य केंद्र, सिंचाई योजनाएं आदि उत्पादक पूंजीगत परिसंपत्तियों के सृजन के लिए किया जाएगा।

https://telegram.me/study_with_pdf

वास्तविकी/बजट एक झलक

(राशि करोड़ रुपये में)

क्र. मदें	पूर्व 2018-19 (वास्तविक)	चालू वर्ष 2019-20 (बजट अनुमान)	आगामी वर्ष 2020-21 (बजट अनुमान)	वर्ष 2018-19 से वर्ष 2019-20 में परिवर्तन (%)	वर्ष 2019-20 से वर्ष 2020-21 में परिवर्तन (%)
1. कुल राजस्व प्राप्तियां	131793.45	176747.64	183923.99	34.11	4.06
2. कर राजस्व	103011.27	122921.79	125930.60	19.33	2.45
(क) संघीय करों में राज्य का अंश	73603.13	89121.79	91180.60	21.08	2.31
(ख) राज्य सरकार के कर-राजस्व	29408.14	33800.00	34750.00	14.93	2.81
3. राज्य सरकार के कर भिन्न राजस्व	4130.56	4806.47	5239.28	16.36	9.00
4. केंद्र सरकार से सहायक अनुदान	24651.62	49019.38	52754.10	98.85	7.62
5. पूंजीगत प्राप्तियां (6+7+8)	20493.60	24837.12	28037.50	21.19	12.89
6. ऋणों की वसूली	1825.40	416.38	428.23	-77.19	2.85
लोक ऋण (7+8)	18668.20	24420.74	27609.27	30.81	13.06
7. राज्य सरकार के आंतरिक ऋण	16134.42	21735.74	24809.27	34.72	14.14
8. केंद्रीय सरकार से कर्ज तथा अग्रिम	2533.78	2685.00	2800.00	5.97	4.28
9. कुल प्राप्तियां (1+5)	152287.05	201584.76	211961.49	32.37	5.15
10. स्थापना एवं प्रतिबद्ध व्यय	84883.77	99110.01	105995.14	16.76	6.95
11. राजस्व खाते पर जिसमें	77531.83	91637.17	98784.05	18.19	7.80
12. (क) ब्याज भुगतान	10071.14	10723.47	12924.65	6.48	20.53
(ख) पेंशन	16027.75	18457.53	20468.16	15.16	10.89
(ग) वेतन	18963.80	23358.30	24987.14	23.17	6.97
13. पूंजीगत खाते पर (क+ख+ग+घ)	7351.94	7472.84	7211.10	1.64	-3.50
(क) राज्य का आंतरिक ऋण	6299.49	6152.78	5920.06	-2.33	-3.78
(ख) केंद्रीय सरकार से कर्ज तथा अग्रिम	930.33	1083.16	1115.22	16.43	2.96
(ग) पूंजीगत व्यय	58.82	161.40	61.39	174.40	-61.96
(घ) ऋण एवं पेशगियां	63.30	75.50	114.43	19.27	51.57
14. स्कीम व्यय	69771.67	101391.00	105766.35	45.32	4.32
(क) राज्य योजना	69348.90	100000.98	105262.34	44.20	5.26
(ख) के.प्र.यो.+के.यो.यो.	422.77	1390.02	504.01	228.79	-63.74
15. राजस्व खाते पर	47364.98	63593.48	65967.14	34.26	3.73
16. पूंजीगत खाते पर	22406.69	37797.52	39799.21	68.69	5.30
17. कुल व्यय (10+14)	154655.44	200501.01	211761.49	29.64	5.62
18. राजस्व व्यय (11+15)	124896.81	155230.65	164751.19	24.29	6.13
19. पूंजीगत व्यय (13+16)	29758.62	45270.36	47010.30	52.13	3.84
20. राजस्व घाटा (18-1)	-6896.64	-21516.99	-19172.80	211.99	-10.89
21. राजकोषीय घाटा [17-(1+6+13क+13ख)]	13806.77	16101.05	20374.00	16.62	26.54
22. प्राथमिक घाटा (23-12क)	3735.63	5377.58	7449.35	43.95	38.53
23. जी.एस.डी.पी.	515634.00	572827.00	685797.00	11.09	19.72
24. राजकोषीय घाटा/ जी.एस.डी.पी.	2.68%	2.81%	2.97%		
25. ब्याज भुगतान /कुल राजस्व प्राप्तियां	7.64%	6.07%	7.03%		

https://telegram.me/study_with_pdf

- कुल व्यय में से राजस्व प्राप्तियां, ऋणों की वसूली एवं ऋणों की वापसी को घटाने के पश्चात जो राशि बचती है, उसे 'राजकोषीय घाटा' कहा जाता है। *वित्तीय वर्ष 2020-21 में राजकोषीय घाटा 20,374.00 करोड़ रुपये का है, जो राज्य सकल घरेलू उत्पाद का 2.97 प्रतिशत है।
- संपत्तियों के सृजन/सुदृढ़ीकरण पर जो राशि व्यय की जाती है, वह पूंजीगत परिव्यय होती है। वर्ष 2019-20 के बजट अनुमान 36,592.62 करोड़ रुपये से बढ़कर 2020-21 के बजट अनुमान में पूंजीगत परिव्यय 38,744.59 करोड़ रुपये हो गया है। यह 2019-20 के पूंजीगत परिव्यय से 2,151.97 करोड़ रुपये अधिक है।
- वर्ष 2020-21 के अंत में लोक ऋण 1,63,903.88 करोड़ रुपये अनुमानित है। जो सकल घरेलू उत्पाद का 23.90 प्रतिशत है।
- वर्ष 2019-20 के अंत में पुनरीक्षित लोक ऋण 1,44,660.07 करोड़ रुपये अनुमानित है, जो सकल राज्य घरेलू उत्पाद 6,17,153.00 करोड़ रुपये का 23.44 प्रतिशत है।
- बिहार उन राज्यों में से एक है, जिसने राजकोषीय प्रबंधन को गंभीरतापूर्वक लिया है एवं एफ.आर.बी.एम. अधिनियम को सही मायने में लागू किया है। वित्तीय वर्ष 2020-21 में राजकोषीय घाटा 2.97 प्रतिशत अनुमानित किया गया है। वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए राजकोषीय घाटे की अधिसीमा 3 प्रतिशत निर्धारित है। वित्तीय वर्ष 2019-20 के पुनरीक्षित अनुमान में राजकोषीय घाटा 9.45 प्रतिशत प्रदर्शित हो रहा है, परंतु वित्तीय वर्ष के अंतिम माह में प्रत्यर्पण के पश्चात इसके 3 प्रतिशत की अधिसीमा में रहने का अनुमान है।

राज्य अर्थव्यवस्था पर विस्तृत अवलोकन

- एफ.आर.बी.एम. (राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन) अधिनियम, 2006 के लागू होने के उपरांत बिहार की अर्थव्यवस्था वृद्धि दर में काफी तेजी दर्ज की गई। वर्ष 2005-06 से 2015-16 तक बिहार की आर्थिक वृद्धि दर 10 प्रतिशत से ज्यादा रही। साथ ही 2018-19 में आर्थिक वृद्धि दर के मामले में बिहार देश के राज्यों में तीसरे स्थान पर रहा। बिहार राज्य की अर्थव्यवस्था की संरचना एवं राष्ट्रीय आर्थिक संरचना का विवरण प्रस्तुत किया गया है। हाल के तीन वर्षों में बिहार की आर्थिक वृद्धि दर, अखिल भारतीय आर्थिक वृद्धि दर से अधिक रही है। जहां पूर्व वर्ष (2017-18) में बिहार का विकास दर देश के अन्य राज्यों के बीच सर्वोपरि था वहीं वर्ष (2018-19) में बिहार के स्तर में भी वृद्धि दर का देश में तीसरा स्थान है। इस अवधि में सार्वजनिक निवेश के स्तर में भी वृद्धि हुई है। पिछले 15 वर्षों में बिहार राज्य का बजट आकार 20058 करोड़ रुपये (वर्ष 2004-05) से बढ़कर 200501 करोड़ रुपये (वर्ष 2019-20) हो गया है जो 10 गुना वृद्धि है। सार्वजनिक निवेश के अलावा विकास के पैटर्न में भी भारी परिवर्तन हुआ जिसमें भौतिक अधिसंरचनात्मक विकास और सामाजिक क्षेत्र में सेवा प्रदान करने पर काफी बल दिया गया है। इसके परिणामस्वरूप राज्य की अर्थव्यवस्था का आकार वर्ष 2004-05 (77781 करोड़ रुपये) की तुलना में वर्ष 2019-20 में (557490 करोड़ रुपये) 7 गुना से भी अधिक हो गया है।

अर्थव्यवस्था का संरचनात्मक परिवर्तन (2011-12 के स्थिर मूल्यों पर)

प्रक्षेत्र	अखिल भारत			बिहार		
	2016-17	2017-18	2018-19	2016-17	2017-18	2018-19
जी.वी.ए./जी.एस.वी.ए. का क्षेत्रीय वितरण (करोड़ रुपये में)						
प्राथमिक	2065555	2168716	2226196	68764	73150	73613
द्वितीयक	3219288	3413837	3668368	64384	67427	71666
तृतीयक	6034128	6521612	7012372	178960	202397	229307
जी.वी.ए./जी.एस.वी.ए.	11318972	12104165	12906936	312108	342974	374585
जी.डी.पी./जी.एस.डी.पी.	12298327	13179857	14077586	323004	356768	394350
प्रति व्यक्ति आय (रु.)	82931	87623	92565	28424	30906	33629
जी.वी.ए./जी.एस.वी.ए. का आर्थिक संरचना में हिस्सा (प्रतिशत में)						
प्राथमिक	18.25	17.92	17.25	22.03	21.33	19.65
द्वितीयक	28.44	28.20	28.42	20.63	19.66	19.13
तृतीयक	53.31	53.88	54.33	57.34	59.01	61.22
जी.वी.ए./जी.एस.वी.ए.	100.00	100.00	100.00	100.00	100.00	100.00
विकास दर (प्रतिशत में)						
जी.डी.पी./जी.एस.डी.पी.	8.17	7.17	6.81	8.94	10.45	10.53
प्रति व्यक्ति आय (रु.)	6.79	5.66	5.64	7.25	8.73	8.81

स्रोत-केंद्रीय सांख्यिकी संगठन, भारत सरकार।

https://telegram.me/study_with_pdf

➲ राज्य में जहां प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्रों में क्रमशः 2.4 प्रतिशत अंकों एवं 1.5 प्रतिशत अंकों की गिरावट दर्ज की गई है, वहीं तृतीयक क्षेत्र में 3.9 प्रतिशत अंकों की वृद्धि दर्ज की गई।

➲ बिहार की आर्थिक वृद्धि का द्योतक मुख्य रूप से तृतीयक क्षेत्र ही है। तृतीयक क्षेत्र में पिछले दो वर्षों में 13 प्रतिशत से भी अधिक वृद्धि दर्ज की गई है।

➲ बिहार में वर्ष 2005 से आर्थिक विकास की वृद्धि दर दो अंकों में दर्ज की गई है। वर्ष 2005 से वर्ष 2015 तक बिहार की आर्थिक वृद्धि दर औसतन 10 प्रतिशत रही है। यह वृद्धि दर 2016-17 में 8.94 प्रतिशत थी, जो वर्ष 2017-18 में बढ़ कर 10.45 प्रतिशत तथा वर्ष 2018-19 में बढ़ कर 10.53 प्रतिशत हो गई है, जबकि राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक विकास दर 6 से 7 प्रतिशत रही है।

➲ हाल के वर्षों में बिहार की अर्थव्यवस्था की विकास दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2018-19 में बिहार के आर्थिक विकास में विभिन्न प्रक्षेत्रों के योगदान पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि 10 प्रतिशत या उससे अधिक विकास दर दर्ज करने वाले ये क्षेत्र बिहार के विकास के वाहक हैं। ये प्रक्षेत्र हैं– वायु परिवहन (36.0%), अन्य सेवाएं (20.0%), व्यापार, मरम्मत, होटल और जलपान गृह (17.0%), सड़क परिवहन (14.0%) एवं वित्तीय सेवाएं (13.8%)।

➲ राज्य में 10 प्रतिशत से अधिक विकास दर वाले सभी प्रक्षेत्र सेवा क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। बिहार की अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से यह अति महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

➲ वर्ष 2018-19 में तृतीयक क्षेत्र में वृद्धि दर के मामले में बिहार देश का दूसरा अग्रणी राज्य है। सेवा क्षेत्र का योगदान बिहार की अर्थव्यवस्था में 60 प्रतिशत से भी अधिक है।

➲ अर्थव्यवस्था में इस वृद्धि की वजह से बिहार की प्रति व्यक्ति आय में पिछले 15 वर्षों में चार गुनी वृद्धि हुई है। राज्य की प्रति व्यक्ति आय (Per Capita GSDP) वर्ष 2004-05 में मात्र 8773 रुपये थी, जो बढ़कर वर्ष 2018-19 में 33,629 रुपये हो गई है।

आर्थिक समीक्षा

➲ सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) पर नई श्रृंखला के आंकड़ों के अनुसार, 2018-19 में स्थिर मूल्य पर बिहार की अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 10.53 प्रतिशत और वर्तमान मूल्य पर 15.01 प्रतिशत थी, जो देश की अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर से अधिक है।

➲ वर्ष 2018-19 में वर्तमान मूल्य पर बिहार का सकल राज्य घरेलू उत्पाद 5,57,490 करोड़ रुपये और 2011-12 के स्थिर मूल्य पर 3,94,350 करोड़ रुपये था। वहीं वर्ष 2018-19 में राज्य में निवल राज्य घरेलू उत्पाद वर्तमान मूल्य पर 5,13,881 करोड़ रुपये और स्थिर मूल्य पर 3,59,030 करोड़ रुपये था। पुनः 2018-19 में प्रति व्यक्ति सकल राज्य घरेलू उत्पाद वर्तमान मूल्य पर 47541 रुपये और स्थिर मूल्य पर 33629 रुपये था।

➲ सकल राज्यगत मूल्यवर्धन (जीएसवीए) में प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों का हिस्सा क्रमशः 21.3 प्रतिशत, 19.7 प्रतिशत और 59.0 प्रतिशत था। द्वितीयक क्षेत्र के अंदर निर्माण और विनिर्माण राज्यगत मूल्यवर्धन में मुख्य योगदाता हैं, जिनका 2018-19 में क्रमशः 9.5 प्रतिशत और 8.2 प्रतिशत हिस्सा था और गत पांच वर्षों में ये हिस्से लगभग अपरिवर्तित रहे।

➲ वर्ष 2013-14 से 2018-19 के बीच समग्र द्वितीयक क्षेत्र का योगदान 19 से 20 प्रतिशत के बीच रहा। तृतीयक क्षेत्र में मुख्य व्यापार एवं मरम्मत सेवाएं (18.2%) और स्थावर संपदा, आवास स्वामित्व एवं पेशेवर सेवा (9.1%) थे। बिहार के सकल राज्यगत मूल्यवर्धन में तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा 2012-13 से 2018-19 के बीच बढ़ा है।

➲ पेट्रोल की खपत के आधार पर पटना, मुजफ्फरपुर और गोपालगंज जबकि प्रति व्यक्ति लघु बचत के आधार पर पटना, सारण और बक्सर राज्य अपेक्षाकृत समृद्ध जिले हैं।

➲ वर्ष 2018-19 में बिहार में राजकोषीय वित्तव्यवस्था के प्रबंधन में बिहार राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन अधिनियम, 2006 के संकल्पों का पालन किया गया है। इस वर्ष राजकोषीय घाटा सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 2.68 प्रतिशत, राजस्व अधिशेष सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 1.34 प्रतिशत और राज्य सरकार की लोक ऋण संबंधी देनदारी सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 32.34 प्रतिशत के बराबर थी।

➲ वर्ष 2018-19 में बिहार में कुल राजस्व प्राप्ति 131793 करोड़ रुपये और पूंजीगत प्राप्ति 20494 करोड़ रुपये थी। वहीं, राज्य में राजस्व व्यय 124897 करोड़ रुपये और कुल व्यय 154655 करोड़ रुपये था। वर्ष 2018-19 में राजस्व प्राप्ति गत वर्ष से 12.2 प्रतिशत बढ़ी, जबकि राजस्व व्यय 21.7 प्रतिशत बढ़ा। वहीं, इस अवधि में पूंजीगत व्यय 12.0 प्रतिशत घटकर 29759 करोड़ रुपये रह गया।

➲ कुल व्यय में राजस्व लेखे पर व्यय का हिस्सा वर्ष 2017-18 के 75.2 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2018-19 में 80.8 प्रतिशत हो

https://telegram.me/study_with_pdf

गया। फलतः पूंजीगत लेखे का व्यय वर्ष 2017-18 के 24.8 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2018-19 में 19.2 प्रतिशत रह गया। 154,655 करोड़ रुपये के कुल व्यय में से 1,07,737 करोड़ रुपये (69.7 प्रतिशत) विकासमूलक व्यय था। राज्य सरकार का वेतन और पेंशन पर व्यय 2018-19 में गत वर्ष से 12.2 प्रतिशत बढ़कर 35,996 करोड़ रुपये पहुंच गया।

- वर्ष 2018-19 में सामान्य सेवाओं, सामाजिक सेवाओं और आर्थिक सेवाओं पर व्यय क्रमशः 38,691 करोड़ रुपये, 58284 करोड़ रुपये और 27918 करोड़ रुपये था। इन शीर्षों के तहत गत वर्ष की अपेक्षा क्रमशः 15.9 प्रतिशत, 27.3 प्रतिशत और 18.9 प्रतिशत वृद्धि दिखी।
- वर्ष 2018-19 में कुल व्यय में सामाजिक सेवाओं पर व्यय के हिस्से में दो प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई, जबकि आर्थिक सेवाओं और सामान्य सेवाओं के हिस्सों में एक-एक प्रतिशत अंकों की गिरावट आई। वर्ष 2018-19 में सामाजिक सेवाओं पर व्यय गत वर्ष से 27.3 प्रतिशत बढ़कर 58,284 करोड़ रुपये हो गया। वर्ष 2018-19 में सामाजिक सेवाओं के तीन मुख्य शीर्षों पर व्यय इस प्रकार थे-शिक्षा, खेल, कला एवं संस्कृति 28,080 करोड़ रुपये, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण 7,318 करोड़ रुपये और जलापूर्ति, स्वच्छता, आवास एवं नगर विकास 15,638 करोड़ रुपये। इन तीनों घटकों पर व्यय की वृद्धि दर क्रमशः 13.1 प्रतिशत, 18.4 प्रतिशत और 105.5 प्रतिशत थी।
- वर्ष 2018-19 के अंत तक राज्य सरकार की कुल बकाया देनदारियां 1,68,921 करोड़ रुपये थी जो गत वर्ष की कुल बकाया देनदारियों से 7.7 प्रतिशत अधिक है। वर्ष 2018-19 के अंत में राज्य की कुल बकाया देनदारी में 74.7 प्रतिशत हिस्सा लोक ऋण का और शेष हिस्सा लघु बचतों, भविष्य निधि, आरक्षित निधियों और जमा एवं अग्रिमों का था।
- राज्य सरकार की कुल उधारियां 2018-19 में 18,668 करोड़ रुपये थी जो 2017-18 में 13,169 करोड़ रुपये और 2016-17 में 21,577 करोड़ रुपये थीं। एक महत्वपूर्ण विकास यह हुआ कि 2018-19 में लोक ऋण की अदायगी में गत वर्ष की अपेक्षा 55.4 प्रतिशत वृद्धि हुई। लोक ऋण की अदायगी 2017-18 में 4,654 करोड़ रुपये थी जो 2018-19 में बढ़कर 7,230 रुपये हो गई।
- 15वें वित्त आयोग ने वर्ष 2020-21 के लिए अपनी रिपोर्ट पेश कर दी है। उसकी अनुशंसा के अनुसार वर्ष 2020-21 के लिए कुल वितरणीय संसाधन कोष में बिहार का हिस्सा वर्तमान 9.67 प्रतिशत से बढ़कर 10.06 प्रतिशत हो गया है।

❑ कृषि एवं सहवर्ती क्षेत्र

- विगत दो दशकों में बिहार की अर्थव्यवस्था में ढांचागत बदलाव आया है, जो सकल राज्य घरेलू उत्पाद की क्षेत्रगत संरचना में कृषि क्षेत्र से सेवा क्षेत्र की ओर शिफ्ट से स्पष्ट होता है। तृतीयक क्षेत्र के हिस्से में वृद्धि के कारण राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का सापेक्ष हिस्सा वर्ष 2000-01 के 35.8 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2017-18 में 19.7 प्रतिशत रह गया, ऐसा तृतीय क्षेत्र के हिस्से में वृद्धि के कारण हुआ। हालांकि इसका जारी महत्व इस बात में निहित है कि राज्य की 70 प्रतिशत से भी अधिक आबादी कृषि कार्यों में लगी है।
- शीतोष्ण क्षेत्र के उपोष्ण अंचल में अवस्थित बिहार 24°20' से 27°31' उत्तरी अक्षांश और 83°19' से 88°17' पूर्वी देशांतर के बीच अवस्थित है।
- बिहार में सकल राजकीय मूल्यवर्धन में कृषि एवं सहवर्ती क्षेत्रों का योगदान वर्ष 2013-14 के 22.8 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2018-19 में 19.3 प्रतिशत रह गया। वर्ष 2018-19 में सकल राजकीय मूल्यवर्धन में सर्वाधिक 10.6 प्रतिशत योगदान फसल क्षेत्र का था और सबसे कम 1.5 प्रतिशत मत्स्याखेट एवं जलकृषि क्षेत्र का।
- सकल राजकीय मूल्यवर्धन में फसल क्षेत्र का हिस्सा वर्ष 2018-19 में 10.6 प्रतिशत था, लेकिन वर्ष 2013-14 के 14.2 प्रतिशत से यह 3.6 प्रतिशत अंक घट गया है।
- वर्ष 2015-16 से 2017-18 के बीच राज्य में भूमि के उपयोग का पैटर्न सामान्यतः अपरिवर्तित रहा है। बिहार के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में कृषि भूमि का अच्छा-खासा हिस्सा है, क्योंकि वर्ष 2017-18 में कुल बुआई क्षेत्र 56 प्रतिशत (52.42 लाख हेक्टेयर) था। वर्ष 2017-18 में सकल शस्य क्षेत्र (जीसीए) 75.25 लाख हेक्टेयर था, जो 144 प्रतिशत फसल सघनता दर्शाता है।
- विभिन्न पेड़ों-बागानों के अंतर्गत भूमि 2.48 लाख हेक्टेयर थी, जो कि राज्य के कुल क्षेत्र का 2.6 प्रतिशत थी, जबकि वर्ष 2017-18 में स्थायी चारागाह राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 0.2 प्रतिशत था।
- कुल अकृष्य भूमि वर्ष 2015-16 के 41.55 लाख हेक्टेयर से घटकर 2017-18 में वर्ष 41.18 लाख हेक्टयर रह गई थी, जो कुल भौगोलिक क्षेत्र का 44.0 प्रतिशत है।
- कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 11.1 प्रतिशत हिस्सा परती भूमि के अंतर्गत है।
- वर्ष 2017-18 में कुल अकृष्य भूमि सर्वाधिक 3.11 लाख हेक्टेयर गया जिले में थी और सबसे कम 0.15 लाख हेक्टेयर शेखपुरा

https://telegram.me/study_with_pdf

जिले में। वहीं, 2017-18 में भोजपुर, मधुबनी, रोहतास और सुपौल जिलों में वर्तमान परती 2 प्रतिशत से भी कम थी।

- वर्ष 2017-18 में शिवहर, अररिया, मधुबनी और सीतामढ़ी में कुल अकृष्य भूमि (वर्तमान परती को छोड़कर) का 29.6 प्रतिशत हिस्सा था। इस प्रकार, बिहार में कृषि और कृषीतर प्रयोजनों के लिए भूमि उपयोग के पैटर्न में जिलों के बीच काफी अंतर है।
- सर्वाधिक 2.83 लाख हेक्टेयर शुद्ध बुआई क्षेत्र पूर्वी चंपारण में था और सबसे कम 0.23 लाख हेक्टेयर शिवहर में। वहीं वर्ष 2017-18 में फसल सघनता सहरसा में सर्वाधिक 1.95 थी और सबसे कम 1.07 भोजपुर में।
- वर्ष 2017-18 में लगभग 20 जिलों में फसल सघनता राज्य के औसत (1.44) से अधिक दर्ज की गई। कैमूर (1.13 लाख हेक्टेयर), जमुई (0.93 लाख हेक्टेयर), पश्चिम चंपारण (0.92 लाख हेक्टेयर), गया (0.78 लाख हेक्टेयर), रोहतास (0.67 लाख हेक्टेयर) और नवादा (0.64 लाख हेक्टेयर) जिलों में कुल 5.06 लाख हेक्टेयर वन क्षेत्र था, जो राज्य के कुल वनक्षेत्र के 80 प्रतिशत से अधिक है।

भूमि उपयोग (2017-18) (आंकड़े प्रतिशत में)

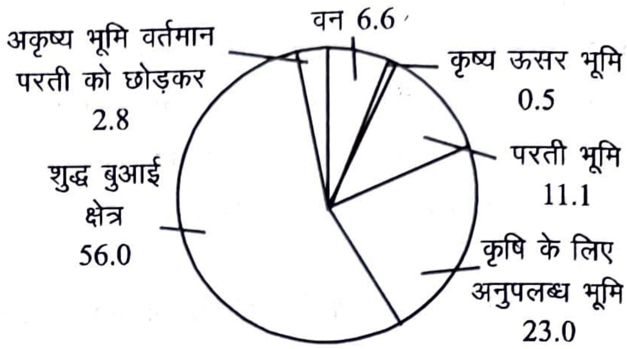

बिहार में जोतों का वर्ग-वार वितरण (2010-11 और 2015-16)

वर्ग आधारित आकार	कार्यशील जोतों की संख्या (हजार)			कार्यशील जोतों का क्षेत्रफल (हजार हेक्टेयर)			कार्यशील जोतों का औसत क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	
	2015-16	2010-11	प्रतिशत परिवर्तन	2015-16	2010-11	प्रतिशत परिवर्तन	2015-16	2010-11
सीमांत	14971	14744	1.5	3728	3669	1.6	0.25	0.25
लघु	944	948	-0.4	1178	1186	-0.6	1.25	1.25
लघु-मध्यम	414	415	-0.2	1076	1073	0.3	2.60	2.59
मध्यम	81	81	-0.1	431	415	3.8	5.29	5.09
बृहत	3	3	-1.3	45	45	-1.1	14.48	14.45
सभी	16413	16191	1.4	6457	6388	-1.1	0.39	0.39

बिहार में फसल पैटर्न (2014-15 से 2018-19) (प्रतिशत में)

फसलें	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19
खाद्यान्न	93.23	93.26	91.63	93.72	94.04
अनाज	86.15	86.19	84.88	86.94	87.10
दलहन	7.09	7.07	6.76	6.77	6.94
तिलहन	1.63	1.70	1.49	1.46	1.46
रेशेदार फसलें	1.57	1.58	3.59	1.50	1.24
ईख	3.56	3.46	3.28	3.33	3.26
कुल क्षेत्र.	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**

स्रोत- अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी निदेशालय, बिहार सरकार

- विगत चार वर्षों में सकल शस्य क्षेत्र में दलहनी फसलों का क्षेत्रफल घटता गया है, हालांकि वर्ष 2018-19 में उसमें सुधार हुआ है।
- बिहार में कुल खाद्यान्न उत्पादन वर्ष 2018-19 में 163.12 लाख टन था, जो 2014-15 में 147.50 लाख टन ही था।
- विगत पांच वर्षों में सकल शस्य क्षेत्र में तिलहन और रेशेदार फसलों, दोनों के हिस्सों में लगातार गिरावट दिखी है। वर्ष 2018-19 में सकल शस्य क्षेत्र में खाद्यान्न फसलों का 94 प्रतिशत हिस्सा राज्य में कृषि की जीवन-निर्वाह वाली प्रकृति का संकेत है। महत्वपूर्ण नगदी फसल के बतौर ईख का सकल शस्य क्षेत्र में वर्ष 2017-18 में 3.3 प्रतिशत हिस्सा था।
- पारंपरिक खाद्यान्न अर्थव्यवस्था के अनुरूप बिहार में उपजाई जाने वाली प्रमुख खाद्य फसलों में चावल, गेहूं, मक्का और दलहन शामिल हैं। वर्ष 2017-18 में अनाजों का उत्पादन 143.21 लाख टन था, जो 4.21 प्रतिशत बढ़कर वर्ष 2018-19 में 158.58 लाख टन हो गया। इस वृद्धि के बड़े हिस्से का कारण अधिक उत्पादकता है, जो 4.31 प्रतिशत वृद्धि दर्ज करते हुए वर्ष 2014-15 के 2328 किग्रा. प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 2018-19 में 2636 किग्रा. प्रति हेक्टेयर हो गई।

https://telegram.me/study_with_pdf

- गेहूं का उत्पादन वर्ष 2014-15 में 35.70 लाख टन था, जो वर्ष 2018-19 में बढ़कर लगभग 64.66 लाख टन हो गया। वहीं, मक्का का उत्पादन इस अवधि में 24.79 लाख टन से 31.94 लाख टन पहुंच गया।
- चावल का उत्पादन वर्ष 2014-15 में 82.42 लाख टन था, जो वर्ष 2018-19 में घटकर 61.56 प्रतिशत रह गया। उसकी उत्पादकता में भी 3.61 प्रतिशत की दर से गिरावट आई और वर्ष 2018-19 में 2014-15 के 2,525 किग्रा. प्रति हेक्टेयर से 1,948 किग्रा. प्रति हेक्टेयर रह गया।
- दलहनों का उत्पादन वर्ष 2014-15 से 1.89 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ते हुए 2018-19 में 4.53 लाख टन हो गया। इसमें अधिकांश वृद्धि रबी दलहनों के कारण हुई, जिसका श्रेय मुख्यत: मसूर में 36.5 प्रतिशत, गरमा मूंग में 26.3 प्रतिशत और चना में 16.0 प्रतिशत वृद्धि को दिया जा सकता है।
- गत पांच वर्षों में रबी फसलों का उत्पादन 2.71 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ा और औसत उत्पादकता 897 किग्रा. प्रति हेक्टेयर हो गई। वहीं, खरीफ दलहनों का उत्पादन वर्ष 2017-18 के 22.01 लाख टन से बढ़कर वर्ष 2018-19 में 23.22 लाख टन हो गया और इस अवधि में औसत उत्पादकता 843.2 किग्रा. प्रति हेक्टेयर हो गई।
- हालांकि कुल तिलहनों का उत्पादन थोड़ा घटा और वर्ष 2014-15 के 1.27 लाख टन से 2018-19 में 1.25 लाख टन रहा गया, लेकिन वर्ष 2014-15 की अपेक्षा वर्ष 2018-19 में मूंगफली और सरसों के उत्पादन का स्तर बढ़ता दिखा जिनमें क्रमश: 9.7 प्रतिशत और 2.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वहीं, तिलहनों की उत्पादकता 4.0 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़कर वर्ष 2014-15 के 1,093 किग्रा. प्रति हेक्टेयर से वर्ष 2018-19 में 1,247 किग्रा. प्रति हेक्टेयर हो गई।
- वर्ष 2017-18 में चावल की सर्वाधिक 4,105 किग्रा. प्रति हेक्टेयर उत्पादकता रोहतास जिले में और सबसे कम 709 किग्रा. प्रति हेक्टेयर सिवान जिले में दर्ज की गई। चावल के उत्पादन के लिहाज से शीर्ष तीन जिले रोहतास (7.92 लाख टन), औरंगाबाद (5.42 लाख टन) और कैमूर (3.54 लाख टन) थे।
- गेहूं बिहार की सर्वप्रमुख रबी फसल है, जो नवंबर में बोई और मार्च-अप्रैल में काटी जाती है। वर्ष 2017-18 में गेहूं के उत्पादन स्तर के लिहाज से तीन प्रमुख जिले रोहतास (5.18 लाख टन), मुजफ्फरपुर (3.36 लाख टन) और सीतामढ़ी (3.21 लाख टन) थे। उत्पादकता के मामले में तीन शीर्ष जिले मधेपुरा (3805 किग्रा. प्रति हेक्टेयर), बेगूसराय (3775 किग्रा. प्रति हेक्टेयर) और रोहतास (3,680 किग्रा. प्रति हेक्टेयर) थे, उत्पादकता के स्तर पर निम्न जिले हैं—शेखपुरा (2,200 किग्रा. प्रति हेक्टेयर), जमुई (2,113 किग्रा. प्रति हेक्टेयर) एवं मधुबनी (1,993 किग्रा. प्रति हेक्टेयर)।
- मक्का की उत्पादकता में वर्ष 2017-18 में जहां पूर्णिया में सर्वाधिक 9,188 किग्रा. प्रति हेक्टेयर उपज दर्ज हुई, वहीं सबसे कम 1,378 किग्रा. प्रति हेक्टेयर उपज भोजपुर में हुई।
- मक्का के उत्पादन में तीन शीर्ष जिले कटिहार (4.76 लाख टन), पूर्णिया (3.44 लाख टन) और अररिया (3.28 लाख टन) हैं।
- वर्ष 2017-18 में दलहनों की सर्वाधिक 1374 किग्रा. प्रति हेक्टेयर उत्पादकता बक्सर जिले में थी। वहीं, सुपौल (567 किग्रा. हेक्टेयर), समस्तीपुर (496 किग्रा. प्रति हेक्टेयर) और किशनगंज (492 किग्रा. प्रति हेक्टेयर) जिलों में इनकी उत्पादकता सबसे कम थी। उत्पादन के लिहाज से राज्य के तीन शीर्ष जिले हैं—पटना (0.68 लाख टन), औरंगाबाद (0.31 लाख टन) और नालंदा (0.28 लाख टन)।

बिहार के मुख्य फसलों के उत्पादन/उत्पादकता के आधार पर जिलों का वर्गीकरण (2018-19)

फसल	उत्पादन/ उत्पादकता	निम्न	उच्च
चावल	उत्पादन (हजार टन)	भागलपुर (28.68) बेगूसराय (27.48) खगड़िया (27.25)	रोहतास (792.14) औरंगाबाद (542.10) कैमूर (354.09)
	उत्पादकता (किग्रा. प्रति हेक्टेयर)	भागलपुर (874) गोपालगंज (842) सिवान (709)	रोहतास (4105) अरवल (3113) औरंगाबाद (3086)
गेहूं	उत्पादन (हजार टन)	शेखपुरा (46.70) शिवहर (43.97) मुंगेर (38.30)	रोहतास (517.85) मुजफ्फरपुर (335.65) सीतामढ़ी (321.41)
	उत्पादकता (किग्रा. प्रति हेक्टेयर)	शेखपुरा (2200) जमुई (2113) मधुबनी (1993)	मधेपुरा (3805) बेगूसराय (3775) रोहतास (3680)
मक्का	उत्पादन (हजार टन)	अरवल (0.44) कैमूर (0.16) औरंगाबाद (0.13)	कटिहार (475.83) पूर्णिया (344.26) सुपौल (327.78)
	उत्पादकता (किग्रा. प्रति हेक्टेयर)	शेखपुरा (1618) औरंगाबाद (1420) भोजपुर (1378)	पूर्णिया (9188) अररिया (7396) सुपौल (6928)

https://telegram.me/study_with_pdf

	उत्पादन (हजार टन)	शिवहर (1.77) गोपालगंज (1.70) पूर्णिया (1.16)	पटना (67.89) औरंगाबाद (31.39) नालंदा (28)
दलहन			
	उत्पादकता (किग्रा. प्रति हेक्टेयर)	सुपौल (567) समस्तीपुर (496) किशनगंज (492)	बक्सर (1374) पटना (1362) पूर्वी चंपारण (1333)

स्रोत- अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी निदेशालय, बिहार सरकार के आंकड़ों के आधार पर संकलित।

- ईख की उत्पादकता वर्ष 2017-18 में 69.06 टन प्रति हेक्टेयर थी, जो वर्ष 2018-19 में घटकर 60.15 टन प्रति हेक्टेयर रह गई।
- वर्ष 2018-19 में ईख की सर्वाधिक 84.77 टन प्रति हेक्टेयर उत्पादकता पटना जिले में और सबसे कम 46.14 टन प्रति हेक्टेयर भागलपुर जिले में दर्ज की गई। राज्य के कुल ईख उत्पादन में पश्चिम चंपारण जिले का लगभग 58.3 प्रतिशत हिस्सा है। पश्चिम चंपारण जिले में 1.72 लाख हेक्टेयर भूमि पर ईख की कृषि की जाती है, जो वर्ष 2018-19 में ईख की कृषि के कुल क्षेत्रफल का 56.6 प्रतिशत है।
- **बिहार में फलों का कुल उत्पादन** वर्ष 2016-17 में 41.05 लाख टन था, जो 4.9 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि के साथ 2018-19 में बढ़कर 42.29 लाख टन हो गया। लीची के उत्पादन में राज्य का प्रदर्शन अच्छा है। जबकि अनन्नास के उत्पादन में गिरावट आयी है।
- वर्ष 2016-17 से 2018-19 के बीच केला का उत्पादन 2.1 प्रतिशत, पपीता का 4.1 प्रतिशत, आम का 3.5 प्रतिशत, अमरूद का 8.2 प्रतिशत, तरबूज का 10.7 प्रतिशत और खरबूजा का 11.8 प्रतिशत बढ़ा।
- सर्वाधिक उत्पादकता केला के मामले में औसतन 44.94 टन प्रति हेक्टेयर थी, जबकि सबसे कम 6.26 टन प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादकता खरबूजा की रही।
- **तीन शीर्ष आम उत्पादक जिले हैं-दरभंगा, पूर्वी चंपारण और मुजफ्फरपुर।** वर्ष 2018-19 में हुए आम के कुल उत्पादन में 24.8 प्रतिशत हिस्सा है। बिहार में आम के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल में इन तीनों जिलों का संयुक्त रूप से 23.2 प्रतिशत हिस्सा है।
- **लीची का शीर्ष उत्पादक जिला मुजफ्फरपुर है,** जहां 1.48 लाख टन लीची का उत्पादन हुआ और राज्य के कुल लीची उत्पादन में उसका 48 प्रतिशत हिस्सा है।
- इसी प्रकार, तीन जिलों-कटिहार, वैशाली और मुजफ्फरपुर का राज्य के कुल केला उत्पादन में संयुक्त रूप से लगभग 33 प्रतिशत हिस्सा है। बिहार की शाही लीची और मालदह आम अपनी सुगंध और स्वाद के लिए मशहूर हैं।
- वर्ष 2018-19 में राज्य में 8.57 लाख हेक्टेयर भूमि पर कुल 166.03 लाख टन सब्जियों का उत्पादन हुआ। वर्ष 2016-17 से 2018-19 के बीच सब्जियों का कुल क्षेत्रफल लगभग 1.99 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़कर 8.28 लाख हेक्टेयर से 8.57 लाख हेक्टेयर हो गया। उसी के अनुरूप सब्जियों का कुल उत्पादन भी 7.52 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ा और 143.62 लाख टन से 166.03 लाख टन हो गया। सब्जियों के उत्पादन में वृद्धि मुख्यत: उत्पादकता में 18.81 प्रतिशत की वृद्धि के कारण हुई। गत तीन वर्षों में सब्जियों की कृषि का कुल क्षेत्रफल 1.99 प्रतिशत की औसत वार्षिक दर से बढ़ा। वर्ष 2016-17 से 2018-19 तक की अवधि में 3.20 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल पर हुए सब्जियों के कुल उत्पादन में आलू का लगभग आधा (49.11%) हिस्सा था।
- वर्ष 2016-17 से 2018-19 के बीच खीरा, मूली, टमाटर और पत्तागोभी को छोड़कर शेष सभी सब्जियों के उत्पादन में सकारात्मक वृद्धि दर दर्ज हुई। गत तीन वर्षों में उत्पादन में सर्वाधिक 63.82 प्रतिशत वृद्धि गाजर के मामले में दर्ज हुई, जबकि क्षेत्रफल के लिहाज से सर्वाधिक 39.04 प्रतिशत वृद्धि शकरकंद के मामले में हुई।
- वर्ष 2018-19 में पटना, नालंदा और वैशाली शीर्ष आलू उत्पादक जिले थे। आलू की सर्वाधिक 29.2 टन प्रति हेक्टेयर उत्पादकता वैशाली जिले में दर्ज हुई।
- प्याज के मामले में शीर्ष जिले नालंदा, कटिहार और मुजफ्फरपुर हैं। इसी प्रकार गोभी के मामले में शीर्ष जिले वैशाली, नालंदा और मुजफ्फरपुर हैं।
- सर्वाधिक 23.5 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर उपज आलू के मामले में और सबसे कम 6 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर उपज मटर के मामले में थी। आलू के बाद प्याज की उत्पादकता सर्वाधिक (23.3 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर) थी।
- भारत सरकार ने 2 जनवरी, 2020 को मक्का और गेहूं के उत्पादन और उत्पादकता में उपलब्धियों के लिए राज्य को कृषि कर्मण पुरस्कार प्रदान किया है।

https://telegram.me/study_with_pdf

बिहार में मुख्य फसलों के उत्पादन स्तर (हजार टन में)

फसलें	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	वार्षिक चक्रवृद्धि दर (%)
कुल खाद्यान्न	14750.04	14508.03	18560.78	17802.78	16311.54	4.14
कुल अनाज	14321.11	14087.25	18099.11	17348.61	15858.11	4.21
कुल चावल	8241.62	6802.22	8238.77	8093.16	6155.53	-4.02
बोड़ो चावल	1010.34	725.21	949.37	903.29	615.67	-7.42
अगहनी चावल	7049.73	5876.03	7065.07	7046.04	5403.58	-3.44
गरमा चावल	181.56	200.98	224.33	143.83	136.28	-8.68
गेहूं	3570.21	4736.45	5985.84	6104.30	6465.91	15.51
कुल मक्का	2478.75	2517.10	3845.70	3120.77	3193.91	7.49
खरीफ मक्का	825.15	692.70	624.30	535.88	464.14	-13.13
रबी मक्का	913.78	1105.14	2131.51	1645.56	2098.44	22.89
गरमा मक्का	739.82	719.26	1089.89	939.34	631.33	-0.50
कुल मोटे अनाज	2509.28	2548.58	3874.50	3151.15	3236.68	7.48
जौ	13.43	13.90	16.29	16.47	283.93	87.24
ज्वार	1.55	1.71	1.91	1.45	0.76	-14.70
बाजरा	3.73	4.64	4.05	4.97	3.53	-0.47
रागी	9.84	9.89	3.46	4.18	3.09	-27.22
कोदो-सावां	1.98	1.34	3.10	3.31	6.99	40.88
कुल दलहन	428.93	420.78	461.67	454.17	453.43	1.89
कुल खरीफ दलहन	33.69	28.98	29.30	22.01	23.22	-9.69
उड़द	14.36	12.05	11.49	7.06	7.31	-17.18
भदई मूंग	9.23	8.34	8.33	5.53	5.32	-14.04
कुल्थी	7.96	7.21	7.63	7.98	8.97	3.46
घघरा	0.43	0.49	0.43	0.43	0.38	-3.71
अन्य खरीफ दलहन	1.71	0.89	1.43	1.02	1.25	-4.79
कुल रबी दलहन	395.24	391.80	332.69	432.17	430.21	2.71
अरहर (तूर)	28.54	37.13	33.17	28.63	31.68	-0.51
चना	57.49	58.55	66.50	67.18	67.69	4.75
मसूर	140.06	140.44	146.88	147.49	148.03	1.61
मटर	17.31	17.94	16.74	16.94	17.15	-0.76
खेसारी	60.06	50.99	55.18	50.31	51.38	-3.20
गरमा मूंग	90.73	86.02	111.55	120.19	113.16	8.07
अन्य रबी दलहन	1.05	0.73	2.35	1.43	1.12	8.34
कुल तिलहन	127.01	126.52	125.86	124.24	124.94	-0.51
अंडी	0.09	0.04	0.07	0.02	0.08	-8.87
कुसुम	0.08	0.09	0.09	0.08	0.07	-3.78
तिल	2.56	2.39	1.78	1.38	1.41	-15.99
सूर्यमुखी	16.64	16.20	14.69	13.38	10.36	-10.76
सरसों-राई	92.89	94.39	97.68	98.49	103.95	2.71
तीसी	14.16	12.91	10.56	10.31	8.20	-12.34
मूंगफली	0.59	0.50	0.99	0.58	0.87	9.69
कुल रेशेदार फसलें	1637.12	1630.60	1571.00	1280.00	1085.00	-10.10
जुट	1418.71	1308.60	1356.00	1110.00	929.00	-9.68
मेसता	218.41	322.00	215.00	170.00	156.00	-12.29
ईख	21117.43	18175.59	18239.90	17610.12	20116.28	-1.28

https://telegram.me/study_with_pdf

मुख्य फसलों की उत्पादकता के स्तर (किग्रा./प्रति हेक्टेयर)

फसलें	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	वार्षिक चक्रवृद्धि दर (%)
कुल अनाज	2328	2320	2919	2839	2636	4.61
कुल चावल	2525	2104	2467	2447	1948	-3.61
बोड़ो चावल	1739	1321	1705	1728	1382	-1.89
अगहनी चावल	2711	2258	2618	2594	2036	-4.25
गरमा चावल	2207	2472	2660	2119	2256	-1.10
गेहूं	1657	2244	2843	2905	2998	15.54
कुल मक्का	3508	3571	5335	4607	4771	9.09
खरीफ मक्का	2974	2559	2586	2400	2078	-7.51
रबी मक्का	3630	4421	7482	6138	7432	19.26
गरमा मक्का	4171	3903	5601	5047	3854	0.99
कुल मोटे अनाज	3425	3491	5194	4488	4625	8.89
जौ	1109	1304	1505	1587	1990	14.63
ज्वार	1068	1063	1065	1066	1066	-0.01
बाजरा	1134	1133	1135	1134	1134	0.01
रागी	1474	1429	723	994	1071	-9.53
कोदो-सावां	757	756	379	752	751	-0.21
कुल दलहन	848	844	936	954	946	3.47
कुल खरीफ दलहन	892	821	855	855	793	-1.93
उड़द	913	883	885	890	894	-0.34
भदई मूंग	838	683	782	743	581	-6.28
कुल्थी	957	929	919	929	904	-1.13
अन्य खरीफ दलहन	757	753	753	754	754	-0.07
कुल रबी दलहन	844	846	879	960	956	3.83
अरहर (तूर)	1438	1577	1581	1548	1852	5.00
चना	958	986	1120	1154	1199	-33.06
मसूर	916	932	1005	1068	1001	3.19
मटर	1010	1053	1020	1031	1036	0.30
खेसारी	990	934	1059	1057	1018	1.81
गरमा मूंग	579	548	690	707	705	6.70
अन्य रबी दलहन	1000	1010	1005	1005	1004	0.03
कुल तिलहन	1093	1059	1155	1208	1247	4.03
अंडी	958	953	961	1000	965	0.63
कुसुम	804	802	813	818	811	0.37
तिल	874	868	877	877	873	0.08
सूर्यमुखी	1429	1421	1428	1429	1417	-0.11
सरसों-राई	1100	1053	1180	1245	1290	4.98
तीसी	861	859	833	851	849	-0.37
मूंगफली	1023	1018	1015	1019	1020	-0.05
जूट	2694	2508	2671	2393	2367	-3.01
मेसता	2402	3515	2369	1479	1935	-12.17
ईख	67040	68970	69060	65480	89181	5.33

https://telegram.me/study_with_pdf

बिहार के कृषि जलवायु जोन

जोन	मिट्टी का प्रकार	औसत वर्षापात (मिमी.)	तापमान (डिग्री से.)	मुख्य फसलें	जिले
उत्तर-पश्चिमी जलोढ़ मैदान	मध्यम अम्लीय, भारी गठन, बलुई दोमट से चिकनी तक बाढ़ प्रवण	1235	अधिकतम - 36.6 न्यूनतम - 7.7	चावल, गेहूं, मक्का, आलू, ईख, आम, लीची	पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, सिवान, सारण, सीतामढ़ी, शिवहर, मुजफ्फरपुर, वैशाली, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, गोपालगंज, बेगूसराय
उत्तर-पूर्वी जलोढ़ मैदान	हल्का से मध्यम गठन, हल्की अम्लीय, बलुई से सिल्टयुक्त दोमट तक	1382	अधिकतम - 33.8 न्यूनतम - 8.8	मक्का, जूट अन्ननास	पूर्णिया, कटिहार, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, अररिया, किशनगंज
दक्षिण बिहार जलोढ़ मैदान	जलोढ़ से बलुई दोमट तक	1102	अधिकतम - 37.1 न्यूनतम - 7.8	चावल, गेहूं, आलू, आम, अमरूद	शेखपुरा, मुंगेर, जमुई, लखीसराय, भागलपुर, बांका, रोहतास, भोजपुर, बक्सर, कैमूर, अरवल, पटना, नालंदा, नवादा, जहानाबाद, औरंगाबाद, गया।

❑ कौशल विकास

- राष्ट्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता नीति, 2015 ने 2009 की पूर्ववर्ती नीति की जगह ले ली है। इस नई नीति का मुख्य उद्देश्य कौशल विकास संबंधी चुनौतियों का गति, मानक और टिकाऊपन के लिहाज से काफी हद तक सामना करना है। देश के अंदर चलने वाली कौशल विकास संबंधी सारी गतिविधियों को एक व्यापक रूपरेखा या ढांचा उपलब्ध कराने का लक्ष्य, उन्हें आम मानकों की दिशा में लाना और इस प्रकार कौशल विकास को मांगों के पैटर्न से जोड़ना है। उद्देश्यों और संभावित परिणामों का निर्धारण करने के अतिरिक्त नीति में उन उद्देश्यों और संभावित परिणामों की प्राप्ति के लिए समग्र संस्थागत ढांचे की भी पहचान की गई है।
- मिशन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मुख्य संस्थागत तंत्रों को दो स्तरों में बांटा गया है- शीर्ष स्तर पर नीतिगत मार्गदर्शन के लिए शासी परिषद (गवर्निंग काउंसिल) और मिशन के कार्यकारी स्कंध के रूप में संचालन समिति (स्टीयरिंग कमिटी) और मिशन निदेशालय। मिशन निदेशालय को तीन अन्य संस्थानों का सहयोग प्राप्त होगा- राष्ट्रीय कौशल विकास अभिकरण (एनएसडीए), राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) और प्रशिक्षण महानिदेशालय (डीजीटी)। मिशन के सुगम काम-काज के लिए इन तीनों संस्थानों का उद्देश्य निदेशालय के साथ क्षैतिज जुड़ाव होगा।
- कौशल युवा कार्यक्रम, राज्य सरकार के सात निश्चयों में से एक 'आर्थिक हल, युवाओं का बल' का हिस्सा है। इस कार्यक्रम का लक्ष्य 15 से 28 वर्ष उम्र वाले सभी आकांक्षियों के लिए लक्षित है। यह उम्र सीमा अनुसूचित जाति/जनजाति के लिए 33 वर्ष, अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए 31 वर्ष और नि:शक्तता-ग्रस्त व्यक्तियों के लिए 33 वर्ष है।
- ग्रामीण बिहार में पुरुषों के लिए श्रमिक सहभागिता दर 64.0 प्रतिशत थी, जो संपूर्ण भारत के औसत से लगभग 8 प्रतिशत अंक कम थी। ग्रामीण बिहार में महिलाओं के लिए श्रमिक सहभागिता दर अत्यंत कम-मात्र 3.9 प्रतिशत थी। वर्ष 2017-18 में बिहार में 55.9 प्रतिशत पुरुष स्वनियोजित थे। बिहार में अनियमित श्रमिकों का हिस्सा 32.1 प्रतिशत था, जो संपूर्ण भारत के स्तर (24.3%) से काफी अधिक है।
- बिहार में कामकाजी पुरुषों को रोजगार उपलब्ध कराने वाले प्रमुख उद्योग थे-कृषि वानिकी एवं मत्स्याखेट (44.6%), निर्माण (17.1%), थोक और खुदरा व्यापार, वाहनों की मरम्मत (12.3%) तथा विनिर्माण (9.3%)। महिला श्रमिकों के लिए रोजगार देने वाले मुख्य उद्योग कृषि, वानिकी एवं मत्स्याखेट (53.6%) और शिक्षा (25.7%) थे।
- राज्य सरकार ने अगस्त, 2018 से 'सतत जीविकोपार्जन योजना' नामक एक नई योजना शुरू की है। तीन वर्षों में 840 करोड़ रुपये बजट परिव्यय के साथ जीविका (JEEViKA) को इसके

https://telegram.me/study_with_pdf

क्रियान्वयन के लिए नोडल अभिकरण बनाया गया है। इस योजना का उद्देश्य अप्रैल, 2016 में शराबबंदी लागू होने के पहले देशी शराब और ताड़ी के उत्पादन और बिक्री के काम में पारंपरिक रूप से लगे परिवारों सहित अति गरीब परिवारों को आमदनी वाली टिकाऊ परिसंपत्तियां उपलब्ध कराना है।

❑ उद्योग क्षेत्र

- बिहार औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकार (बिआडा) का गठन वर्ष 1974 के वैधानिक प्रावधानों के तहत राज्य में विकास के सारे पहलुओं को शामिल करते हुए औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया। यह औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए निवेशकों को आवंटित करने के लिए भूमि का अधिग्रहण करने के लिए अधिकृत है।
- बिआडा के चार क्षेत्रीय कार्यालय और औद्योगिक क्षेत्र **पटना, भागलपुर, मुजफ्फरपुर** और **दरभंगा** में अवस्थित हैं।
- नवाचारों के पोषण और नवाचार आधारित उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने मार्च, 2017 में बिहार स्टार्ट-अप नीति शुरू की है। सिगरेट निर्माण कारखाना 'इम्पीरियल टोबैको कंपनी' मुंगेर जिले में अवस्थित है। यह देश का सबसे पुराना तम्बाकू कारखाना है, जो 1905 में प्रारंभ हुआ था।
- **बिहार स्टार्ट-अप नीति को चार स्तंभों (युवा-YUVA) पर आधारित बनाया गया है।** इसमें **Y** जागरूकता, नेटवर्किंग और मेंटरिंग अभियान को शामिल करने वाला एवं **'यस टू स्टार्टअप'** (नवांकुर उद्यमों के लिए हां) के लिए, **U** स्टार्टअप के सहयोग के लिए, **'अनशीलिंग रेगुलेटरी एनेब्लर्स'** (विनियामक सक्षमकर्ताओं को उन्मुक्ति) के लिए, **V** स्टार्टअप के प्रोत्साहन और सुगमीकरण के लिहाज से **'वाइब्रेंसी इन एजुकेशन सिस्टम'** (शिक्षा व्यवस्था में उत्साह) के लिए और **A 'एक्सेस टू फाइनेंसिंग एंड इनक्यूबेशन सपोर्ट'** (वित्तीयन एवं पालन-पोषण संबंधी सहायता की उपलब्धता) के लिए आते हैं।
- बिहार में सकल राजकीय मूल्यवर्धन में वर्ष 2017-18 में औद्योगिक क्षेत्र का योगदान 20 प्रतिशत था, जो संपूर्ण भारत के औसत से 11.2 प्रतिशत कम है। यह झारखंड (37.1 प्रतिशत), छत्तीसगढ़ (48 प्रतिशत) और ओडिशा (42.1 प्रतिशत) जैसे राज्यों से भी कम था।
- वर्ष 2016-17 में देश के औद्योगिक क्षेत्र के कुल सकल मूल्यवर्धन में बिहार का योगदान मात्र 0.5 प्रतिशत था। इससे पूर्व (पहले) के वर्षों में यह अनुपात और भी कम लगभग 0.3 प्रतिशत था।
- बिहार के सकल निर्गत मूल्य में सकल मूल्यवर्धन का हिस्सा भी 13.4 प्रतिशत ही था, जो औद्योगिक उत्पादन के लिहाज से सर्वोत्तम प्रदर्शन वाले राज्य महाराष्ट्र से 9.1 प्रतिशत कम है। राष्ट्रीय स्तर पर यह अनुपात 18.8 प्रतिशत है।
- बिहार में आधुनिक चीनी मिल 'मरहौरा' के 'सारन' नामक स्थान पर वर्ष 1904 में स्थापित की गई थी।
- बिहार में अभी 6 जिलों में 11 चीनी मिलें काम कर रही हैं। ये चीनी मिलें हैं–बगहा, हरिनगर, नरकटियागंज, मझौलिया, सासामुसा, गोपालगंज, सिधवलिया, रीगा, हसनपुर, लौरिया, सुगौली। इन 11 चीनी मिलों में से 7 दो जिलों- पश्चिम चंपारण (4 चीनी मिल) और गोपालगंज (3 चीनी मिल) में अवस्थित हैं।
- वर्ष 2017-18 के 9.57 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2018-19 में 10.37 प्रतिशत चीनी उत्पादन हुआ।
- बिहार में सीमेंट उद्योग – रोहतास एवं औरंगाबाद में।
- उर्वरक उद्योग – श्रीकृष्णा उर्वरक लिमिटेड, मुजफ्फरपुर में।
- बिहार में तेलशोधक कारखाना बरौनी में है।
- बिहार के उद्योगों के कमिश्नर का कार्यालय पटना में स्थित है।
- भारत वैगन एवं इंजीनियरिंग कंपनी लि. मोकामा (बिहार) में स्थित है। यह एक केंद्रीय सार्वजनिक इकाई है, जो 13 अगस्त, 2008 के बाद रेल मंत्रालय को स्थानांतरित कर दी गई। इससे पूर्व यह भारी उद्योग और सार्वजनिक संयंत्र मंत्रालय के अंतर्गत थी।

बिहार में हथकरघा के संकेंद्रण वाले जिले

जिला	उत्पाद
भागलपुर	रेशमी, सूती, सजावटी कपड़े, स्टेपल चादरें, निर्यात योग्य रेशमी और सूती कपड़े
बांका	तसर रेशम, निर्यात योग्य रेशमी कपड़े और सूती तौलिए-गमछे
गया	सूती कपड़ों के थान, चादरें, तौलिए-गमछे
नालंदा	सजावटी पर्दे, बिस्तर के खोल, आंतरिक सज्जा सामग्रियां और सजावटी कपड़े
नवादा	तसर रेशम और महिलाओं की पोशाक से संबंधित वस्तुएं, लिनेन
मधुबनी	महीन सूती कपड़ों के थान, धोती, कमीज के कपड़े
औरंगाबाद, रोहतास	ऊनी कंबल, ऊनी कालीन और साड़ियां
कैमूर	ऊनी कालीन, बनारसी साड़ियां
पटना, सिवान	सूती कपड़े और सजावटी कपड़े
पूर्णिया, कटिहार	जूट के थैले, जूट मिश्रित सामग्रियां सज्जा सामग्रियां

https://telegram.me/study_with_pdf

- बिहार में कृषि आधारित उद्योग, वन आधारित उद्योग, बालुका खनन उद्योग, तेलशोधन सहित धातु कार्य, रसायन, प्लास्टिक, विद्युत चमड़ा आदि उद्योगों की प्रत्याशा एवं संभावनाएं हैं। बिहार राज्य का देश के उद्यम में हिस्सेदारी मात्र 1.22 प्रतिशत है।
- मखाना उत्पादन करने वाला देश का एकमात्र राज्य बिहार है।
- भागलपुर को रेशमी वस्त्रों के उत्पादन के कारण 'सिल्क सिटी' भी कहा जाता है।
- औरंगाबाद जिले का ओबरा 'कालीन उद्योग' के लिए प्रसिद्ध है।
- बिहार राज्य की राजधानी पटना में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम साइंस सिटी की स्थापना की जा रही है।
- दुग्ध विकास को बढ़ावा देने के लिए राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक महासंघ (कॉम्फेड) की स्थापना की गई है।
- आईटीसी लिमिटेड कंपनी ने अपना पहला दुग्ध संयंत्र मुंगेर में स्थापित किया है।
- बिहार राज्य में सर्वाधिक 'तसर' प्रकार के रेशम का उत्पादन किया जाता है।

बिहार के प्राप्त प्रमुख खनिज संसाधन

खनिज संसाधन	प्राप्ति स्थान/जिला
मैंगनीज	पटना, मुंगेर, गया
अभ्रक	गया, जमुई, बांका, नवादा
पायराइट	अमसोर एवं बंजारी (रोहतास)
चीनी मिट्टी	भागलपुर, वैशाली, मुंगेर
अग्निसह मिट्टी	मुंगेर, पूर्णिया, भागलपुर
बॉक्साइट	खड़कपुर (मुंगेर), बंजारी (रोहतास)
टिन	देवराज एवं कुर्कखंड (गया)
ग्रेफाइट	सिमुलतल्ला (जमुई)
सेलखड़ी	गया, मुंगेर, नवादा
एस्बेस्टस	मुंगेर
डोलोमाइट	रोहतास
स्लेट, सिलिका	मुंगेर
यूरेनियम	गया, नवादा
सोना	मुंगेर
शोरा	सारण, गोपालगंज, सिवान, वैशाली, मुजफ्फरपुर
फायर क्ले	भागलपुर
पेट्रोलियम	पश्चिम चंपारण, पूर्णिया, सहरसा, किशनगंज
कोयला	भागलपुर, मुंगेर
चूना पत्थर	रामडीहरा, बौलिया और बंजारी (रोहतास)
बेरीलियम	गया
क्वार्ट्ज एवं सिलिका बालू	भागलपुर, जमुई, मुंगेर, नवादा
क्वार्ट्जाइट	लखीसराय, मुंगेर, नालंदा

- बिहार में देश के कुल स्वर्ण भंडार का कुल 44 प्रतिशत उपस्थित है। इस प्रकार बिहार में भारत का सर्वाधिक स्वर्ण भंडार है।

❑ बिहार के खनिज आधारित मुख्य उद्योग

खनिज	उद्योग/कंपनी	स्थान
1. सीमेंट	कल्याणपुर सीमेंट लिमिटेड	बंजारी (रोहतास)
	श्री सीमेंट लिमिटेड	औरंगाबाद
2. उर्वरक	हराभरा फर्टिलाइजर	धनुकागरा
	श्री कृष्णा फर्टिलाइजर	मुजफ्फरपुर
3. पेट्रोलियम रिफाइनरी	इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन	बरौनी

❑ प्रमुख उद्योग/कारखाने	स्थान
1. भारत वैगन एंड इंजीनियरिंग कंपनी लिमिटेड	मोकामा (पटना)
2. बाटा इंडिया लिमिटेड	मोकामा (पटना)
3. तेलशोधक कारखाना	बरौनी (बेगूसराय)
4. बिहार स्टेट स्कूटर्स लिमिटेड	फतुहा (पटना)
5. रेशम उद्योग	भागलपुर
6. तसर रेशम उद्योग	बांका
8. रेल पहिया	बेलापुर, सारण
9. विद्युत लोकोमोटिव कारखाना	मधेपुरा
10. सीमेंट उद्योग	डालमिया नगर (रोहतास)
11. जूट उद्योग	पूर्णिया, कटिहार
12. सूती वस्त्र उद्योग	गया, भागलपुर, पटना, मुंगेर
15. उर्वरक उद्योग	बरौनी
16. चमड़ा उद्योग	पटना, नालंदा, मुजफ्फरपुर, गया

- गौरतलब है कि बिहार में प्रथम चीनी मिल 1840 ई. में बेतिया में डचों के द्वारा प्रारंभ की गई थी।
- बिहार में किशनगंज जिले में चाय की खेती की जाती है।

https://telegram.me/study_with_pdf

➲ बिहार में हथकरघा से संबंधित शीर्ष स्तर पर दो विपणन संगठन हैं- बिहार राज्य हथकरघा सहकारी संघ (पटना) और बिहार राज्य ऊन एवं भेड़ संघ (पटना)।

➲ इसके अतिरिक्त नालंदा, सीतामढ़ी, सिवान, मधुबनी, पूर्णिया और भागलपुर में क्षेत्रीय हथकरघा निगम भी हैं।

➲ भागलपुर और बांका जिलों के बुनकरों के हित में केंद्र सरकार ने भागलपुर हथकरघा महासंकुल स्थापित किया है।

➲ बिहार में पावरलूम मुख्यतः भागलपुर, बांका और गया जिलों में अवस्थित हैं।

➲ बिहार में तीन प्रकार के रेशम का उत्पादन किया जाता है - मलबरी, तसर और इरी।

➲ मुख्यमंत्री कोसी मलबरी योजना के तहत कोसी क्षेत्र के 7 जिलों (सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, अररिया, किशनगंज, कटिहार और पूर्णिया) को मलबरी उत्पादन के प्रोत्साहन के लिहाज से चुना गया है।

➲ बिहार में बेगूसराय एकमात्र जिला है, जहां इरी रेशम का उत्पादन होता है।

➲ बिहार में पूर्णिया जिले के मरांगा में सार्वजनिक-निजी साझेदारी के तहत जूट पार्क की स्थापना की गई है।

➲ दरभंगा औद्योगिक क्षेत्र के अंतर्गत बेला, धरमपुर, दोनर, झांझरपुर, खगड़िया, मुरलीगंज, पंडौल, सहरसा, समस्तीपुर और उदाकिशनगंज के औद्योगिक क्षेत्र आते हैं।

➲ मुजफ्फरपुर औद्योगिक क्षेत्र के अंतर्गत मुजफ्फरपुर, कुमारबाग, रामनगर, सीतामढ़ी, रक्सौल, बेतिया और सिवान, हाजीपुर के औद्योगिक क्षेत्र आते हैं।

➲ भागलपुर औद्योगिक क्षेत्र के अंतर्गत बरारी, मुंगेर, सीताकुंड, जमालपुर, मरांगा, कहलगांव, लखीसराय, पूर्णिया सिटी और किशनगंज औद्योगिक क्षेत्र आते हैं।

❑ ऊर्जा संसाधन

➲ अप्रैल, 1958 में बिहार राज्य विद्युत बोर्ड का गठन मूलतः विद्युत (आपूर्ति) अधिनियम, 1948 के अनुच्छेद 5 के तहत किया गया था और उसे बिहार में विद्युत उत्पादन, संचरण, वितरण और बिजली संबंधी अन्य गतिविधियों के प्रबंधन के लिए अधिदेशित किया गया था।

➲ नई बिहार राज्य विद्युत सुधार अंतरण योजना, 2012 के तहत नवंबर, 2012 में बोर्ड को पांच कंपनियों में बांट दिया गया– 1. बिहार राज्य विद्युत (होल्डिंग) कंपनी लिमिटेड (BSPHCL), 2. बिहार राज्य विद्युत उत्पादन कंपनी लिमिटेड (BSPGCL), 3. बिहार राज्य विद्युत संचरण कंपनी लिमिटेड (BSPTCL), 4. उत्तर बिहार विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड (NBPDCL) और 5. दक्षिण बिहार विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड (SBPDCL)।

➲ वर्ष 2018-19 में बिजली की खपत के मामले में शीर्ष जिले थे- पटना (523.6 करोड़ यूनिट), गया (163.3 करोड़ यूनिट) और नालंदा (112.8 करोड़ यूनिट)। इस संदर्भ में सबसे पिछड़े तीन जिले थे- शिवहर (8.6 करोड़ यूनिट), अरवल (16.6 करोड़ यूनिट) और शेखपुरा (19 करोड़ यूनिट)।

➲ बिजली की खपत में सबसे अधिक वृद्धि दर्ज करने वाले तीन जिले हैं–सिवान (28.8 प्रतिशत), औरंगाबाद (29.7 प्रतिशत) और नवादा (36.5 प्रतिशत)।

➲ केंद्र सरकार ने समेकित विद्युत विकास योजना के तहत बिहार के छः शहरों मुजफ्फरपुर, भागलपुर, कहलगांव, गया, बोधगया और आरा के लिए दो अतिरिक्त योजनाओं को स्वीकृति प्रदान की है।

➲ बिहार में बिजली की प्रति व्यक्ति उपलब्धता वर्ष 2018-19 में 311 किलोवॉट-घंटा है।

➲ बिहार में बिजली की चरम मांग पूरी करने के मामले में काफी सुधार हुआ है और उपलब्धता वर्ष 2012-13 के 2650 मेगावॉट से वर्ष 2018-19 में 5300 मेगावॉट हो गई है अर्थात पिछले 6 वर्षों में बिजली की उपलब्धता लगभग 100 प्रतिशत बढ़ी है।

➲ वर्ष 2012-13 के 1802 मेगावॉट से बढ़कर 2018-19 में 5139 मेगावॉट हो गई, जो मांग की चरम पूर्ति से लगभग 185 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। वर्ष 2012-13 तक लगभग 32 प्रतिशत की सर्वोच्च कमी (पीक डेफिफसिट) रहती थी। वर्ष 2018-19 तक यह कमी घटकर लगभग 3 प्रतिशत रह गई।

➲ वर्ष 2021-22 तक बिहार में बिजली की मांग लगभग 6900 मेगावॉट और ऊर्जा की वार्षिक मांग 3984.1 करोड़ यूनिट होना अनुमानित है।

➲ राज्य में अभी 13 लघु जलविद्युत परियोजनाएं चालू हैं, जिनकी कुल स्थापित क्षमता 54.3 मेगावॉट है। राज्य में 12 और योजनाओं का कार्य प्रगति पर है।

बिहार की ताप एवं जलविद्युत परियोजनाएं	
1.	बरौनी तापविद्युत केंद्र (बीटीपीएस)
2.	कांटी बिजली उत्पादन निगम लि. (केबीयूएनएल)
3.	कोशी जलविद्युत केंद्र (केएचपीएस)
4.	पूर्वी गंडक नहर जलविद्युत परियोजना
5.	सोन पश्चिमी लिंक नहर जलविद्युत परियोजना
6.	सोन पूर्वी लिंक नहर जलविद्युत परियोजना
7.	अगनूर जलविद्युत परियोजना

https://telegram.me/study_with_pdf

8. ढेलाबाग जलविद्युत परियोजना
9. त्रिवेणी लिंक नहर जलविद्युत परियोजना
10. नासरीगंज जलविद्युत परियोजना
11. सेबारी जलविद्युत परियोजना
12. जयनगरा जलविद्युत परियोजना
13. सिरखिंडा जलविद्युत परियोजना
14. बेलसार जलविद्युत परियोजना
15. अरवल जलविद्युत परियोजना

नई परियोजनाएं

1. नबीनगर चरण-1 संयंत्र
2. बक्सर विद्युत परियोजना
3. अतिविशाल विद्युत परियोजना (बांका)

बिहार में निर्माणाधीन लघु जलविद्युत परियोजनाएं

परियोजना	जिला	क्षमता (मेगावॉट)
काम की प्रगति 75 प्रतिशत तक अधिक		
अमेठी (1× 500 किलोवॉट)	रोहतास	0.5
तेजपुरा (2× 750 किलोवॉट)	औरंगाबाद	1.5
पहरमा (2× 500 किलोवॉट)	रोहतास	1.0
राजपुर (2× 350 किलोवॉट)	सुपौल	0.70
काम की प्रगति 50 से 75 प्रतिशत तक अधिक		
मठौली (2× 400 किलोवॉट)	पश्चिम चंपारण	0.80
रामपुर (1× 250 किलोवॉट)	रोहतास	0.25
नटवार (1× 500 किलोवॉट)	रोहतास	0.25
सिपहा (2× 500 किलोवॉट)	औरंगाबाद	1.0
देहरा (2× 500 किलोवॉट)	औरंगाबाद	1.0
वलीदार (1× 700 किलोवॉट)	अरवल	0.70
डेहरी एस्केप	रोहतास	
काम की प्रगति 50 प्रतिशत से अधिक		
बड़वल (2× 800 किलोवॉट)	पश्चिम चंपारण	1.6

विद्युत और ऊर्जा की अनुमानित उपलब्धता (2019-20 से 2020-21)

वर्ष	कुल क्षमता (मेगावॉट)	राज्य की परिधि में अनुमानित चरम उपलब्धता (मेगावॉट)	राज्य की परिधि में ऊर्जा की अनुमानित उपलब्धता (करोड़ यूनिट)
2019-20	6414	5323	3263.2
2020-21	8538	6199	3673.2
2021-22	10102	6992	4134.7

➲ बिहार नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण (ब्रेडा) बिहार राज्य के अपारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के उपयोग वाली परियोजनाओं के विकास के लिए समर्थित निकाय है।

➲ रजौली में भारतीय आणविक विद्युत निगम लिमिटेड द्वारा एक आणविक विद्युत संयंत्र की स्थापना की जा रही है, इसके साथ ही परमाणु विद्युत संयंत्र वाला बिहार देश का सातवां राज्य होगा।

❑ परिवहन

➲ बिहार आर्थिक समीक्षा, 2019-20 के अनुसार सितंबर, 2019 तक बिहार में कुल 43 राष्ट्रीय राजमार्ग थे, जिनकी कुल लंबाई का 4,917 किमी. हिस्सा बिहार में था। ज्ञातव्य है कि सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार के आंकड़ों के अनुसार 31 मार्च 2019 तक बिहार में राष्ट्रीय राजमार्ग की लंबाई 5358 किलोमीटर है।

➲ राज्य के तीन जिलों में राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई सबसे अधिक बढ़ी है। ये जिले हैं-जमुई (110 किमी.), सिवान (77.2 किमी.) और कटिहार (56.1 किमी.)।

➲ आर्थिक समीक्षा, 2019-20 के अनुसार, सड़क नेटवर्क की दृष्टि से बिहार के सभी जिलों में 160 किमी.प्रति लाख आबादी के साथ जमुई जिला शीर्ष पर है, इसके बाद औरंगाबाद (152 किमी.) और कैमूर (143 किमी.) का स्थान है। वहीं, बेगूसराय (54 किमी.), मुंगेर (67 किमी.) और पटना (69 किमी.) पथ घनत्व के लिहाज से सबसे नीचे हैं।

➲ भारतमाला परियोजना का पहला चरण 2017-18 से 2021-22 तक चलेगा। बिहार तीन श्रेणियों में लाभान्वित होगा। जिसमें मार्ग और फीडर मार्ग (305 किमी.), राष्ट्रीय मार्गों की क्षमता में सुधार (70 किमी.) और सीमावर्ती तथा अंतरराष्ट्रीय संपर्क (50 किमी.)।

➲ भारतमाला परियोजना के पहले चरण के अंतर्गत, बिहार में 425 किमी. सड़कों का निर्माण होना है, जिसका संपूर्ण भारत में बनने वाली सड़कों की लंबाई में 1.71 प्रतिशत हिस्सा है।

➲ सितंबर, 2019 तक बिहार में राज्य राजमार्गों की कुल लंबाई 4,006 किमी. थी, जिनका राज्य की कुल सड़कों में 2.1 प्रतिशत हिस्सा था।

➲ सितंबर, 2019 तक दरभंगा (5.6 प्रतिशत), गया (5.2 प्रतिशत) और पटना (5.2 प्रतिशत) कुल राज्य राजमार्ग में हिस्से के लिहाज से अग्रणी जिले थे।

➲ राज्य से होकर गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्गों में NH-31 की लंबाई बिहार में सबसे अधिक 404 किमी. है।

https://telegram.me/study_with_pdf

➲ **ज्ञातव्य है कि सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार के 31 मार्च 2019 तक के आंकड़ों के अनुसार बिहार में सबसे लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग 27EW (बिहार में लंबाई - 487 किमी.) तत्पश्चात NH-31 (बिहार में लंबाई - 415 किमी.) है।**

➲ सितंबर, 2019 तक प्रति 1000 वर्ग किमी. क्षेत्रफल पर ग्रामीण पथों में लंबाई के लिहाज से शीर्ष तीन जिले थे-शिवहर, वैशाली और दरभंगा।

➲ वर्ष 2017 में बिहार में कुल 3714 किमी. लंबा रेलमार्ग था। देश के आंकड़ों में बिहार का 5.5 प्रतिशत हिस्सा था। बिहार में प्रति 1000 वर्ग किमी. पर रेलमार्ग घनत्व 39.4 किमी. था। प्रति लाख आबादी पर रेलमार्ग की लंबाई बिहार में मात्र 3.2 किमी. थी।

➲ बिहार में दो ग्रीनफील्ड इंजन कारखानों का निर्माण किया गया है। मधेपुरा विद्युत रेल इंजन कारखाने ने काम करना शुरू कर दिया है और मढ़ौरा में डीजल इंजन कारखाना भी काम करना शुरू कर दिया है।

➲ वर्ष 2008-2017 की अवधि में देश में बिहार का अतिरिक्त सड़क के निर्माण के मामले में छठां स्थान है। सड़कों पर बढ़े निवेश के कारण बिहार में प्रति 1000 वर्ग किमी. भौगोलिक क्षेत्रफल पर सड़क नेटवर्क का घनत्व 223 किमी. है।

➲ वर्तमान में बिहार से गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग हैं - 19 G.Q., 119, 219, 319, 319A, 20, 120, 22, 122, 122A, 122B, 322, 722, 922, 27 E.W., 227, 227A, 227F, 227J, 227L, 327, 327A, 327AD, 527, 527A, 527B, 527C, 527D, 527E, 727, 727A, 727AA, 31, 131, 131A, 131B, 231, 331, 431, 531, 33, 133, 133A, 133B, 333, 333A, 333B, 333C, 139।

➲ **बिहार में वायु-यात्रा करने वाले लोगों की संख्या में 2018-19 में 40.61 लाख रही, जबकि वर्ष 2017-18 में यह संख्या 31.11 लाख थी।**

➲ **बिहार राज्य पथ विकास निगम आईएसओ (ISO) 9001:2008 प्रमाणित संस्थान है। यह अपने आरंभ से ही मुख्यमंत्री राहत कोष में अंशदान करता रहा है। निगम का टर्नओवर गत 7 वर्षों में लगभग चौगुना बढ़ा है।**

➲ **बिहार सघन आबादी वाला राज्य है, जिससे होकर अनेक नदियां बहती हैं। इस पृष्ठभूमि में राज्य सरकार बसावटों के बीच दूरी कम करने और वस्तुओं तथा यात्रियों के परिवहन को** आसान बनाने के लिए नदियों पर पुलों का निर्माण करती रही है। बिहार राज्य पुल निर्माण निगम ने वर्ष 2013-14 से 2017-18 तक के पांच वर्षों के दौरान 6,545 करोड़ रु. के व्यय से कुल 661 पुलों का निर्माण किया है। निगम ने अपनी वित्तीय स्थिति का कुशल प्रबंधन किया है और उसे लगातार मुनाफा हुआ है।

➲ बृहद, मध्यम और लघु सिंचाई में सार्वजनिक निवेश विगत वर्षों के दौरान बढ़ता गया है। गौरतलब है कि वर्ष 2012-13 से सिंचाई पर पूंजीगत व्यय राजस्व व्यय की तुलना में अधिक रहा है। राज्य में चरम सिंचाई क्षमता 117.54 लाख हेक्टेयर अनुमानित है, जिसमें से सृजित क्षमता 72.07 लाख हेक्टेयर और प्रयुक्त क्षमता 64.38 लाख हेक्टेयर थी।

➲ भारत अभी विश्व में दूरसंचार का दूसरा सबसे बड़ा बाजार है, जहां 118 करोड़ उपभोक्ता (सब्सक्राइबर) हैं। बिहार में भी दूरसंचार क्षेत्र सबसे तेजी से बढ़ने वाले क्षेत्रों में से एक है। विगत वर्षों के दौरान बिहार और अन्य राज्यों में इस क्षेत्र में जबर्दस्त वृद्धि दर्ज हुई है और दूरभाष घनत्व तेजी से बढ़ता जा रहा है। लेकिन इसके बढ़ने का रुझान वर्ष 2019 में बिहार और संपूर्ण भारत, दोनों जगह पलट गया। वर्ष 2019 में ग्रामीण दूरभाष घनत्व के लिहाज से 46 कनेक्शन के साथ बिहार का देश के प्रमुख राज्यों के बीच नीचे से दूसरा स्थान और शहरी दूरभाष घनत्व के लिहाज से 149 कनेक्शनों के साथ आठवां स्थान था। सर्वाधिक ग्रामीण दूरभाष घनत्व (86 कनेक्शन) तमिलनाडु में दर्ज किया गया था और सर्वाधिक शहरी दूरभाष घनत्व (302 कनेक्शन) केरल में। राष्ट्रीय औसत इस प्रकार था - ग्रामीण : 57 कनेक्शन, शहरी : 160 कनेक्शन और समग्र : 90 कनेक्शन।

❑ बिहार में स्वास्थ्य

➲ राज्य सरकार द्वारा उठाए गए कुछ परिणाममूलक कदमों के कारण हाल के वर्षों में स्वास्थ्य संबंधी परिणामों में काफी प्रगति हुई है। जन्मकालीन जीवन संभाव्यता (एलईबी) का आशय मृत्यु संबंधी वर्तमान स्थिति के तहत किसी नवजात के जीवित रहने के औसत वर्षों से है। यह पर्याप्त पोषण, अच्छा स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य मूल्यवान उपलब्धियों जैसे अनेक आयामों के लिए एक परोक्ष पैमाना होता है।

➲ बिहार में 2013-17 में जन्मकालीन जीवन संभाव्यता पुरुषों के लिए 69.2 और महिलाओं के लिए 68.8 वर्ष रही। जन्मकालीन

https://telegram.me/study_with_pdf

जीवन संभाव्यता में 2006-10 की तुलना में पुरुषों के लिए 3.7 वर्षों की और महिलाओं के लिए 2.4 वर्षों की वृद्धि हुई है।

- यहां गौरतलब है कि इन 7 वर्षों में भारत और बिहार के बीच जन्मकालीन जीवन संभाव्यता के मामले में फासला 2006-10 में 0.3 वर्ष था, जो वर्ष 2013-17 में घटकर 0.1 वर्ष रह गया है। संपूर्ण भारत के स्तर पर वर्ष 2006-10 की अपेक्षा वर्ष 2013-17 में जन्मकालीन जीवन संभाव्यता पुरुषों के लिए 3.2 वर्ष और महिलाओं के लिए 2.7 वर्ष बढ़ी है।

❑ बिहार और भारत के चुनिंदा स्वास्थ्य विषयक सूचक

वर्ष	सूचक	अशोधित जन्म दर	शिशु मृत्यु दर	बाल मृत्यु दर	5 वर्ष से पूर्व मृत्यु की दर	नवजात मृत्यु दर	जन्मकालीन मृत्यु दर	कुल प्रजनन दर
					भारत			
2017	समस्त	20.2	33	9	37	23	23	2.2
	ग्रामीण	21.8	37	10	42	27	26	2.4
	शहरी	16.8	23	6	25	14	15	1.7
2016	समस्त	20.4	34	9.4	39	24	23	2.3
	ग्रामीण	22.1	38	10.7	43	27	26	2.5
	शहरी	17.0	23	6	25	14	14	1.8
2015	समस्त	20.8	37	10	43	25	23	2.3
	ग्रामीण	22.4	41	12	48	29	26	2.5
	शहरी	17.3	25	7	28	15	15	1.8
2014	समस्त	21.0	39	11	45	26	24	2.3
	ग्रामीण	22.7	43	12	51	30	27	2.5
	शहरी	17.4	26	6	28	15	15	1.8
2013	समस्त	21.4	40	11	49	28	26	2.3
	ग्रामीण	22.9	44	12	55	31	28	2.5
	शहरी	17.3	27	6	29	15	16	1.8
					बिहार			
2017	समस्त	26.4	35	9	41	28	24	3.2
	ग्रामीण	27.2	36	9	42	29	25	3.3
	शहरी	20.9	31	8	34	21	16	2.4
2016	समस्त	26.8	38	9.8	43	27	24	3.3
	ग्रामीण	27.7	39	10	44	28	25	3.4
	शहरी	21.1	29	8	34	17	13	2.5
2015	समस्त	26.3	42	12	48	28	24	3.2
	ग्रामीण	27.1	42	12	48	29	24	3.3
	शहरी	20.6	44	11	47	20	20	2.5
2014	समस्त	25.9	42	12	53	27	22	3.2
	ग्रामीण	26.9	43	13	54	29	24	3.3
	शहरी	19.9	37	9	43	13	9	2.4
2013	समस्त	27.6	42	11	54	28	23	3.4
	ग्रामीण	28.3	42	12	56	29	25	3.5
	शहरी	21.5	33	8	37	11	7	2.5

https://telegram.me/study_with_pdf

- बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम की स्थापना वर्ष 1980 में की गई थी।

❑ बौद्ध सर्किट

- राज्य में बौद्ध सर्किट के अंतर्गत बोधगया, राजगीर, पटना, नालंदा तथा वैशाली जिले आते हैं।

❑ बोधगया

- बोधगया में बोधि वृक्ष (पीपल) के नीचे महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
- बोधगया में निम्नलिखित दर्शनीय स्थल हैं- महाबोधि मंदिर, अनिमेष लोचन चैत्य, बोधि वृक्ष, चनक्रमना, रत्नागढ़, बुद्ध की 80 फीट ऊंची प्रतिमा, बुद्ध कुंड, सुजाता ग्राम, डुंगेश्वरी पहाड़ी (प्राग बोधि), चीन, म्यांमार, जापान, थाईलैंड, तिब्बत, भूटान के बौद्ध मठ एवं मंदिर।
- वर्तमान बोधि वृक्ष मूल बोधि वृक्ष के पांचवीं पीढ़ी का है।

❑ राजगीर

- राजगीर, नालंदा से 15 किमी. दूर है। यह पाटलिपुत्र से पूर्व मगध महाजनपद की राजधानी थी, जिसे राजगृह के नाम से जाना जाता था।
- महात्मा बुद्ध ने न केवल राजगृह में कई वर्ष व्यतीत किए, बल्कि गृद्धकूट पर्वत पर राजा बिंबिसार को उपदेश भी दिए।
- जीवकामेवन मठ बुद्ध का पसंदीदा निवास था। इसके अलावा बिंबिसार ने बुद्ध को वेणुवन विहार दान में दिया था।
- ऐसा कहा जाता है कि देवदत्त द्वारा बुद्ध के घायल होने पर जीवक चिकित्सक, जो कि राजगीर का ही था, द्वारा इलाज किया गया था।
- राजगीर में ही पहली बौद्ध संगीति हुई थी।
- राजगीर हिंदू एवं जैन धर्म मतावलंबियों के लिए भी प्रसिद्ध स्थल है।
- राजगीर में दर्शनीय स्थल - जरासंध का अखाड़ा, जीवकामेवन उद्यान, अजातशत्रु का किला (6ठीं सदी ई.पू.), शांति स्तूप, वेणु वन, सोनभंडार गुफाएं, बिंबिसार जेल, पिप्पल गुफा, स्वर्ण भंडार, गृद्धकूट, मनियार मठ, जैन मंदिर, गर्मकुंड, पाण्डु पोखर और घोराकटोरा झील।
- जीवक, बिंबिसार एवं अजातशत्रु के काल में चिकित्सक था।
- पिप्पल गुफा को जरासंध की बैठक के रूप में भी जाना जाता है। यह वैभव पहाड़ी पर है।

❑ नालंदा

- नालंदा की स्थापना 5वीं शताब्दी में की गई थी तथा यह शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र (5वीं से 12वीं सदी तक) रहा था।
- ह्वेनसांग यहां 7वीं शताब्दी में रहा था तथा उसने यहां की शिक्षा व्यवस्था का विस्तृत विवरण दिया था।
- यह प्रथम आवासीय अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय था, जहां 2000 शिक्षक एवं 10 हजार छात्र रह कर शिक्षा ग्रहण करते थे।
- वर्ष 1951 में यहां बौद्ध अध्ययन हेतु अंतरराष्ट्रीय केंद्र की स्थापना की गई थी।
- नालंदा में महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल- नालंदा विश्वविद्यालय के भग्नावशेष, नालंदा पुरातात्विक संग्रहालय, नव नालंदा महाविहार, ह्वेनसांग मेमोरियल हॉल, पावापुरी, बड़ी दरगाह, छोटी दरगाह।
- पावापुरी या अपापुरी, राजगीर से 38 किमी. दूर स्थित है। यह जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर की मृत्युस्थली है।

❑ वैशाली

- वर्तमान में वैशाली एक गांव है। रामायण काल में यहां के राजा विशाल का वर्णन मिलता है।
- छठीं सदी ई.पू. में यह वज्जि एवं लिच्छवि के समय, लोकतंत्रात्मक गणराज्य था।
- यहां अशोक का तीसरी सदी ई.पू. का एक स्तंभ लेख है, जिसके शीर्ष पर सिंह की आकृति है। यह कोल्हुआ में है।
- बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 100 वर्ष पश्चात यहां द्वितीय बौद्ध संगीति आयोजित की गई थी।
- वैशाली के निकट कुंडग्राम (कुंडलवन) नामक स्थान है, जहां भगवान महावीर का जन्म हुआ था।
- वैशाली में ही चौमुखी या चतुर्मुखी महादेव का मंदिर है। इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग में चार देवताओं - ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सूर्य के चेहरे हैं।
- केसरिया स्तूप भी वैशाली में ही है। प्राचीन काल में केसरिया को केसपुत्त कहा जाता था। यह एक गणराज्य था, जिस पर कलामो का शासन था।
- परवर्ती काल में इस पर कोशल राज्य ने अधिकार कर लिया था।
- महात्मा बुद्ध के शिक्षक आलारकलाम, केसपुत्त से ही थे।
- जातक कथाओं के अनुसार, महात्मा बुद्ध ने पूर्व जन्म में चक्रवर्ती शासक के रूप में यहां शासन किया था।
- प्रारंभ में केसरिया स्तूप मिट्टी का था। मौर्य, शुंग एवं कुषाण काल में यह अपने वर्तमान स्वरूप में आया। ह्वेनसांग अपने विवरण में किआ शी-पो-लो (केसरिया) के रूप में इसका उल्लेख करता है।

❑ पटना

- पटना का प्राचीन नाम कुसुमपुर, पुष्पपुर, पाटलिपुत्र और अजीमाबाद था।
- सर्वप्रथम अजातशत्रु ने छठीं सदी ई.पू. में गंगा नदी के तट पर पाटलिग्राम में एक छोटे किले का निर्माण कराया था।
- यह शहर छठीं सदी ई.पू. से लेकर 5वीं शताब्दी तक राजनीति का केंद्र बना रहा।
- आधुनिक पटना की स्थापना 16वीं शताब्दी में शेरशाह सूरी द्वारा की गई थी।
- **पटना में दर्शनीय स्थल** - गोलघर, बुद्ध स्मृति पार्क, शहीद स्मारक, पत्थर की मस्जिद, शेरशाह सूरी मस्जिद, खुदाबख्श

https://telegram.me/study_with_pdf

पुस्तकालय, सदाकत आश्रम, अगमकुआं, गांधी सेतु, तारामंडल, कुम्रहार आदि हैं।

- 1770 ई. के अकाल के दुष्प्रभावों को देखते हुए 1786 ई. में कैप्टन जॉन गार्सटिन द्वारा ब्रिटिश सेना के लिए एक विशाल अन्नागार बनाया गया था। यही अन्नागार गोलघर है। इसकी ऊंचाई 29 मी. है।
- महात्मा बुद्ध के 2554वीं जन्म वर्षगांठ के अवसर पर बिहार सरकार द्वारा पटना में बुद्ध स्मृति पार्क का विकास किया गया था।
- इस पार्क का उद्घाटन 14वें दलाईलामा द्वारा किया गया था।
- कुम्रहार पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल है, जहां प्राचीन मौर्य साम्राज्य के राजमहल के भग्नावशेष पाए गए हैं।
- पटना में ही इंदिरा गांधी विज्ञान भवन समूह में तारामंडल अवस्थित है। इसके अतिरिक्त अगमकुंआ का संबंध भी मौर्य काल से ही जोड़ा जाता है।
- सदाकत आश्रम बिहार विद्यापीठ (एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय) का मुख्यालय है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद सेवानिवृत्ति के बाद यहां निवास करते थे।
- खुदाबख्श ओरियंटल लाइब्रेरी की स्थापना वर्ष 1900 में की गई थी। यहां अरबी एवं फारसी पांडुलिपियों, राजपूत और मुगल चित्रकला के दुर्लभ संग्रह हैं।
- शेरशाह सूरी मस्जिद का निर्माण 1545 ई. में शेरशाह सूरी द्वारा करवाया गया था।
- पत्थर की मस्जिद का निर्माण जहांगीर के बेटे परवेज शाह द्वारा तब किया गया था जब वह बिहार का गवर्नर था। इसे सैफ खान की मस्जिद, चिम्मी घाट मस्जिद और संगी मस्जिद भी कहा जाता है।
- शहीद स्मारक अगस्त, 1942 के पटना सचिवालय गोलीकांड में शहीद हुए शहीदों की याद में बनाया गया था
- जैन परिपथ के अंतर्गत पावापुरी और राजगीर शामिल हैं।
- **रामायण परिपथ में शामिल स्थल इस प्रकार हैं**— तार (भोजपुर), अहिरौली (बक्सर), रामरेखा घाट (बक्सर), प्रेतशिला पहाड़ी (गया), गिद्धेश्वर (जमुई), काको (जहानाबाद), सिंहेश्वर स्थान (मधेपुरा), फुल्लाहर (मधुबनी), सीताकुंड (मुंगेर), रामचूड़ा (वैशाली), अहिल्या स्थान (दरभंगा), मां जानकी जन्म स्थल पुनौरा धाम (सीतामढ़ी), हलेश्वर स्थान (सीतामढ़ी), पंथ पाकड़ (सीतामढ़ी), जानकी/चानकी गढ़ (पश्चिम चंपारण), वाल्मीकि नगर (पश्चिम चंपारण)।
- **सूफी परिपथ में शामिल स्थल इस प्रकार हैं** — मनेर शरीफ (पटना, मनेर), खानकाह मुजीबिया (पटना), खानकाह इमादिया (पटना), दरगाह शरीफ मीठन घाट (पटना), हाजीपुर कर्बला (वैशाली), हसनपुरा (सिवान), बीवी कमाल साहिबा (काको, जहानाबाद), बड़ी दरगाह एवं छोटी दरगाह (बिहार शरीफ, नालंदा)।
- **सिख परिपथ में शामिल स्थल इस प्रकार हैं** — तख्त श्री पटना साहिब (पटना), गुरुद्वारा गुरु का बाग (पटना), गुरुद्वारा गई घाट (Gai Ghat) (पटना) एवं गुरुद्वारा हंडी साहिब (पटना)।
- **शिव शक्ति परिपथ में शामिल स्थल इस प्रकार हैं** — मुंडेश्वरी धाम (कैमूर), बाबा कोटेश्वरनाथ मंदिर (गया), अशोक धाम (लखीसराय), अजगईबनाथ मंदिर (भागलपुर), श्यामा माई मंदिर (दरभंगा), सिंहेश्वर स्थान (मधेपुरा), आमी मंदिर (सारण), थावे (गोपालगंज), महेंद्रनाथ मंदिर (छपरा), शीतला माता मंदिर (पटना), चंडी स्थान (सहरसा), मत्स्यगंध/रक्त काली मंदिर (सहरसा), महिषी तारा मंदिर (सहरसा)।
- **गांधी परिपथ में शामिल स्थल इस प्रकार हैं** — मोतिहारी (पूर्वी चंपारण), हजारीमल धर्मशाला, बेतिया (पश्चिम चंपारण), भीथरवा आश्रम (पश्चिम चंपारण), बृंदबा (पश्चिम चंपारण), श्री रामपुर (पश्चिम चंपारण), कोयलडीह (पश्चिम चंपारण), अमोलवा (पश्चिम चंपारण), मुरली भरहवा (पश्चिम चंपारण), हर्दिया कोठी (पश्चिम चंपारण), सदाकत आश्रम (पटना), गांधी संग्रहालय (पटना)।
- तख्त श्री पटना साहिब जिसे हरमंदिर साहिब के नाम से भी जाना जाता है, सिक्खों के लिए महत्वपूर्ण स्थल है। सिक्खों के दसवें गुरु श्री गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म **22 दिसंबर, 1666** को यहीं हुआ था। इस स्थान पर **गुरुद्वारा का निर्माण महाराजा रणजीत सिंह** द्वारा किया गया था। गुरुगोविंद सिंह के अतिरिक्त गुरु नानक एवं गुरु तेग बहादुर भी पटना आए थे।
- मुंडेश्वरी देवी मंदिर कैमूर के मुंडेश्वरी पर्वत पर स्थित है। यह भगवान शिव एवं देवी शक्ति को समर्पित भारत के प्राचीनतम मंदिरों में एक है। यह मंदिर भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के अनुसार 108 ई. एवं बिहार धार्मिक न्यासी बोर्ड के अनुसार 105 ई. का है। यह भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के अंतर्गत वर्ष 1915 से ही संरक्षित है।
- बाबा कोटेश्वरनाथ मंदिर मोरहार एवं दरघा नदियों के संगम पर गया जिले में है। यह भगवान शिव का मंदिर है। ऐसी मान्यता है कि यहां सहस्र शिवलिंग की स्थापना द्वापर युग के अंत में हुई थी। इन सहस्र शिवलिंगों की स्थापना सोनितपुर के राजा बाणासुर की पुत्री **उषा** ने किया था। बाद में **उषा** का विवाह कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध से हुआ था।

❑ गोलघर, पटना

- गोलघर ब्रिटिश सरकार के द्वारा बनाई गई सबसे उत्कृष्ट रचनाओं में से एक है। यह पटना में गंगा किनारे बांकीपुर क्षेत्र में स्थित है। गोलघर का निर्माण ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा नियुक्त इंजीनियर कैप्टन जॉन गार्सटीन के द्वारा वर्ष 1786 में किया गया था।
- इस भव्य वृत्ताकार गोलघर का निर्माण भारी मात्रा में अनाज को एक जगह जमा करने के लिए किया गया था।
- यह ब्रिटिश सरकार द्वारा निर्मित महत्वपूर्ण इमारतों में से एक है। यह इमारत ग्रीको-रोमन पद्धति में निर्मित न होकर ऐतिहासिक भारतीय पद्धति के स्तूप कला से प्रभावित है। 2 फीट ऊंची प्लिंथ

https://telegram.me/study_with_pdf

पर निर्मित यह विशाल गुंबद 29 फीट ऊंचा है। इसकी दीवारें, तथा चौड़ी ईंटें काफी आकर्षक हैं। गोलघर के अंदर से बेहतरीन ईको ईफेक्ट तैयार होती है। इस गोलघर में ऊपर की ओर जाने के लिए दो बढ़ती सीढ़ियां हैं, केंद्र में एक छोटा सा छिद्र है। गुंबद में नीचे स्थित चार दरवाजे सभी चार प्रमुख दिशाओं में स्थित हैं, जो मूल रूप से भीतर की ओर खुलते हैं। अंग्रेजी और पर्सियन भाषा में लिखित दो शिलालेख इसके निर्माण का विवरण देते हैं।

❑ अगमकुआं, पटना

- अगमकुआं पटना में स्थित एक अनोखा स्मारक है, जो अपने ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक निशानी के लिए मशहूर है। जिसमें प्रथम, अगमकुआं में स्थित विशाल कुआं है, जो सम्राट अशोक के काल से संबंधित है। एवं द्वितीय, देवी शीतला माता का मशहूर मंदिर है, जिन्हें चेचक जैसी जानलेवा बीमारी को ठीक करने की देवी कहा जाता है। इस संदर्भ में चमत्कार की अनेक लोक कहानियां प्रचलित हैं।
- यह पुरातात्विक स्थल गुलजारबाग रेलवे स्टेशन के दक्षिण-पश्चिम दिशा में कुछ दूरी पर स्थित है। अगमकुआं एक विशाल वृत्ताकार कुआं है, जो 20' 2" व्यास में फैला हुआ है। अनुमानित है कि यह कुआं 105 मीटर गहरा है।
- अगमकुआं के प्रांगण में स्थित मंदिर के भीतर माता शीतला की मूर्ति स्थापित है एवं सप्तमातृका (माता के सात रूप) का पिंड स्थापित हैं, जो चेचक के इलाज में हुए चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध एवं पूजनीय है। वर्ष 1879-80 में कनिंघम ने अपनी यात्रा के दौरान यह बताया कि यहां पर प्राचीन एवं मध्ययुगीन मूर्तियां थीं, जो मौर्य काल की यक्ष कला से संबंध रखती थीं, परंतु अब इस कला का कोई भी अवशेष यहां पर मौजूद नहीं है।
- वर्ष 1890 में पाटलिपुत्र के खंडहरों के अन्वेषण के दौरान वाडेल ने सम्राट अशोक द्वारा बनवाए गए विशाल कुएं को पहचाना। 5वीं एवं 7वीं शताब्दी के चीनी यात्रियों द्वारा किए गए उल्लेख में यह बताया जाता है कि इस कुएं का निर्माण लोगों को यातना देने हेतु किया गया था।
- यह भी कथा प्रसिद्ध है कि सम्राट अशोक ने सत्ता के लालच में राजा बनने हेतु अपने कुल 99 भाइयों को मारकर इस कुएं में फेंक दिया था। यह कुआं जैन धर्म से भी जुड़ा हुआ है। माना जाता है कि क्रूर राजा चंद ने साधू सुदर्शन को इस कुएं में फेंक दिया था, जिन्हें कमल के ऊपर ठहरे पानी पर पाया गया था।

❑ बेगू हज्जाम की मस्जिद, पटना

- बेगू हज्जाम की मस्जिद मुगल शासनकाल के पूर्व निर्मित पटना की सबसे पुरानी मस्जिद है। दिलचस्प बात यह है कि इस मस्जिद का नाम इसके बिल्डर के नाम पर न हो कर इसके इनोवेटर के नाम पर नामांकित है। यह मस्जिद पटना साहिब के खजकलां घाट रोड पर स्थित है। इस मस्जिद का निर्माण गौर के सुल्तान अलाउद्दीन शाह के शासनकाल में खान मुअज्जम नाजिर खान द्वारा किया गया था। बाद में बेगू हज्जाम के द्वारा इसे नवनिर्मित किया गया। नक्काशीनुमा द्वार एवं चमचमाती टाइल्सें इस मस्जिद की मुख्य विशेषताएं हैं। मस्जिद में स्थापित एक शिलालेख पर उसके निर्माण का पूर्ण विवरण लिखित है।

❑ कमलदह जैन मंदिर, पटना

- यह पटना के गुलजारबाग रेलवे स्टेशन स्थित 18वीं शताब्दी में निर्मित मंदिर है। यह मंदिर अगमकुआं/शीतला देवी मंदिर से थोड़ी दूर पूर्व की ओर निर्मित है। यह स्थल मशहूर जैन शिक्षक स्थूलभद्र के जन्म से जुड़ा है। मंदिर का निर्माण एक ऊंचे टीले पर 1729 ई. में किया गया था। यहां पर एक अभिलेख है, जिसके द्वारा इसके निर्माण की सूचना प्राप्त होती है। यह अभिलेख पटना को पाटलिपुत्र के रूप में भी पहचान कराता है।

❑ दुरुखी देवी मंदिर, पटना

- यह एक स्तूप की नक्काशीदार रेलिंग का अवशेष है। इस पत्थर के टुकड़े के दोनों तरफ अर्धनग्न अवस्था की महिला प्रदर्शित है। जिसकी वजह से इन टुकड़ों को दुरूखी या दुरूखिया देवी के नाम से जाना जाता है। वाडेल के द्वारा सन 1890 में कुम्रहार स्थल के उत्खनन के दौरान इस दोरूखी को खोजा गया था, जो बाद में मौर्य वंश द्वारा बनाए, अद्वितीय पिलर्ड हॉल की वजह से प्रसिद्ध हो गया। कुछ समय बाद इस पत्थर के टुकड़े को इसके वर्तमान स्थल नया टोला (कंकड़बाग) में एक मंदिर जैसे स्थल पर रखा गया, जिसकी अब पूजा की जाती है।
- यह द्वितीय से प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान की शुंग कला का एक अनूठा नमूना है। यह स्त्री की आकृति एक हाथ से पेड़ की शाखाएं काटते एवं उसे चुनते शालभंजिका (शाखाओं को काटने वाली) मालूम पड़ती है। इन आकृतियों में युवा महिलाओं के प्रजनन से जुड़े अनुष्ठान को दर्शाया गया है, जो भारत के इस हिस्से की प्रारंभिक ऐतिहासिक अवधि के दौरान लोकप्रिय था। इस चित्र की प्रतिकृति पटना म्यूजियम की मूर्ति चित्रशाला में प्रदर्शित की गई है।

❑ छोटी पटनदेवी, पटना

- यह मंदिर पटना साहिब के चौक क्षेत्र में स्थित है एवं एक समय में इसे पटना की मुख्य प्रथा देवी के रूप में माना जाता था। कुछ वर्षों बाद इसे बड़ी पटनदेवी के बाद छोटी पटनदेवी के रूप में जाना जाने लगा। बुकानन द्वारा कथित उल्लेख से यह मालूम होता है कि 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में छोटी पटनदेवी को ही मुख्य देवी के रूप में पूजा जाता था।

https://telegram.me/study_with_pdf

➲ छोटी पटनदेवी के वर्तमान मंदिर में कोई पुरातात्विक अवशेष नहीं मिलते हैं। अगर बुकानन की मानें तो यह मंदिर मान सिंह, जो मुगल शासक अकबर के जनरल थे, के द्वारा स्थापित किया गया है।

➲ इस मंदिर में कई ब्राह्मण देवताओं की छवियां जैसे गणेश, विष्णु, सूर्य इत्यादि शामिल हैं। मंदिर के पीछे इसके प्रांगण में दरवाजों के जंबो, लिंटल के खुले टुकड़े, भगवान सूर्य की एक प्रभावशाली टूटी मूर्ति इत्यादि मौजूद हैं। यह सब यह दर्शाते हैं कि इस मंदिर का निर्माण 9 वीं-11वीं शताब्दी के बीच किया गया है।

❑ अलावल खान का मकबरा

➲ अलावल खान का मकबरा रोहतास जिले के मुख्यालय सासाराम शहर के दक्षिण में स्थित है। यह शहर बिहार के सबसे महत्वपूर्ण मध्ययुगीन शहरों में से एक है। अलावल खान पठान शासक शेरशाह के मकबरे का निर्माण-प्रभारी था, परंतु उसने अपने मकबरे के लिए बेहतर सामग्री की योजना बनाई थी। जिसके लिए शेरशाह द्वारा अलावल खान को अपमानित होना पड़ा।

➲ अलावल खान का मकबरा केवल पूर्व, दक्षिण एवं उत्तर में तीन प्रवेश द्वारों के साथ चिनाई के उच्च पत्थर की दीवारों से घिरा हुआ है। परंतु अब केवल पूर्वी प्रवेश द्वार द्वारा कार्यात्मक है एवं अन्य दो द्वार बंद हो चुके हैं। मकबरे के पूर्वी एवं पश्चिमी दीवारों पर कपोलास चढ़ाया गया है एवं प्रधान द्वार पर कुछ बेहतरीन नक्काशी के नमूने प्रदर्शित हैं। प्रांगण में अलावल खान के मकबरे के साथ उनके दो प्रियजनों का मकबरा भी मौजूद है।

❑ कंदहा सूर्य मंदिर, सहरसा

➲ कंदहा, सहरसा के पश्चिम में 8 मील दूर स्थित एक छोटा-सा गांव है। एक मध्यम ऊंचाई के टीले पर यह मशहूर सूर्य मंदिर स्थित है। मिथिला के मशहूर शासक कर्णता वंश के नरसिंह देव के शासनकाल के तहत वामशधारा नाम के एक भक्त द्वारा सन 1435 ई. में इसे बनाया गया था। मंदिर के द्वार पर स्थापित एक संस्कृत शिलालेख में यह तथ्य दर्ज है। मंदिर में स्थापित छवि काफी बड़ी किंतु जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। परंतु दरवाजा-फर्श, फ्रेम इत्यादि विशेष रूप से संरक्षित हैं। दैवीय तस्वीर के संग फूलों से सुशोभित सजावट के साथ यह फ्रेम, मिथिला के कर्णता वंश की कलाकृतियों का अनूठा नमूना दर्शाती है।

❑ कटरागढ़, मुजफ्फरपुर

➲ बिहार में प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के दौरान अस्तित्व में आए मुजफ्फरपुर में स्थित कटरागढ़ मशहूर एवं बेहतरीन किलाबंद शहरों में से एक है। 70 बीघा में फैला कटरागढ़, जिला मुख्यालय मुजफ्फरपुर के 45 किमी. उत्तर-पूर्व दिशा में स्थित है। इसके पश्चिम से लखनदेई नदी बहती है, जो इसके किनारे की कृषि आवश्यकताओं और शहर के अंतर्देशीय जल परिवहन को एक मार्ग प्रदान करती थी। एक अद्वितीय बात यह है कि यह शहर एक राजा जिनका नाम चंद था, के द्वारा बसाया गया जिनकी पहचान किसी भी ऐतिहासिक व्यक्तित्व के तौर पर नहीं की जा सकती है।

➲ इस शहर को शुंग काल (द्वितीय-प्रथम शताब्दी ई.पू.) के दौरान किलाबंद किया गया था। किले की दीवारों का निर्माण एक लंबी प्रक्रिया थी, जिसे तीन चरणों में संपूर्ण किया गया। प्रथम चरण में, शहर के चारों ओर ईंटों की दीवार उठाई गई थी। द्वितीय चरण में, एक विशाल स्तर पर भू-कार्य किया गया। तीसरे चरण का मुख्य आकर्षण चरण-II के दौरान ईंटों का सुदृढ़ीकरण था। यह ईंटों के एक ढलान-सा था। यह स्थल चार से अधिक सांस्कृतिक कालों का खुलासा करता है। जिनमें से प्रथम काल मौर्य काल (चतुर्थ-द्वितीय शताब्दी ई.पू.) था, द्वितीय काल शुंग काल (द्वितीय-प्रथम शताब्दी ई.पू.) था, तृतीय काल शुरुआती कुषाण काल (प्रथम-द्वितीय शताब्दी) था एवं चतुर्थ काल काफी अंतर के उपरांत पाल काल अवशेषों (9वीं-10वीं शताब्दी) का प्रतिनिधित्व करता है।

❑ नेपाली मंदिर

➲ हाजीपुर के लगभग 6.5 किमी. पश्चिम में गंगा एवं गंडक नदियों के संगम पर यह अद्वितीय नेपाली मंदिर स्थित है। नेपाल के एक सेना कमांडर द्वारा मध्यवर्ती काल (18वीं शताब्दी) में निर्मित यह मंदिर गंगा के मैदानी इलाकों में हिमालय साम्राज्य के शिगो-शैली की वास्तुकला को प्रदर्शित करता एक महान उदाहरण है। यह मंदिर ज्यादातर लकड़ी का बना है। इस मंदिर की विशिष्ट विशेषता इस मंदिर में की गई बेहतरीन लकड़ी की नक्काशियां एवं कलाकृतियां हैं। हिमालय साम्राज्य की बेहतरीन वास्तुकला के साथ यह नेपाली मंदिर बिहार में अद्वितीय पहचान रखता है।

❑ खेरी पुरातत्व स्थल, शाहकुंड

➲ खेरी पर्वत पर स्थित इस पुरातत्व स्थल से सातवीं शताब्दी की पुरानी इमारतों एवं मंदिरों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यहां पर एक शाहकुंड है, जिसका निर्माण पूर्व-मध्यकाल में किया गया था। यह कुंड 400 मीटर लंबा एवं 125 मीटर चौड़ा है। हाल ही में यहां से काले पत्थर की बनी नरसिंह, लक्ष्मी, विष्णु, गणेश, दुर्गा आदि के अतिरिक्त बुद्ध एवं तारा की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। शाहकुंड अनेक शिवलिंगों के कारण भी प्रसिद्ध है, जिनमें से कुछ इसके बाहरी अथवा आंतरिक क्षेत्र में स्थापित हैं। इनमें से एक सहस्त्रलिंग अथवा एकमुखी शिवलिंग भी है।

https://telegram.me/study_with_pdf

महमूद शाह का मकबरा, कहलगांव, भागलपुर

- बिहार राज्य के भागलपुर जिले के मुख्यालय से 30 किमी. पूर्व की ओर कहलगांव अथवा कोलगंग स्थित है। महमूद शाह बंगाल का अंतिम स्वतंत्र शासक था, जिसकी मृत्यु वर्ष 1539 में हुई। शेरशाह ने कहलगांव पर हमला किया और महमूद शाह को राज्य से बर्खास्त कर दिया तथा अफगानों द्वारा महमूद शाह के दो पुत्रों की हत्या कर दी गई। महमूद शाह ने बदला लेने के लिए एवं शेरशाह को हराने के लिए मुगल शासक हुमायूं से हाथ मिला लिया, परंतु अपने पुत्रों की मौत का सदमा वह बर्दाश्त नहीं कर पाया और सन 1539 में बीमारी की वजह से महमूद शाह की मौत हो गई। बाद में कहलगांव में ही उसका मकबरा बनाया गया।

जलालगढ़ किला, पूर्णिया

- जलालगढ़ का किला पूर्णिया जिला से 20 किमी. उत्तर में स्थित है, जो कभी कोसी नदी के पुराने अपवाह मार्ग पर एक द्वीप के रूप में चर्चित था। यह किला अब खंडहर हो चुका है। एक मान्यता के अनुसार, खागरा परिवार के सईद मुहम्मद जलालुद्दीन ने इस किले का निर्माण करवाया था, जिसके उपरांत जहांगीर ने उसे 'राजा' की उपाधि प्रदान की। वहीं एक दूसरी मान्यता के अनुसार इस किले का निर्माण पूर्णिया के नवाब शैफ खान ने वर्ष 1722 में करवाया था। यह किला ऊंची दीवारों से घिरी एक चतुर्भुज संरचना है, जिसे नेपाल के खिलाफ आक्रमण से सीमा की रक्षा के लिए एक सीमावर्ती स्थल के रूप में स्थापित किया गया था।

आरा हाउस, आरा

- बिहार राज्य के भोजपुर जिले के मुख्यालय आरा से महाराजा कॉलेज के प्रांगण में आरा हाउस स्थापित है। सन 1857 के पहले पूर्वी रेलवे के अभियंता विकर्स बॉयल द्वारा यह दो मंजिला संरचना तैयार की गई। इसे बिलियार्ड कक्ष के रूप में प्रयोग किया जाता था, जबकि आवासीय कक्ष थोड़े दूर स्थित थे। आरा हाउस 51 वर्ग फीट के कुल क्षेत्रफल में विस्तृत है, जिसमें बिलियार्ड कक्ष के साथ एक छोटा-सा कक्ष, एक तरफ संलग्न बाथरूम एवं एक बरामदा भी शामिल है। आरा हाउस सन 1857 में प्रसिद्ध हुआ, जब विद्रोह के समय कई ब्रिटिश अधिकारियों को यहां शरण लेनी पड़ी और उनका बचाव ब्रिटिश सैनिकों द्वारा किया गया।

चौसागढ़, बक्सर

- चौसा या चौसागढ़ जिला मुख्यालय, बक्सर के 11 किमी. पश्चिम की ओर स्थित है। चौसा अपने ऐतिहासिक उपलब्धियों की वजह से चर्चित है। 1539 ई. में इसी स्थल पर शेरशाह ने मुगल शासक हुमायूं को परास्त किया था। चौसागढ़ एवं उसके आस-पास के क्षेत्रों में खुदाई के दौरान पाए गए अवशेष प्राचीन काल में चौसागढ़ की ऐतिहासिक महत्ता को दर्शाते हैं। खुदाई के दौरान यहां से ताम्र पाषाण युग से लेकर मुगल काल तक के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यहां से शुंग काल की 18 जैन कांस्य प्रतिमाओं से लेकर गुप्त काल के असाधारण एवं अद्वितीय अवशेष भी प्राप्त हुए हैं, जो वर्तमान में पटना संग्रहालय एवं बक्सर के सीताराम उपाध्याय संग्रहालय में संरक्षित हैं। चौसा, गंगा नदी एवं कर्मनाशा नदी के संगम पर स्थित है, जो पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश को बिहार से अलग करता है। प्रारंभिक समय से ही चौसा, का एक महान स्मरणिक महत्व रहा है। प्राचीन काल में चौसा दो शक्तिशाली साम्राज्य काशी एवं मगध की सीमा पर स्थित था, जिसकी वजह से यहां महाजनपद का विशेष प्रभाव रहा है।

दाउद खान किला, दाउदनगर, औरंगाबाद

- यह किला सोन नदी के पूर्वी तट पर स्थित है एवं इसे 17 वीं शताब्दी में औरंगजेब के अधीन बिहार के राज्यपाल दाउद खान द्वारा स्थापित किया गया था। दाउद खान ने चेरों को हराकर पलामू पर विजय प्राप्त की एवं विजय यात्रा से लौटने के दौरान उसने अस्थायी तौर पर यहां डेरा डाला एवं अपने नाम पर बाद में इस शहर की स्थापना की। कालांतर में बुकानन के द्वारा इसे कपड़े एवं अफीम कारखानों के साथ एक समृद्ध शहर के रूप में देखा गया। दाउद खान द्वारा निर्मित सराय ऊंचे दीवारों वाली एक किलाबंद संरचना थी, जिसमें दो बड़े द्वार भी थे। रक्षा दीवारों के चारों ओर एक खाई का निर्माण किया गया एवं दूसरे राज्य के शासकों की ईर्ष्या से बचने हेतु इस किलाबंद संरचना को सराय कहा गया है।

रामशिला पहाड़, गया

- गया के दक्षिण-पूर्व में स्थित रामशिला पहाड़ गया के सबसे प्राचीन एवं पवित्र पहाड़ों में से एक है। इस पहाड़ के चारों ओर प्राचीन काल की पत्थर की मूर्तियां एवं अवशेष उपलब्ध हैं, जो प्राचीन काल में यहां पर मंदिर होने का प्रमाण देते हैं। इस पहाड़ के शीर्ष पर एक मंदिर स्थापित है, जिसे रामेश्वर या पातालेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर का वास्तविक निर्माण सन 1014 में कराया गया था और फिर बदलते वक्त के साथ इस मंदिर में मरम्मत का कार्य कराया गया। वर्ष 1811 में कलकत्ता के श्री कृष्ण बासु ने मंदिर के सामने एक मंडप का निर्माण कराया था, जिसमें हिंदुओं द्वारा अपने पूर्वजों का पिंड दान किया जाता है। इस पहाड़ का नाम भगवान राम के नाम पर रखा गया है इसलिए इस पहाड़ के शीर्ष पर मौजूद मंदिर में राम, सीता एवं हनुमान की मूर्तियां स्थापित हैं। इस पहाड़ के संबंध में यह भी मान्यता है कि भगवान श्री राम ने अपने पूर्वजों का पिंड दान यहीं पर किया था।

https://telegram.me/study_with_pdf

❑ **प्रेतशिला पहाड़, गया**

➲ गया के उत्तर-पश्चिम में स्थित यह पहाड़ हिंदुओं का एक पवित्र तीर्थ स्थल है, यहां पर बड़ी संख्या में पितृपक्ष के समय पूर्वजों का पिंड दान किया जाता है। इस पहाड़ के शिखर पर भगवान यम या प्रेतराज का मंदिर स्थापित है। इस मंदिर का निर्माण इंदौर की रानी अहिल्या बाई द्वारा कराया गया था। सन 1744 में लिखित एक शिलालेख से यह पता चलता है कि कलकत्ता के श्री मनमोहन दत्त द्वारा दिए गए धन से मंदिर की सीढ़ियां निर्मित हुई हैं।

➲ यहां से प्राचीन काल की मूर्तियां एवं बौद्ध प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। मान्यताओं के अनुसार इस पर्वत के पदीय क्षेत्र में स्थित राम कुंड नामक सरोवर में भगवान श्री राम ने पूर्वजों के पिंड दान पूर्व स्नान किया था।

❑ **विष्णुपद मंदिर, गया**

➲ विष्णुपद मंदिर को भारत के सभी वैष्णव मंदिरों में सबसे पवित्र माना जाता है। जिस स्थान पर यह निर्मित है वह भगवान विष्णु की प्रसिद्ध पौराणिक कहानियों से जुड़ा है। माना जाता है कि यहां पर भगवान विष्णु ने दैत्य गयासुर का संहार किया था और वहां के चट्टान पर उनके पदचिह्न आज भी मौजूद हैं, जिसे मंदिर में मुख्य रूप से पूजा जाता है। इस मंदिर का निर्माण इंदौर की रानी अहिल्या बाई होल्कर द्वारा 18वीं शताब्दी के अंत में फल्गू नदी के किनारे करवाया गया था।

❑ **ब्रह्मयोनि पहाड़, गया**

➲ गया के दक्षिण में स्थित यह ब्रह्मयोनि पहाड़ गया का सबसे ऊंचा पहाड़ है। इसका नाम इस पहाड़ के शीर्ष पर एक प्राकृतिक विखंडन के नाम पर रखा गया, जिसे माना जाता है कि वह महिला शक्ति या ब्रह्मयोनि का प्रतिनिधित्व करती है। पहाड़ी पर एक छोटे मंदिर में पंचमुखी महिला की छवि स्थापित है। इसे ब्रह्मा का एक स्त्री रूप, जिसे ब्रह्मयोनि के नाम से जाना जाता है, की आराधना की जाती है। इस मंदिर का निर्माण मराठा बालाजी पंडित के द्वारा कराया गया था। शिलालेख पर लिखित विवरणों से यह ज्ञात होता है कि पहाड़ के फर्श से लेकर अर्श तक की सीढ़ियां 1843 ई. में ग्वालियर के सिंधिया जयति राव के शासन काल में राव बाबू साहब के द्वारा बनवाई गई थीं। ब्रह्म-योनि पहाड़ हिंदुओं का एक महत्वपूर्ण पवित्र तीर्थ स्थल है। पितृपक्ष के समय यहां पर बड़ी संख्या में पिंड दान की विधि संपन्न होती है।

❑ **हजारीमल धर्मशाला, बेतिया**

➲ वर्ष 1892 में निर्मित हजारीमल धर्मशाला बेतिया में स्थित है, जहां से महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद प्रथम सत्याग्रह आंदोलन की शुरुआत की थी। एक बड़ी संख्या में स्वतंत्रता सेनानियों जैसे आचार्य जे.बी. कृपलानी, बाबू कुंवर सिंह, राजेंद्र प्रसाद, सरोजिनी नायडू, ब्रज किशोर प्रसाद आदि ने यहां से स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था।

❑ **मीराबिघा, जहानाबाद**

➲ मीराबिघा गांव (जिला जहानाबाद) तेहता रेलवे स्टेशन के 4 किमी. दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इस पुरातात्विक स्थल को मंदिरों के समूह के रूप में चिह्नित किया गया है। यहां पर दर्जनों की संख्या में शिव मंदिर स्थापित हैं। यहां के मंदिर ज्यादातर ईंट एवं पत्थरों के मिश्रण से निर्मित हैं। कुछ मंदिर 9वीं-10वीं शताब्दी के पाल काल से भी संबंध रखते हैं।

❑ **जगदीशपुर किला, आरा**

➲ जगदीशपुर किला भोजपुर जिला के जिला मुख्यालय आरा से 35 किमी. दूर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। जगदीशपुर अपने इतिहास के कारण प्रसिद्ध है। 1857 की स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान मिट्टी के पुत्र ''बाबू कुंवर सिंह'' बिहार के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी थे। कई पीढ़ियों तक जगदीशपुर उज्जैनी राजपूतों के नियंत्रण में था। बाबू कुंवर सिंह उस परिवार से संपर्क रखते हैं, जिसकी वजह से आजादी का जज्बा, जुनून उनके रग-रग में बसा था। जगदीशपुर किला जहां बाबू कुंवर सिंह ने निवास किया था, स्वतंत्रता की पहली लड़ाई का केंद्र था, जिसकी वजह से इस किले का एक ऐतिहासिक महत्व है।

➲ वर्तमान में मुख्य दो मंजिला विशाल भवन के अलावा इसके दोनों तरफ दो बड़े टैंक हैं और भवन के सामने कचहरी है। मुख्य भवन के सामने घोड़े पर विराजमान बाबू कुंवर सिंह की विशाल मूर्ति स्थापित है।

❑ **जामी मस्जिद, हाजीपुर**

➲ हाजीपुर बिहार राज्य की राजधानी पटना के उत्तर में लगभग 11 मील दूर, गंडक नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित है। हाजीपुर का नामकरण 1345 से 1358 ई. के बीच के बंगाल के शासक हाजी इल्यास शाह के नाम पर किया गया था। इनके किले के भीतर एक मस्जिद का निर्माण किया गया, जिसे जामी मस्जिद के नाम से जाना जाता है। यह मस्जिद 84.5 फीट लंबी एवं 33.5 फीट चौड़ी है। यह मस्जिद तीन गुंबदों से घिरी है, जिसमें से बीच वाला गुंबद अन्य से बड़ा है। इसके द्वार के पत्थरों पर रचित शिलालेख सन 1587 में इसके निर्माण का विवरण देते हैं। हाजीपुर की यह जामी मस्जिद मुगल काल से संबंधित सबसे उल्लेखनीय स्मारकों में से एक है।

❑ **मसही, कैमूर**

➲ कैमूर जिले के प्रखंड मुख्यालय भगवानपुर से 3 किमी. दूर मसही स्थापित है। मसही पुरातात्विक महत्व से परिपूर्ण एक गांव है जो सुवर्ण नदी के किनारे एक टीले पर बसा है, जिसे वहां के स्थानीय लोग गढ़ भी कहते हैं। मसही गांव में बसा गढ़ 5 एकड़ के क्षेत्र में फैले हुए प्राचीन मंदिर परिसर का प्रतिनिधित्व करता है। इस पुरातात्विक स्थल से भगवान बुद्ध की बैठी एवं खड़ी मुद्रा में पत्थर की प्रतिमा, इसके अलावा खंभे, प्लास्टर्स, बीम, लिंटेल इत्यादि बड़े पैमाने पर प्राप्त हुए हैं, जो यह दर्शाते हैं कि

https://telegram.me/study_with_pdf

प्रारंभिक मध्यकालीन काल या उससे भी पहले से इस स्थल पर बड़े पैमाने पर मंदिर स्थापित थे। मसही गुप्त काल के मुंडेश्वरी मंदिर से 2 किमी. दूर स्थापित है। इसलिए यह संभव है कि मसही में प्राचीन एवं प्रारंभिक मध्ययुगीन काल की मूर्तिकला के बीच संबंध स्थापित हो।

❑ मुंगेर किला, मुंगेर

➲ मुंगेर के सबसे महत्वपूर्ण स्मारकों में से एक यह मुंगेर किला गंगा नदी के किनारे स्थित एक चट्टानी प्रस्तर पर निर्मित है। यह किला लगभग 222 एकड़ क्षेत्र में स्थित है एवं इसका प्रांगण 2.5 मील की दूरी तक फैला हुआ है। इस किला के वास्तविक निर्माणकर्ता की खोज अभी भी चल रही है। इतिहासकारों द्वारा यह बताया जाता है कि इस किले का निर्माण भारत के मुस्लिम शासकों द्वारा कराया गया था। राजा कर्ण से संबंधित एक पहाड़ी या प्राकृतिक चट्टान है - कर्णचौरा या करणचौरा। बुकानन ने उल्लेख किया है कि राजा कर्ण ने इस पहाड़ी पर एक घर बनाया था।

❑ चिरांद, सारण

➲ चिरांद बिहार के सबसे प्रतिष्ठित पुरातात्विक स्थलों में से एक है। यह सारण के जिला-मुख्यालय छपरा के 10 किमी. दक्षिण-पूर्व दिशा में स्थित है। गंगा नदी एवं घाघरा नदी के संगम के उत्तरी छोर पर इसका उच्च विस्तृत स्तूप फैला हुआ है। गंगा के मैदान पर खोजा गया यह पहला नवपाषाण स्थल है। यह स्थल नवपाषाण काल से पाल अवधि (8वीं-12वीं शताब्दी) तक के लंबे और निरंतर अवशेषों का भंडार है। वर्ष 1509 में बंगाल के सुल्तान अबुल मुजफ्फरपुर शाह के द्वारा निर्मित मस्जिद इस स्तूप के ताज का काम करती है। इस स्थल पर प्रथम निवास नवपाषाण संस्कृति द्वारा दर्शाया जाता है, जो कि 3 मीटर मोटी है। एक विकसित कृषक समुदाय इस अवधि के दौरान यहां बस गए। खुदाई के दौरान यहां से कृषि के उपकरण, स्टॉक प्रजनन, कृषि उत्पादन, टूल किट इत्यादि के अवशेष प्राप्त हुए हैं। नवपाषाण काल के दौरान यहां पर गेहूं, चावल, मूंग, मसूर, मटर जैसे विविध अनाजों की खेती की जाती थी। खुदाई में निकले जानवर, मछली, पक्षियों के अवशेष एवं शिकार के लिए प्रयोग किए जाने वाले उपकरण, तीर-कमान इत्यादि खेती के साथ साथ यहां शिकार की प्रथा को भी प्रदर्शित करते हैं। यहां पर पशु-पालन के भी अवशेष मिले हैं। यहां के लोग एक सामान्य जीवन व्यतीत करते थे। मिट्टी के बने गोलाकार झोपड़ी में ये निवास करते थे।

❑ निशान सिंह शहीद स्मारक स्थल एवं कब्रिस्तान, सासाराम

➲ 1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में शहीद हुए निशान सिंह की स्मृति में सासाराम में इस स्मारक का निर्माण किया गया। बाबू वीर कुंवर सिंह के द्वारा अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ चलाए जा रहे आंदोलन में इन्होंने हाथ बंटाया था।

❑ अपसढ़ गढ़ (नवादा)

➲ अपसढ़ गढ़ पुरास्थल नवादा जिला के वारसलीगंज में स्थित है। इस टीले के ऊपरी समतल भूमि पर दो पाल कालीन प्रतिमाएं हैं। एक प्रतिमा भूमि के नीचे दबी हुई है एवं एक अन्य प्रतिमा टीले के पूर्व में पत्थर के चबूतरे पर रखी हुई है। यह प्रतिमा विष्णु की प्रतीत होती है। इस टीले में छिपे भग्नावशेषों का काल परवर्ती गुप्त काल से लेकर पाल काल के बीच है। इसके पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए वर्ष 2011 में राज्य सरकार द्वारा इस पुरास्थल को सुरक्षित स्मारक एवं स्थल घोषित किया गया है।

❑ पार्वती पहाड़ी (नवादा)

➲ पार्वती पहाड़ी पर स्थित यह पुरास्थल नवादा जिले के काशीचक्र प्रखंड में स्थित है। यह पुरास्थल जिला मुख्यालय नवादा से उत्तर-पूर्व दिशा में लगभग 39.5 किमी. की दूरी पर अवस्थित है। इस पहाड़ी की पहचान 'वेदिया पर्वत' से की जाती है, जिसका उल्लेख बौद्ध साहित्य 'सुमंगल विलासिनी' में किया गया है। इस पहाड़ी पर तीन स्तूप होने के साक्ष्य प्राप्त होते हैं, जिनमें से एक मुख्य स्तूप है, जो पहाड़ी के पश्चिमी हिस्से में सबसे ऊंचे स्थान पर है। पार्वती पहाड़ जिसे दरियापुर पार्वती पहाड़ भी कहा जाता है, पुरातात्विक अवशेषों से भरा है। यह पहाड़ मुख्य रूप से प्राचीन काल का एक बौद्ध स्थल प्रतीत होता है। चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा उल्लेखित कपोत विहार मठ के संरचनात्मक अवशेष इस पुरातात्विक स्थल से प्राप्त हुए हैं। पहाड़ पर कई अन्य अवशेष भी प्राप्त हुए हैं, जिनमें कम-से-कम तीन को स्तूप के रूप में पहचाना जा सकता है। इसके अलावा कई अन्य प्रतिमाएं एवं संरचना इस पहाड़ पर सभी जगह बिखरे पाए गए हैं, जो इसकी उच्च पुरातात्विक क्षमता को दर्शाते हैं।

❑ जॉर्ज ऑरवेल का जन्म स्थान

➲ जॉर्ज ऑरवेल को अंग्रेजी भाषा के सबसे बड़े साहित्यिक रचनाकारों में से एक माना जाता है। उनके कई प्रकाशित कृतियों में वर्ष 1945 में प्रकाशित Animal Farm, वर्ष 1949 में प्रकाशित Nineteen Eighty Four अत्यधिक प्रशंसित कल्पित कथाएं हैं, जो सत्तावादी शासन पर तेज, व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी है। बहुत कम लोगों को यह बात पता है कि जॉर्ज ऑरवेल का असली नाम एरिक ब्लेयर है। जॉर्ज ऑरवेल का जन्म मोतिहारी में 25 जून, 1903 को हुआ था। उनके पिता रिचर्ड ब्लेयर, ऑरवेल के जन्म के समय ब्रिटिश एजेंट थे। ऑरवेल ने इंग्लैंड में Eton and Wellington University से अपनी पढ़ाई पूरी की है।

❑ टेकारी किला, गया

➲ टेकारी किला गया जिले के टेकारी इलाके में स्थित है। इस क्षेत्र के सामंत परिवारों में टेकारी परिवार का मुख्य स्थान है, जिन्हें

https://telegram.me/study_with_pdf

राजा के नाम से भी जाना जाता है। टेकारी किला के परिसर में विविध प्रभावकारी संरचनाएं हैं जिनमें हवेली, रंग भवन, दरबार, गुप्त भवन, तहखाना, नृत्यशाला, जादूघर, कुछ टैंक इत्यादि शामिल हैं।

❑ अहिल्या स्थान

➲ दरभंगा जिला के जाले प्रखंड अंतर्गत कमतौल रेलवे स्टेशन से तीन किमी. दक्षिण अहियारी ग्राम में अहिल्या स्थान अवस्थित है। यहां पर भगवान राम एवं सीता को समर्पित एक भव्य मंदिर है, जिसका निर्माण दरभंगा महाराज छत्रसिंह बहादुर ने सन 1817 में करवाया था। चैत माह के रामनवमी के अवसर पर प्रतिवर्ष यहां मेले का आयोजन होता है। मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या की स्मृति में किया गया था।

❑ तेल्हाड़ा

➲ यह पुरास्थल नालंदा जिला अंतर्गत एकंगरसराय प्रखंड में अवस्थित है। इसका उत्खनन पुरातत्व निदेशालय, बिहार के द्वारा कराया गया है, उत्खनन क्रम में यहां से ईस्वी सन प्रथम शताब्दी में स्थापित महाविहार के भग्नावशेष प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त यहां से संख्या बाहुल्य में प्रस्तर एवं धात्विक प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं, साथ ही गुप्तोत्तर एवं मौखरी लिपि में उत्कीर्ण अनेकों मुहर एवं मुद्रांक प्राप्त हुए हैं। जिसके उद्वाचन से इस पुरास्थल की पहचान 7वीं शताब्दी ई. में भारत भ्रमण पर आए चीन यात्री ह्वेनसांग एवं 19वीं शताब्दी ई. में ब्रिटिश पुरातत्वविद अलेक्जेंडर कनिंघम तथा ए.एम. ब्रोडले द्वारा वर्णित ''तिलाढक'' (तेल्हाड़ा) महाविहार से की गई है।

❑ सोफा मंदिर

➲ पश्चिम चंपारण के गौनाहा प्रखंड अंतर्गत सोफा मंदिर अवस्थित है। यह मंदिर पंचरथ स्थापत्य शैली में निर्मित है। इसका शीर्ष भाग गुंबदाकार है, जो षष्ठकोणीय मध्य भाग पर आधारित है। मंदिर का निर्माण एक विस्तृत चबूतरे पर किया गया है। मंदिर का प्रवेश द्वार पूरब दिशा में है, जिसमें ज्यामितीय अलंकरणयुक्त द्वार लगे हैं। गर्भगृह का प्रवेश द्वार भी सुंदर अलंकरणों से अलंकृत है। गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। यह मंदिर एक टीले पर निर्मित है। यह टीला पंडुई नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है। यह नदी शिवालय के उत्तर दिशा में बहती है। टीले के पूर्वी कटाव एवं उत्तरी हिस्से पर एक और प्राचीनतम मंदिर के भग्नावशेष बड़े पैमाने पर मिलते हैं। मंदिर के भग्नावशेष में शिखर- आमलक और स्तंभ स्थल पर विद्यमान हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि 11वीं - 12वीं सदी ई. में यहां पर एक भव्य मंदिर रहा होगा।

❑ मौरिशन बिल्डिंग

➲ पटना सदर अंचल अंतर्गत प्रसिद्ध गोलघर से सटे पूर्व में अवस्थित है। यह भवन मुख्य रूप से ऑस्ट्रेलिया देश की मूल निवासी मौरिशन नामक महिला का निवास स्थान था। इस भवन का निर्माण अंग्रेजी शासनकाल में किया गया था।

❑ लॉर्ड मिंटो टावर

➲ जमुई जिला के गिद्धौर में अवस्थित लॉर्ड मिंटो टावर का निर्माण 1906 ई. में महाराजा रामेश्वर सिंह द्वारा किया गया था। इस टावर का निर्माण लॉर्ड मिंटो के द्वारा की गई विजय की याद में किया गया था। यह टावर ब्रिटिश काल में प्रचलित स्थापत्य शैली की एक अनमोल धरोहर है।

❑ हरेश्वर नाथ मंदिर, द्वालख (मधुबनी)

➲ द्वालख का प्राचीन हरेश्वर नाथ मंदिर जिला मधुबनी के मधेपुर प्रखंड में अवस्थित है। यह मंदिर कोसी नदी के बहाव परिक्षेत्र में है। स्थापत्य कला की दृष्टि से यह प्राचीन मंदिर अद्वितीय है। मंदिर के गर्भगृह में तीन शिवलिंग स्थापित हैं, जिसमें मध्य का शिवलिंग बड़ा है। शिवलिंग के सामने पश्चिम में ब्लैक-बेसाल्ट स्टोन पर कलाकारों ने बड़ी ही कुशलता के साथ नंदी की मूर्ति को निर्मित किया है। मंदिर का शीर्ष भाग गुंबजयुक्त है, जिसके भीतर अद्भुत चित्रण किया गया है। मंदिर के निर्माण में लखौरी ईंट एवं सुर्खी-चूने का प्रयोग किया गया है।

❑ राजा भोज का किला (नवरतन गढ़)

➲ बक्सर जिले के डुमराव प्रखंड के अंतर्गत ग्राम पंचायत भोजपुर जदीद, नया भोजपुर ग्राम के विद्यालय प्रांगण में बिहार शिक्षा परियोजना द्वारा संचालित योजना से संबंधित भवन निर्माण हेतु नींव की खुदाई में भू-पटल से लगभग 8 फीट नीचे एक प्राचीन कमरा मिला था। जिसका निर्माण सुर्खी-चूने का सहायता से लखौरी ईंट के द्वारा किया गया था। इस कमरे के पूर्वी भाग में एक प्रवेश द्वार भी प्राप्त हुआ है। कमरे के उत्तरी भाग में बने प्रवेश द्वार से आगे बढ़ने पर एक लंबा गलियारा भी प्राप्त हुआ। यह माना जाता है कि यह अवशेष राजभोज के किले (नवरतन गढ़) से संबंध रखते हैं।

❑ बेश्वक (गढ़)

➲ नालंदा जिला के इस्लामपुर प्रखंड के अंतर्गत इस्लामपुर से लगभग 7 किमी. उत्तर-पूर्व दिशा में इस्लामपुर-पटना सड़क पर शेख अब्दुल्ला मोड़ से लगभग 13 किमी. पूर्व बेश्वक गांव स्थित है। इस गांव के उत्तर-पूर्व दिशा में एक गढ़ है जिसकी लंबाई लगभग 70 मी., चौड़ाई 50 मी. एवं ऊंचाई 4 मी. है। टीले के ऊपरी एवं निचली सतह पर कृष्णमार्जित मृदभांड के साथ लाल

https://telegram.me/study_with_pdf

मृदभांड प्राप्त हुए हैं। गढ़ के उत्तरी भाग में मध्यकालीन ईंटों की संरचना दिखाई पड़ती है। सर्वेक्षण क्रम में यहां शुंग-कुषाण काल से लेकर पूर्व-मध्यकाल तक के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं।

❑ लारी

➲ अरवल जिला के कुर्था प्रखंड अंतर्गत लारी ग्राम स्थित है। इस ग्राम के मध्य भाग में एक विशालकाय टीला अवस्थित है जो पुरातात्विक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। यह टीला लगभग 27 एकड़ भूखंड में फैला है। टीला से पूर्व कुछ दूरी पर बनैया नदी जो मोरहर नदी की एक शाखा है, प्रवाहित होती रहती है। टीले के ऊपरी भाग पर प्राचीन ईंट की संरचनाएं मिलती हैं। निरीक्षण क्रम में यहां से कृष्ण लोहित मृदभांड, उत्तरी कृष्ण परिमार्जित मृदभांड एवं लाल मृदभांड प्राप्त हुए हैं। प्राप्त मृदभांडों से यह परिलक्षित होता है कि यहां पर मानवीय गतिविधियां ताम्रपाषाण काल से लेकर मध्यकाल तक लगातार रही हैं।

❑ कोटेश्वर धाम, मेनग्राम

➲ गया जिला के बेलागंज प्रखंड के मोरहर एवं दरधा नदियों के संगम पर अवस्थित प्राचीन कोटेश्वर धाम मंदिर अपने स्थापत्य, मूर्तिकला तथा सुंदर एवं प्राचीन बसावट के अवशेषों से परिपूर्ण होने के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। गर्भगृह, मंडप तथा मुख्य मंडप इसके प्रमुख घटक हैं। मंदिर का निर्माण दक्षिण भारतीय शैली में हुआ है। इसकी आंतरिक संरचना लगभग अपने मूल रूप में सुरक्षित है। मात्र गर्भगृह एवं मुख्य मंडप में आंशिक बदलाव किया गया है। मंदिर का निर्माण ग्रेनाइट पत्थर एवं ईंटों से किया गया है।

बिहार की महत्वपूर्ण योजनाएं

➲ वर्तमान विकास रणनीति के अंतर्गत राज्य सरकार ने 'सात निश्चय' चिह्नित किए हैं और उन्हें 'सुशासन कार्यक्रम, 2015-20' में शामिल किया है। राज्य सरकार द्वारा इन कार्यक्रमों के मिशन के बतौर क्रियान्वयन और देखरेख के लिए वर्ष 2016 में बिहार विकास मिशन की स्थापना की गई। सात लक्ष्यों के सातों घटक इस प्रकार हैं : (1) आर्थिक हल, युवाओं को बल, (2) आरक्षित रोजगार, महिलाओं का अधिकार, (3) हर घर बिजली लगातार, (4) हर घर नल का जल, (5) घर तक, पक्की गली-नालियां, (6) शौचालय निर्माण घर का सम्मान और (7) अवसर बढ़े, आगे पढ़ें।

❑ निश्चय 1 : आर्थिक हल युवाओं का बल

➲ युवा (15 से 24 वर्ष) आबादी के लिहाज से बिहार देश का तीसरा बड़ा राज्य है। राज्य के 1.75 करोड़ युवाओं का राज्य की कुल जनसंख्या में 16.8 प्रतिशत हिस्सा है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, 87 प्रतिशत युवा ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। अतः अपने लाखों युवाओं का सशक्तीकरण करने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए राज्य सरकार ने अपने पहले निश्चय के तहत पांच महत्वाकांक्षी योजनाएं शुरू की हैं। इन योजनाओं के जरिए शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार के अवसरों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

➲ **बिहार विद्यार्थी क्रेडिट कार्ड योजना :** बिहार की साक्षरता दर 61.8 प्रतिशत है, जो 73 प्रतिशत के राष्ट्रीय औसत से कम है (जनगणना, 2011)। साक्षरता की स्थिति में सुधार के लिए राज्य सरकार ने 2 अक्टूबर, 2016 को बिहार विद्यार्थी क्रेडिट कार्ड योजना का शुभारंभ किया। योजना का मुख्य उद्देश्य उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए, विद्यार्थियों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना है।

इस योजना के तहत कक्षा 12 अथवा समकक्ष उत्तीर्ण और 25 वर्ष से कम आयु वाले विद्यार्थी बैंकों से विद्यार्थी क्रेडिट कार्ड के जरिए ऋण ले सकते हैं। ऐसे विद्यार्थी शैक्षिक, व्यावसायिक, पेशेवर और तकनीकी पाठ्यक्रमों के लिए ऋण ले सकते हैं। इन पाठ्यक्रमों में बी.ए., बी.एससी., एम.बी.बी.एस., प्रबंधन, चार्टर्ड एकाउंटेंट, कंपनी सेक्रेटरी, एमसीए और उच्च शिक्षा के अन्य महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम शामिल हैं। वापसी में चूक की स्थिति में राज्य सरकार अधिकतम 4.00 लाख रु. की गारंटी उपलब्ध कराएगी।

➲ **मुख्यमंत्री निश्चय स्वयं सहायता भत्ता योजना :** योजना का औपचारिक शुभारंभ 2 अक्टूबर, 2016 को हुआ था। योजना का उद्देश्य रोजगार पाने में असफल रहने वाले युवक-युवतियों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना है। इस योजना के तहत बिहार के 20 से 25 वर्ष आयु समूह के प्रत्येक बेरोजगार युवक-युवती को दो वर्षों तक प्रतिमाह 1,000 रु. प्राप्त होंगे। पात्र आवेदक को श्रम विभाग द्वारा आयोजित अनिवार्य भाषा प्रशिक्षण (हिंदी/अंग्रेजी), संवाद कौशल, कंप्यूटर की बुनियादी जानकारी और व्यवहार कौशल भी हासिल होगा।

➲ **कौशल युवा योजना :** इस योजना के तहत, 15 से 25 वर्ष आयु समूह के न्यूनतम कक्षा 10 उत्तीर्ण बेरोजगार युवक-युवतियां आवेदन देने के लिए पात्र होंगे।

व्यवहार कौशल विकास कार्यक्रम में 240 घंटे का प्रशिक्षण होगा, जिसमें भाषा (हिंदी/अंग्रेजी) एवं संवाद कौशल 80 घंटे, बुनियादी कंप्यूटर ज्ञान 120 घंटे एवं व्यवहार कौशल का प्रशिक्षण 40 घंटे का होगा। इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए राज्य के सभी प्रखंडों में कौशल प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जा चुके हैं। इसके अलावा, विभिन्न संगठनों द्वारा निजी प्रशिक्षण केंद्र भी स्थापित किए गए हैं। अभियंत्रण महाविद्यालय, पॉलीटेक्निक और औद्योगिक

https://telegram.me/study_with_pdf

प्रशिक्षण संस्थानों में पढ़ चुके विद्यार्थी भी इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

- **बिहार स्टार्ट-अप नीति, 2017 :** राज्य में नए लघु एवं मध्यम उद्यमों की स्थापना के लिहाज से सक्षमकारी वातावरण निर्माण हेतु बिहार स्टार्ट-अप नीति, 2017 युवक-युवतियों को व्यवसाय स्थापित करने में सहयोग देगी और राज्य में व्यवसाय के नए विचारों को पोषित करेगी। इस योजना के तहत राज्य सरकार उद्भवन (इनक्यूबेशन) केंद्रों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराएगी। इस नीति के तहत 500 करोड़ रु. का उद्यम पूंजी (वेंचर कैपिटल) कोष बनाया जा चुका है। नवांकुर उद्यमों (स्टार्ट-अप) को पांच वर्षों तक राज्य के विभिन्न अधिनियमों के तहत, कार्यसंचालन लाइसेंस लेने से छूट मिलेगी।
- राज्य सरकार द्वारा महिला उद्यमियों को 5 प्रतिशत, अजा./अजजा. उद्यमियों को अधिकतम 15 प्रतिशत और दिव्यांग व्यक्तियों को अधिकतम 15 प्रतिशत अतिरिक्त वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। नवांकुर उद्यमों के आवेदनों का मूल्यांकन करने के लिए एक विशेष समिति गठित की जाएगी।
- **सभी विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों में मुफ्त वाई-फाई :** वर्तमान दौर में इंटरनेट की उपलब्धता पेशेवर कार्यों ही नहीं, दैनिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके लिए राज्य सरकार ने सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में युवाओं को इंटरनेट की सुविधा प्रदान करने का संकल्प लिया है। इस पृष्ठभूमि में राज्य सरकार ने राज्य के सभी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में मुफ्त वाई-फाई उपलब्ध कराने के प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की है।

❑ निश्चय 2 : आरक्षित रोजगार महिलाओं का अधिकार

- बिहार में 15 से 59 वर्ष की महिलाओं के लिए श्रमशक्ति सहभागिता दर मात्र 18.1 प्रतिशत है, जो 31.1 प्रतिशत के राष्ट्रीय औसत की तुलना में बहुत कम है। अतः श्रमशक्ति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के मकसद से राज्य सरकार ने राज्य की सभी सरकारी नौकरियों का 35 प्रतिशत हिस्सा महिलाओं के लिए आरक्षित करने का निर्णय लिया है और यह नीति फरवरी, 2016 से क्रियान्वित हो रही है। महिलाओं के लिए रोजगार राज्य सरकार के विकास संबंधी एजेंडा का हमेशा से अभिन्न अंग रहा है। इस लिहाज से राज्य सरकार ने अनेक पहलकदमियां (इनिटिएटिव) ली हैं, जिनमें पंचायती राज संस्थाओं और नगरपालिका निकायों में महिलाओं का 50 प्रतिशत आरक्षण उपलब्ध कराना शामिल है। इसके अलावा, राज्य सरकार ने महिला पुलिस थाने भी स्थापित किए हैं और बिहार पुलिस सेवा में महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत नौकरियां आरक्षित की हैं। 'जीविका' के तहत गठित महिला स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं के आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता में अत्यधिक वृद्धि की है।

❑ निश्चय 3 : हर घर बिजली लगातार

- केंद्र सरकार और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत बड़ी संख्या में गांवों का विद्युतीकरण किया जा चुका है। शेष गांवों का विद्युतीकरण भी दिसंबर, 2018 तक पूरा कर लेने का लक्ष्य लिया गया है। इसमें बीपीएल और एपीएल, दोनों तरह के परिवारों का आच्छादन हुआ है। इस कार्यक्रम का शुभारंभ 15 नवंबर, 2016 को हुआ था। कुल 39,073 गांवों में से 217 गांव अगम्य क्षेत्रों में हैं, जहां नवीकरणीय ऊर्जा के जरिए बिजली उपलब्ध कराई जाएगी।

❑ निश्चय 4 : हर घर नल का जल

- इस निश्चय का लक्ष्य बिहार के हर नागरिक को बिना भेदभाव स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना है। इसके तहत राज्य के 2 करोड़ परिवारों का आच्छादन किया जाएगा। 8,391 ग्राम पंचायतों और 140 नगर निकायों के सामूहिक प्रयासों से राज्य सरकार इस लक्ष्य को निम्नलिखित योजनाओं के तहत प्राप्त करना चाहती है–(क) मुख्यमंत्री ग्रामीण पेयजल योजना, (ख) मुख्यमंत्री ग्रामीण पेयजल योजना (गुणवत्ता प्रभावित क्षेत्र), (ग) मुख्यमंत्री ग्रामीण पेयजल योजना (गुणवत्ता अप्रभावित क्षेत्र), (घ) मुख्यमंत्री शहरी पेयजल योजना।
- **मुख्यमंत्री ग्रामीण पेयजल योजना :** इस योजना के तहत राज्य के 5,013 ग्राम पंचायतों के सभी परिवारों को बिना भेदभाव के पाइपलाइनों के जरिए स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया जाएगा। इस योजना का क्रियान्वयन पंचायती राज विभाग द्वारा किया जा रहा है। 5013 ग्राम पंचायत जहां जल गुणवत्ता प्रभावित नहीं है। वर्ष 2019-20 तक प्रत्येक घर को पाइपलाइन के माध्यम से नल द्वारा शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है। 4 वर्षों में 8,373 करोड़ रुपये का व्यय संभावित है, जिसमें राज्य योजना मद से 3068 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। धनराशि की उपलब्धता के आधार पर राज्य सरकार ने इसे चरणबद्ध ढंग से क्रियान्वित करने का निर्णय लिया है - 20 प्रतिशत परिवारों के लिए पहले वर्ष, 30 प्रतिशत परिवारों के लिए दूसरे वर्ष, 30 प्रतिशत परिवारों के लिए तीसरे वर्ष और शेष 20 प्रतिशत परिवारों के लिए चौथे वर्ष।
- **मुख्यमंत्री ग्रामीण पेयजल योजना (गुणवत्ता प्रभावित क्षेत्र) :** इस योजना का क्रियान्वयन उन पंचायतों में किया जा रहा है, जहां का पानी आयरन, फ्लोराइड या आर्सेनिक से प्रभावित है। इस योजना के तहत सभी 2411 प्रभावित ग्राम पंचायतों को पाइपलाइनों के जरिए स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होगा। इस योजना के लिए 2411 ग्राम पंचायतों के कुल 22261 परिवारों की पहचान की गई थी। इस योजना पर आगामी 5 वर्षों में कुल 7830 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे।

https://telegram.me/study_with_pdf

➲ **मुख्यमंत्री ग्रामीण पेयजल योजना (गुणवत्ता अप्रभावित क्षेत्र) :** मुख्यमंत्री ग्रामीण पेयजल योजना (गुणवत्ता अप्रभावित क्षेत्र) का क्रियान्वयन उन्हीं क्षेत्रों में किया जाएगा, जहां पानी की गुणवत्ता प्रभावित नहीं है या जहां राज्य सरकार की जलापूर्ति योजनाएं पहले से ही चल रही हैं। इस योजना के तहत कुल 1683 ग्राम पंचायतों को चिह्नित किया गया है। इस योजना पर आगामी चार वर्षों में कुल 1812 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे।

➲ **मुख्यमंत्री शहरी पेयजल योजना :** इस योजना का क्रियान्वयन नगर विकास एवं आवास विभाग द्वारा किया जा रहा है। इस योजना के तहत 140 नगर निकायों के सभी शहरी परिवारों को पाइपलाइनों के जरिए स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति की जाएगी।

❑ **निश्चय 5 : घर तक, पक्की गली-नालियां**

➲ इस निश्चय के तहत प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के क्रियान्वयन के बाद राज्य के शेष बचे असंपर्कित गांव-टोलों को नजदीकी पक्की सड़कों के साथ जोड़ा जाएगा। साथ ही, सभी शहरों और गांवों में गलियों का भी निर्माण होगा। अभी इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राज्य सरकार द्वारा तीन योजनाएं शुरू की गई हैं– (क) ग्रामीण टोला संपर्क निश्चय योजना, (ख) मुख्यमंत्री ग्रामीण गली-नालियां पक्कीकरण निश्चय योजना और (ग) मुख्यमंत्री शहरी गली-नालियां पक्कीकरण निश्चय योजना।

❑ **निश्चय 6 : शौचालय निर्माण घर का सम्मान**

➲ 'शौचालय निर्माण घर का सम्मान' निश्चय के तहत पूरे राज्य में सभी परिवारों को शौचालय उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इसके साथ-साथ, शौचालयों के नियमित उपयोग के लिए सामूहिक व्यवहार परिवर्तन को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। केंद्र सरकार के स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के तहत एपीएल परिवारों के आच्छादन का निर्णय भी लिया गया है।

➲ इस छठें निश्चय के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए केंद्र सरकार के स्वच्छ भारत मिशन के अलावा, राज्य सरकार द्वारा दो योजनाएं शुरू की गई हैं–(1) लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान और (2) शौचालय निर्माण (नगर क्षेत्र) योजना।

❑ **निश्चय 7 : अवसर बढ़े, आगे पढ़ें**

➲ इस निश्चय का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा सहित उच्च शिक्षा संस्थानों की स्थापना करना है, जो राज्य में युवक-युवतियों और श्रमिकों के लिए बेहतर अवसर उपलब्ध कराएं।

➲ इस निश्चय के तहत राज्य सरकार हर जिले में एक जीएनएम (जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी) विद्यालय और एक पैरा-मेडिकल (परा-चिकित्सा) संस्थान स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प है। 5 जिलों में जीएनएम स्कूल स्थापित किए जा चुके हैं और 10 अन्य जिलों में कार्य प्रगति पर है। शेष 23 जिलों में चरणबद्ध ढंग से जीएनएम स्थापित किए जाएंगे।

❑ **बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोत्साहन समिति (जीविका)**

➲ 'जीविका' के नाम से लोकप्रिय बिहार ग्रामीण आजीविका प्रोत्साहन समिति (बीआरएलपीएस) ग्रामीण विकास विभाग के तत्वावधान में बनी एक निबंधित संस्था है, जिसने बिहार में ग्रामीण विकास के क्षेत्र में एक मुख्य प्रकरण को रेखांकित किया है। पिछले दशक में जीविका को जीवन यात्रा और बिहार के रुख में बदलाव साथ-साथ शुरू हुआ। वर्ष 2006 में 15 प्रखंडों में शुरू हुई छोटे पैमाने की इस परियोजना ने खुद को राज्यव्यापी आंदोलन में रूपांतरित कर लिया है और सितंबर, 2017 तक 79 लाख से भी अधिक परिवारों की जिंदगी से जुड़ गई है। जीविका का उद्देश्य महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों और उनके संघों जैसी विकासमान संस्थाओं के जरिए ग्रामीण गरीब परिवारों का सामाजिक और आर्थिक, दोनों तरह से सशक्तीकरण करना है। जीविका के आरंभ के समय बिहार का ग्रामीण गरीबी अनुपात 44.3 प्रतिशत था, जो वर्ष 2006 में ओडिशा के बाद सबसे अधिक था। राज्य की कुल 8.2 करोड़ आबादी में से 3.6 करोड़ लोग गरीबी में जीवन बसर कर रहे थे। समस्याग्रस्त सेवा प्रदान, जटिल राजनीतिक और सामाजिक प्रवाह, गरीबों का संस्थाओं में अपर्याप्त समावेश, सीमित आर्थिक अवसर, और अपर्याप्त अधिसंरचना राज्य की पहचान बनी हुई थी। इस चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में वर्ष 2006 में जीविका का आरंभ उच्च प्राथमिकता वाले छः जिलों (गया, नालंदा, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, खगड़िया और मधुबनी) में हुआ। परियोजना के सेवा प्रदान तंत्र को टिकाए रखने के लिए बिहार सरकार ने विश्व बैंक और अन्य राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय अभिकरणों जैसे विभिन्न बहुपक्षीय अभिकरणों से वित्तीय सहायता उपलब्ध कराकर सहयोग किया। बिहार में जीविका का क्रियान्वयन दो स्पष्ट रूप से अलग चरणों में हुआ है। **जीविका का प्रथम चरण :** बिहार ग्रामीण जीविका परियोजना (बीआरएलपी) (2006-2016) का क्रियान्वयन 6 जिलों के 102 प्रखंडों में हुआ। **द्वितीय चरण :** बिहार रूपांतरकारी विकास परियोजना (बीटीडीपी) का आरंभ वर्ष 2016 में हुआ। जीविका मॉडल के राज्य में विस्तार का मुख्य लक्ष्य मूल्य शृंखला और मानव विकास संबंधी हस्तक्षेपों में और भी सुधार करना था। वर्ष 2013 में जीविका को राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका परियोजना (एनआरएलपी) के क्रियान्वयन के लिए नोडल अभिकरण के रूप में अधिसूचित किया गया।

https://telegram.me/study_with_pdf

बिहार में कला एवं संस्कृति

- बिहार का प्रसिद्ध सूर्य मंदिर देव (औरंगाबाद जिला) में स्थित है।
- छठ पूजा बिहार का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है। यह पर्व सूर्य देव को समर्पित है। यह त्यौहार वर्ष में दो बार मनाया जाता है–एक बार चैत्र माह (मार्च) तथा दूसरी बार कार्तिक माह (नवंबर) में।
- **सामा-चकेवा (Sama-Chakeva) बिहार में मैथिली भाषी लोगों का एक प्रसिद्ध त्यौहार है। भाई-बहन के मध्य घनिष्ठ संबंध दर्शाने वाला यह त्यौहार नवंबर माह के शुरू होने के साथ मनाया जाता है।**
- बिहुला पूर्वी बिहार का एक प्रमुख त्यौहार है, जो विशेष रूप से भागलपुर जिले में प्रसिद्ध है। इस त्यौहार में लोग अपने परिवार के कल्याण के लिए मनसा देवी से प्रार्थना करते हैं।
- मधुश्रावनी त्यौहार पूरे मिथिलांचल में उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। यह पर्व श्रावण माह (अगस्त) में मनाया जाता है।
- रामनवमी, बसंत पंचमी, शिवरात्रि, रक्षाबंधन, होली, दुर्गा पूजा, दीपावली, ईद, बकरीद तथा क्रिसमस बिहार में उत्साहपूर्वक मनाया जाता है।

❑ वास्तुकला

- कुम्रहार (पटना) से एक मौर्यकालीन विशाल कक्ष संभवतः राजमहल का अवशेष मिला; 80 स्तंभ; पत्थर के खंभों के बचे अवशेष; राजमहल संभवतः लकड़ी का बना होगा।
- **मौर्यकालीन स्तंभ लेख** – ये चार स्थानों लौरिया-नंदनगढ़, लौरिया-अरेराज (पश्चिम चंपारण), रामपुरवा (पूर्वी चंपारण) और बसाढ़ (वैशाली) में स्थापित हैं।
- बसाढ़ स्तंभ पर सिंह, रामपुरवा स्तंभ पर नटुवा बैल (सांड), लौरिया-नंदनगढ़ स्तंभ पर सिंह की आकृति उत्कीर्ण है।
- ये चुनार के धूसर बलुआ पत्थर से निर्मित हैं तथा इन पर चमकीली पॉलिश भी की गई है।
- बराबर की पहाड़ियों (गया) में अशोक एवं दशरथ द्वारा आजीवक संप्रदाय के लिए गुफाओं का निर्माण।
- ओदंतपुरी, नालंदा एवं विक्रमशिला महाविहार का निर्माण।
- सासाराम में शेरशाह का मकबरा – झील के मध्य अष्टकोणी मकबरा; अफगान स्थापत्य शैली का उदाहरण।

❑ मूर्तिकला

- पटना के दीदारगंज से प्राप्त यक्षी (स्त्री) की मूर्ति – मौर्यकालीन।
- भागलपुर के सुल्तानगंज से प्राप्त बुद्ध की ताम्रमूर्ति – 75 फीट ऊंचाई (गुप्तकालीन); वर्तमान में इंग्लैंड के बर्मिंघम संग्रहालय में संरक्षित।
- पाल काल में तांबे एवं कांसे की मूर्तियों का निर्माण, अधिकांश मूर्तियां बुद्ध एवं बौद्ध धर्म से प्रभावित, धीमान एवं बिट्ठलपाल ने कांस्य प्रतिमाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- कुम्रहार से विभिन्न पशु-पक्षी तथा नर-नारियों की मृण्य मूर्तियां मिली हैं।

❑ चित्रकला (i) पटना शैली (पटना कलम)

- इसे कंपनी शैली भी कहा जाता है।
- इसे पुरुषों की चित्रशैली भी कहा जाता है।
- तूलिका गिलहरी की पूंछ, ऊंट, सूअर या हिरण के बाल तथा कबूतर या चील के पंखों से बनाते थे।
- कलाकार रंग स्वयं बनाते थे; प्राकृतिक रंगों का प्रयोग।
- दैनिक जीवन, मांगलिक पर्व, वस्तु, दृश्य, पशु-पक्षी चित्रण।
- कणज, अभ्रक और हाथी दांत चित्र के माध्यम ।
- **प्रमुख चित्रकार** – सेवक राम (प्रथम कलाकार); हुलास लाल (पशु-पक्षी चित्रण में माहिर); जयराम दास (स्याह कलम के माहिर); फकीरचंद लाल, शिवलाल साहिब।
- **महिला कलाकार** – दक्षो बीबी, सोना बीबी।
- ईश्वरी प्रसाद वर्मा पटना कलम शैली के अंतिम चित्रकार थे।

❑ मधुबनी चित्रकला

- वर्ष 1934 में भूकंप के बाद मधुबनी में तत्कालीन जिलाधिकारी विलियम जी. आर्चर ने निरीक्षण के दौरान मधुबनी के भित्ति-चित्रों को देखा।
- भित्ति-चित्र एवं अरिपन (भूमि चित्र) के रूप में।
- भित्ति-चित्रों में गोसउनी, कोहबर और कोहबर की कोंणियां।
- गोसउनी या गोस्नी धार्मिक चित्र हैं, जबकि कोहबर में प्रतीक एवं तांत्रिक विषयों पर चित्र बनाए जाते हैं।
- कोहबर वस्तुतः उस स्थान को कहा जाता है, जहां विवाह के समय कुल देवता की स्थापना होती है।
- पहले केवल भित्ति-चित्र बनते थे, जबकि वर्तमान में कागज एवं कपड़े पर भी चित्रकारी की जाती है।
- चटक रंगों लाल, पीला, हरा आदि का अधिक प्रयोग होता है।
- पद्मश्री सीता देवी, पद्मश्री भगवती देवी, पद्मश्री गंगा देवी, महासुंदरी देवी, भारती दयाल आदि प्रमुख चित्रकार हैं।

❑ मंजूषा शैली

- बिहुला-बिसारी की प्रेम कथा मुख्य विषय है।
- इसे सर्प चित्रकारी भी कहते हैं।
- रेखा प्रधान, तीन रंगों की कला ।
- मुख्यतः भागलपुर क्षेत्र में प्रचलित।
- चक्रवर्ती देवी, निर्मला देवी प्रमुख चित्रकार हैं, जिन्हें सीता देवी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

❑ बिहार के लोकनाट्य

- **बिदेसिया** – भोजपुर क्षेत्र में लोकप्रिय ; पुरुषों द्वारा अभिनीत।
- **जट-जटिन** – अविवाहित लड़कियों द्वारा अभिनीत; जट-जटिन के वैवाहिक जीवन का प्रदर्शन।
- **डोमकच** – घरेलू नाट्य; महिलाओं द्वारा प्रस्तुत।
- **सामा चकेवा** – प्रश्नोत्तर शैली में; बालिकाओं द्वारा अभिनीत।
- **किरतनिया** – भक्तिपूर्ण लोकनाट्य; श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन।

❑ बिहार के लोक नृत्य

- कठघोड़वा नृत्य, लौंडा नृत्य, करिया झूमर नृत्य, जोगीड़ा नृत्य, पंवड़िया नृत्य, घोषिया नृत्य, झिझिया नृत्य, खोलड़िन नृत्य, विद्यापति नृत्य, झरनी नृत्य।

https://telegram.me/study_with_pdf

- जापान-भारत सर्वोदय मैत्री संघ के तत्वावधान में जापानियों ने राजगीर के रत्नागिरि पर्वत पर वर्ष 1969 में 'विश्व शांति स्तूप' का निर्माण कराया था।
- 9 फरवरी, 1916 को पटना उच्च न्यायालय की स्थापना की गई।
- पटना उच्च न्यायालय के वर्तमान मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति संजय करोल हैं।
- बिहार में यद्यपि 'जमींदारी' सांविधिक रूप से वर्ष 1952 में हटा दी गई थी, तथापि भू-नियंत्रण का सामाजिक आधार 'प्रधान जाति के हिंदू' के हाथों रह गया।
- मुंडा जनजाति अधिकांशतः बिहार के कटिहार तथा झारखंड के रांची, पश्चिमी सिंहभूम, पलामू, पूर्वी सिंहभूम और गुमला जिलों में संकेंद्रित है।
- बौद्ध भिक्षु गया के महाबोधि मंदिर पर नियंत्रण प्राप्त करने हेतु बिहार में आंदोलन करते रहे हैं। सर्वप्रथम श्रीलंका के बौद्ध भिक्षु अंगारिका धम्मपाला ने 1881 ई. में यह मांग की थी कि गया के महाबोधि मंदिर पर बौद्ध भिक्षुओं का नियंत्रण होना चाहिए। अखिल भारतीय महाबोधि मंदिर मुक्ति समिति के अध्यक्ष नागार्जुन सुराई सेशाई ने संयुक्त राष्ट्र संघ के शरणार्थी उच्चायुक्त (VNHCR) के समक्ष भी महाबोधि मंदिर पर बौद्ध भिक्षुओं के नियंत्रण संबंधी मांग रखी है।
- 'हर परिसर हरा परिसर योजना' में बिहार के सभी जिलों के विभिन्न प्रकार के परिसर यथा–स्कूलों, कॉलेजों, धार्मिक स्थलों, संस्थानों, कार्यालयों, क्लबों, समितियों एवं अन्य सरकारी एवं गैर-सरकारी परिसरों को शामिल किया गया है। एक संस्था/परिसर को न्यूनतम 50 एवं अधिकतम 1000 पौधा निःशुल्क उपलब्ध कराया जाता है।
- बिहार के प्रमुख समाचार-पत्र 'बिहारी' के संपादक बाबू माहेश्वर प्रसाद थे।
- पहला पत्र बंगाल गजट या कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर या हिक्की गजट निकाला गया।
- अंग्रेजी से इतर भाषाई पत्रकारिता में बिहार में पहला उदाहरण उर्दू अखबार 'नूर-अल-अनवर' का है, जिसे 1853 ई. में आरा से सैयद मोहम्मद हासिल ने प्रकाशित किया।
- पटना के तत्कालीन कमिश्नर विलियम टाइलर ने 3 सितंबर, 1856 को उर्दू साप्ताहिक, 'अखबार-ए-बिहार' निकाला। इसके प्रसार में भी उनकी महती भूमिका रही। निःशुल्क डाक वितरण वाला यह पहला अखबार था।
- 'बिहार साइंटिफिक सोसाइटी' ने एक अन्य पत्र 'अखबार अख्यार' निकाला था। यह अखबार काफी लोकप्रिय हुआ।
- वर्ष 1893 से 1912 तक एक तरह से बिहार में पत्रकारिता का स्वर्णिम काल था। 1907 ई. में महेश नारायण का देहांत हो गया, वे 'बिहार टाइम्स' नामक पत्रिका निकालते थे। उन्होंने अपने समाचार-पत्र के माध्यम से बिहार के पृथक्करण की मांग रखी।
- 'मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना' के अंतर्गत जन्म से स्नातक तक की शिक्षा पूर्ण करने पर विभिन्न मदों के तहत कुल 54, 100 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। स्नातक उपरांत कन्या को 25,00 रुपये की राशि प्रदान की जाएगी। अगर राज्य में बालिकाओं हेतु पहले से चल रही योजनाओं यथा- छात्रवृत्ति, साइकिल योजना इत्यादि को सम्मिलित कर लिया जाए, तो राज्य सरकार प्रत्येक बालिका पर लगभग 60,000 रु. खर्च करेगी।
- जुलाई, 2018 में सुलभ इंटरनेशनल ने बिहार के दरभंगा जिले में 'सुलभ जल' नामक परियोजना का शुभारंभ किया। इस परियोजना के अंतर्गत तालाब एवं नदियों के दूषित जल को स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल में परिवर्तित किया जाएगा।
- बिहार राज्य कृषि रोड मैप की शुरुआत करने वाला भारत का पहला राज्य है।
- समस्त बिहार राज्य की सभी जेलों को कंप्यूटर से जोड़ने वाला पहला राज्य है। सेंडई फ्रेमवर्ड एग्रीमेंट के परिप्रेक्ष्य में 15 वर्षीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण रोडमैप 2015-2030 तैयार करने वाला बिहार भारत का पहला राज्य है।
- भारत की पहली महिला पायलट सदस्यों में से एक भावना कांत का संबंध बिहार राज्य से है।
- सर्वप्रथम वर्ष 1905 में कृषि अनुसंधान की शुरुआत करने वाला बिहार प्रथम राज्य था। बिहार के जहानाबाद जिले का धनरई गांव भारत का प्रथम सौर ग्राम है।
- दुनिया का सबसे बड़ा फ्री इंटरनेट वाई-फाई जोन अशोक राजपथ से दानापुर (20 किमी.) के मध्य है।
- देश में पहली बार ई-फॉरेस्ट मंडी बिहार राज्य में प्रारंभ व स्थापित हुई है। बिहार राज्य का पहला बिजनेस स्कूल कंझिया, नाथनगर (भागलपुर) में खोला गया है। बिहार राज्य की फिल्म सिटी वाल्मीकि नगर व राजगीर में प्रस्तावित है।
- बक्सर राज्य की पहली खुली जेल तथा भागलपुर राज्य की पहली महिला जेल के रूप में स्थापित की गई है।
- चिरांद (सारण या छपरा) से हड्डी से निर्मित उपकरण बहुतायत में प्राप्त हुए हैं। बिहार के राजगीर में एक 'जू-सफारी' स्थापित की जा रही है।
- बिहार राज्य में सूचना प्रौद्योगिकी विभाग का गठन 1 अप्रैल, 2007 को किया गया था। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के एक अध्ययन केंद्र की स्थापना बिहार के किशनगंज में की गई है। अनौपचारिक शिक्षा के विस्तार हेतु 1991 ई. में बिहार शिक्षा

https://telegram.me/study_with_pdf

परियोजना परिषद का गठन हुआ है, जिसमें केंद्र, यूनिसेफ व बिहार राज्य की भागीदारी क्रमशः 2:3:1 की है।

- बिहार का राजकीय पशु बैल, राजकीय पक्षी गौरैया, राजकीय मछली मांगुर, राजकीय फूल गेंदा, राजकीय वृक्ष पीपल व राज्य गीत 'मेरे भारत के कंठहार, तुझको शत-शत वंदन बिहार' है।
- बिहार में वर्ष 2017-18 में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 42932, उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 31074 तथा प्रारंभिक शिक्षा देने वाले विद्यालयों की संख्या 74006 थी।
- वर्ष 2017-18 में विद्यालयों की संख्या के लिहाज से सर्वोत्तम प्रदर्शन करने वाले जिले पूर्व चंपारण (3,852), पटना (3,366) और मुजफ्फरपुर (3,359) थे। विद्यालयों की सबसे कम संख्या वाले तीन जिले- शिवहर (434), अरवल (526) और शेखपुरा (581) थे।
- बिहार से प्राप्त नवपाषाण कालीन स्थल - **चिरांद (छपरा)**
- बौद्ध संगीति का आयोजन स्थल - **राजगृह (प्रथम), वैशाली (द्वितीय) एवं पाटलिपुत्र** (तृतीय)
- प्रथम जैन संगीति का आयोजन स्थल - **पाटलिपुत्र** (300 ई.पू.)
- बिहार पर आक्रमण करने वाला मुस्लिम आक्रांता - **मोहम्मद बिन बख्तियार खिलजी**
- दिल्ली पर शासन करने वाला प्रथम बिहारी - **शेरशाह सूरी**
- बिहार की यात्रा करने वाला प्रथम अंग्रेज यात्री - **रॉल्फ फिंच**
- बिहार की यात्रा करने वाले प्रथम सिख गुरु - **गुरु नानक देव**
- बिहार में पैदा होने वाले सिख गुरु - **गुरु गोविंद सिंह** (पटना साहिब)
- 1857 क्रांति में बिहार का नेतृत्व करने वाला व्यक्ति - **बाबू कुंवर सिंह**
- बिहार से राष्ट्रपति बनने वाले प्रथम व्यक्ति - **डॉ. राजेंद्र प्रसाद**
- बिहार विधान परिषद से प्रथम सभापति - **राजीव रंजन प्रसाद**
- पटना उच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश - **सर एडवर्ड चमियार**
- पटना उच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश (स्वतंत्रता पश्चात) - **सर क्लिफर्ड मनमोहन अग्रवाल** (9 जनवरी, 1948 से 24 जनवरी, 1950 तक)
- पटना उच्च न्यायालय की पहली महिला मुख्य न्यायाधीश - **रेखा मनहरलाल दोशित** (2010)
- बिहार से प्रथम लोक सभा अध्यक्ष - **बलिराम भगत** (5वीं लोक सभा में)
- बिहार से लोक सभा की पहली महिला अध्यक्ष - **मीरा कुमार** (2009)
- बिहार से सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बनने वाले - **न्यायमूर्ति भुवनेश्वर प्रसाद सिन्हा**
- बिहार से देश के उपप्रधानमंत्री बनने वाले - **बाबू जगजीवन राम**
- बिहार से अशोक चक्र प्राप्त करने वाले प्रथम व्यक्ति - **रणधीर वर्मा** (मरणोपरांत)
- बिहार के प्रथम महाकवि - **विद्यापति**
- बिहार से ज्ञानपीठ से सम्मानित प्रथम व्यक्ति - **रामधारी सिंह दिनकर** (उर्वशी)
- बिहार में सर्वाधिक बोली जाने वाली एवं संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषा - **मैथिली**
- संपूर्ण क्रांति के जनक - **जयप्रकाश नारायण**
- सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक - **बिंदेश्वर पाठक**
- भारत का सबसे बड़ा पशु मेला - **सोनपुर मेला** (गंगा और गंडक नदी के संगम पर)
- बिहार का प्रथम तेलशोधक कारखाना - **बरौनी**
- बिहार की प्रथम सिंचाई परियोजना - **सोन बहुउद्देशीय परियोजना**
- बिहार में सर्वप्रथम नगरपालिका की स्थापना - **आरा** (1865 ई.)
- बिहार का प्रथम खगोलीय वेधशाला - **इंदिरा गांधी तारामंडल**, पटना
- बिहार का प्रथम स्टेडियम - **मोईनुल हक स्टेडियम**, पटना
- बिहार का प्रथम अंग्रेजी समाचार-पत्र (साप्ताहिक) - **द बिहार हेराल्ड** (1875)
- बिहार का प्रथम अंग्रेजी समाचार-पत्र (दैनिक) - **द सर्चलाइट** (1918 में द्वि-साप्ताहिक, 1930 से दैनिक)
- बिहार का प्रथम हिंदी समाचार-पत्र (साप्ताहिक) - **बिहार बंधु** (1874)
- बिहार का प्रथम हिंदी समाचार-पत्र (दैनिक) - **सर्वहितैषी** (1882)
- बिहार की पहली हिंदी फिल्म - **कल हमारा है**
- बिहार की पहली भोजपुरी फिल्म - **गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो**
- बिहार की पहली मैथिली फिल्म - **कन्यादान**

❑ बिहार के महत्वपूर्ण शैक्षिक संस्थान

विश्वविद्यालय

- आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय - **पटना**
- पटना विश्वविद्यालय - **पटना**
- चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय - **पटना**
- मगध विश्वविद्यालय - **बोधगया**
- बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय - **मुजफ्फरपुर**
- तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय - **भागलपुर**
- ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय - **दरभंगा**
- कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय - **दरभंगा**
- जयप्रकाश विश्वविद्यालय - **छपरा**
- भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय - **मधेपुरा**
- वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय - **आरा**
- नालंदा खुला (ओपेन) विश्वविद्यालय - **पटना**
- मजरूल हक अरबी-फारसी विश्वविद्यालय - **पटना**
- राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय - **पूसा**

❑ इंजीनियरिंग कॉलेज

- बिहार इंस्टीट्यूट ऑफ सिल्क एंड टेक्सटाइल्स - **भागलपुर**
- बिहार कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग - **पटना**
- संजय गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी - **पटना**
- मुजफ्फरपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी - **मुजफ्फरपुर**

https://telegram.me/study_with_pdf

➲ कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग - **पूसा, समस्तीपुर**

➲ भागलपुर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग - **भागलपुर**

❑ **प्रबंधन संस्थान**

➲ चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान - **पटना**

➲ भारतीय प्रबंधन संस्थान - **पटना**

➲ एल.एन. मिश्रा आर्थिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तन संस्थान - **पटना**

➲ शांति सेवा समिति द्वारा संचालित भारतीय होटल प्रबंधन संस्थान - **पटना**

❑ **मेडिकल कॉलेज**

➲ दरभंगा मेडिकल कॉलेज - **दरभंगा**

➲ श्रीकृष्णा मेडिकल कॉलेज - **मुजफ्फरपुर**

➲ पटना मेडिकल कॉलेज - **पटना**

➲ जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज - **भागलपुर**

➲ ए.एन. मगध मेडिकल कॉलेज - **गया**

➲ नालंदा मेडिकल कॉलेज - **पटना**

➲ कटिहार मेडिकल कॉलेज - **कटिहार**

➲ मातागुजरी मेडिकल कॉलेज - **किशनगंज**

❑ **अनुसंधान संस्थान**

➲ राजेंद्र मेमोरियल अनुसंधान संस्थान - **पटना**

➲ बिहार अनुसंधान संस्थान - **पटना**

➲ के.पी. जायसवाल अनुसंधान संस्थान - **पटना**

➲ डॉ. अनुग्रह नारायण सिन्हा अनुसंधान संस्थान - **पटना**

➲ दरभंगा अनुसंधान संस्थान - दरभंगा

➲ टी.बी. डेमोस्ट्रेशन एंड ट्रेनिंग सेंटर - पटना एवं दरभंगा

❑ **कृषि संस्थान**

➲ बिहार कृषि कॉलेज - **सबौर, भागलपुर**

➲ तिरहुत कृषि कॉलेज - **मुजफ्फरपुर**

➲ राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय - **पूसा, समस्तीपुर**

➲ फैकल्टी ऑफ फॉरेस्ट्री साइंस - **समस्तीपुर**

❑ **ललित कला**

➲ फैकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट, भागलपुर विश्वविद्यालय - **भागलपुर**

➲ बिहार कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट - **पटना**

❑ **पशु चिकित्सा**

➲ फैकल्टी ऑफ वेटरीनरी साइंस एंड एनीमल हस्बेंड्री - **समस्तीपुर**

➲ बिहार वेटरीनरी कॉलेज - पटना

❑ **अन्य संस्थान**

➲ नेशनल रिसर्च सेंटर फॉर लीची - **मुजफ्फरपुर**

➲ नेशनल रिसर्च सेंटर फॉर मखाना - **पटना**

➲ राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान - **हाजीपुर**

➲ क्षेत्रीय विकलांग संयोजित पुनर्वास केंद्र - **पटना**

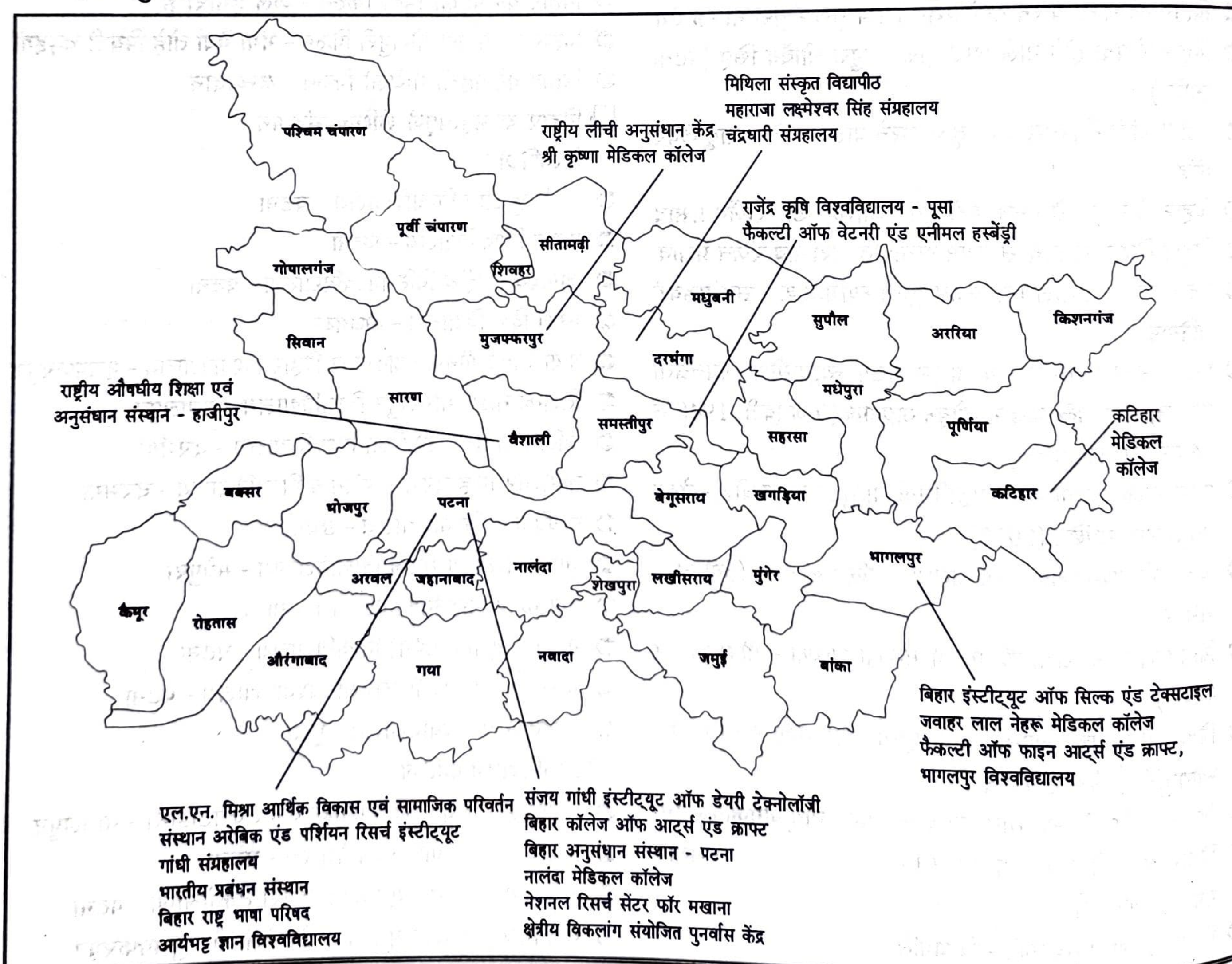

https://telegram.me/study_with_pdf

❑ बिहार के प्रमुख साहित्यकार

- बिहार के मुंगेर में जन्में **रामधारी सिंह 'दिनकर' स्वतंत्रता के पूर्व 'विद्रोही कवि' के नाम से जाने जाते थे, स्वतंत्रता के बाद वे 'राष्ट्र कवि' के रूप में जाने गए।** कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, हुंकार, रेणुका, हारे को हरिनाम, उर्वशी, परशुराम की प्रतिज्ञा तथा संस्कृति के चार अध्याय इनकी प्रमुख कृतियां हैं।
- 'राजनीति रत्नाकर' के रचयिता चंदेश्वर ठाकुर थे।
- **ज्योतिरेश्वर ठाकुर ने 'वर्णरत्नाकर' (1324 ई.) की रचना की, जो मैथिली की प्रथम पुस्तक है।**
- 18वीं सदी की कृति रियाज-उस-सलातीन के अनुवादक अवदुस सलम हैं।
- मुल्ला तकिया की कृति बयाज (Bayaz) उत्तर बिहार के इतिहास का एक महत्वपूर्ण विश्वसनीय अध्ययन स्रोत है।
- रिज उल्लाह मुस्ताकी ने अपनी कृति वाकियात-ए-मुस्ताकी में लिखा है सारण और चंपारण के जागीरदार हुसेन फर्मूली ने गंडक नदी पार कर चंपारण के राजा को उसके दुर्ग में ही दबोच लिया।
- **ज्योतिरेश्वर की कृति वर्णरत्नाकर यह पुस्तक मिथिला के समाज का सजीव चित्रण करती है।**
- विद्यापति (साहित्य अकादमी के अनुसार 1352-1448 ई. जबकि NCERT के अनुसार 1380-1460 ई.) ने भी समाज का वर्णन किया है।
- **विद्यापति** - दरभंगा (वर्तमान मधुबनी) के बिसपी ग्राम में जन्म, श्रृंगार रस के प्रसिद्ध कवि । महाकवि 'विद्यापति' मैथिली भाषा के सर्वप्रथम कवियों में से एक है।
- दरभंगा की मैथिली साहित्य परिषद ने 'मैथिल डाका' के नाम से लोक कवि डाका और घाघा की कृतियों का प्रकाशन किया है।
- इसमें उत्तर भारत में कृषि कार्य में लगे आर्यों का वर्णन है।
- मिथिलांचल में डाका को ब्रह्ममिहिर का पुत्र माना गया है, जो प्रकृति के लक्षणों विशेषतः सूखा या बाढ़ की भविष्यवाणी करने की क्षमता रखता था।
- 22 मार्च, 2018 को बिहार के 106वें स्थापना दिवस के अवसर पर पटना के गांधी मैदान में उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू ने महात्मा गांधी के जीवन और उनके विचार पर केंद्रित पुस्तकों का विमोचन किया, जिसमें विंध्याचल प्रसाद द्वारा लिखित उपन्यास 'नील के धब्बे' भी शामिल है।
- सदल मिश्र बिहार के एकमात्र अध्यापक थे, जिन्हें फोर्ट विलियम कॉलेज में देशी भाषाओं में पुस्तक निर्माण हेतु चयनित किया गया था।
- बिहार की राजभाषा हिंदी है तथा उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा वर्ष 1984 में प्रदान किया गया था। गुरु प्रसाद सेन ने वर्ष 1875 में बिहार के सर्वप्रथम अंग्रेजी अखबार 'दि बिहार हेराल्ड' को प्रकाशित किया।
- दि सर्चलाइट' दैनिक अखबार ने भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के प्रमुख आंदोलनों यथा-सविनय अवज्ञा आंदोलन व भारत छोड़ो आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई। बिहार का सर्वप्रथम उर्दू अखबार आरा से प्रकाशित हुआ, जिसका शीर्षक 'नुरुल अन्वार' था। दरभंगा के महाराजा कामेश्वर सिंह ने वर्ष 1931 में 'दि इंडियन नेशन' की स्थापना की थी।
- बिहार का पहला हिंदी समाचार-पत्र 'बिहार बंधु' था, जो सर्वप्रथम 1872 ई. में पंडित केशव रामभट्ट तथा पंडित मदन मोहन भट्ट के सहयोग से 'बिहार-बंधु' नामक साप्ताहिक पत्र बिहारशरीफ से निकाला जाता था। 1874 ई. में यह पटना से प्रकाशित होने लगा।

➲ साहित्यकार		रचनाएं
1. कौटिल्य	-	अर्थशास्त्र
2. अश्वघोष	-	बुद्धचरित
3. आर्यभट्ट	-	आर्यभट्टीयम, दशगीतिसूत्रम
4. बाणभट्ट	-	कादंबरी, हर्षचरित, चंडीशतक
5. विद्यापति	-	पदावली, कीर्तिलता, कीर्तिपताका
6. वात्स्यायन	-	कामसूत्रम्
7. मंडन मिश्र	-	ब्रह्म सिद्धि, विधि विवेक
8. नारायण पंडित	-	हितोपदेश
9. नागार्जुन	-	बटेसरनाथ, पारो
10. देवकीनंदन खत्री	-	चंद्रकांता, चंद्रकांता संतति, भूतनाथ, नौलखा हार
11. रामधारी सिंह 'दिनकर'	-	उर्वशी, रेणुका, रश्मिरथी, हुंकार, परशुराम की प्रतिक्षा
12. फणीश्वरनाथ 'रेणु'	-	मैला आंचल, जुलूस, पलटू बाबू रोड, मारे गए गुलफाम (तीसरी कसम), दीर्घतपा
13. डॉ. राजेंद्र प्रसाद	-	'इंडिया डिवाइडेड', बापू के कदमों में, चंपारण में सत्याग्रह
14. शिवसागर मिश्र	-	दूब जनम आयी

❑ महत्वपूर्ण व्यक्तित्व

- **प्राचीन बिहार**
- **याज्ञवल्क्य** - उपनिषद् कालीन ऋषि, राजा जनक की सभा के प्रधान दार्शनिक, याज्ञवल्क्य स्मृति के रचयिता।
- **महावीर** - जन्म ई.पू. 599, मृत्यु ई.पू. 527, जैन धर्म के वास्तविक प्रवर्तक, वैशाली के निकट कुंडग्राम में जन्म एवं पावापुरी (राजगीर के निकट) में मृत्यु।
- **महात्मा बुद्ध** - जन्म ई.पू. 563 (लुंबिनी में) एवं ई.पू. 483 में मृत्यु; बोधगया में ज्ञान प्राप्ति।
- **बृहद्रथ** - मगध के प्राचीनतम राजवंश बृहद्रथ वंश के संस्थापक।
- **जीवक** - जीवक मगध में हर्यंक वंश के वैद्य एवं चिकित्सक थे।
- **चाणक्य** - विष्णुगुप्त एवं कौटिल्य के नाम से प्रसिद्ध, चंद्रगुप्त मौर्य के राजनीतिक गुरु, अर्थशास्त्र के रचयिता।
- **पाणिनि** - मौर्यकालीन प्रसिद्ध व्याकरणशास्त्री; अष्टाध्यायी के रचयिता।

https://telegram.me/study_with_pdf

➲ **आर्यभट्ट** - आर्यभट्ट का जन्म 476 ई. में प्राचीन कुसुमपुर (आधुनिक पटना) में खगौल में हुआ था। दशमलव प्रणाली का आविष्कार किया।

➲ **अश्वघोष** - महान नाटककार, दार्शनिक आदि थे।

➲ **पुष्यमित्र शुंग** - 38 वर्षों तक मगध पर शासन किया; अश्वमेध यज्ञ कराया।

➲ **बाणभट्ट** - संस्कृत के विख्यात कवि बाणभट्ट हर्षवर्धन (सातवीं सदी में) के समकालीन थे। इनका जन्म बिहार में सोन नदी के किनारे प्रीतिकूट नामक नगर में हुआ था।

➲ **शांतिरक्षित** - 8वीं शताब्दी में पालकालीन बौद्ध विद्वान; नालंदा महाविहार के आचार्य; तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार किया।

➲ **मंडन मिश्र** - 9वीं सदी में मिथिला के प्रसिद्ध दार्शनिक एवं विद्वान, शंकराचार्य के साथ शास्त्रार्थ किया, 'ब्रह्म सिद्धि' महत्वपूर्ण रचना।

➲ **वाचस्पति मिश्र** - मधुबनी के गढ़ी गांव में जन्म, षड्दर्शन वल्लभ के नाम से प्रसिद्ध, भाष्य भामती की रचना की, प्रसिद्ध दार्शनिक।

❑ मध्यकालीन बिहार

*** बिहार के सुप्रसिद्ध संत शर्फुद्दीन मनेरी का संबंध सूफियों के फिरदौसी संप्रदाय से था।** उनका जन्म मनेर में 1262 ई. में और मृत्यु 1377 ई. में बिहार शरीफ में हुई। उन्होंने सुहरावर्दी की अरबी कृति 'अदब-उल-मुरीदीन' पर एक भाष्य लिखा। उनकी प्रसिद्ध कृति 'मकतुवाद-ए-शादी' में उद्धृत है।

➲ **मोहम्मद शाह नूहानी** - लोदी शासकों के काल में बिहार में अफगान सामंत, पानीपत की पहली लड़ाई (1526 ई.) के बाद बिहार में प्रथम स्वतंत्र अफगान राज्य का संस्थापक।

➲ **शेरशाह** - 1539 ई. से 1545 ई. तक भारत का शासक; दिल्ली पर शासन करने वाला प्रथम बिहारी शासक।

➲ **दाऊद खान** - बिहार एवं बंगाल के स्वतंत्र अफगान राज्य का अंतिम शासक, अकबर ने 1576 ई. में पराजित कर बिहार को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

➲ **गुरु गोविंद सिंह** - सिक्खों के दसवें गुरु , जन्म 5 जनवरी, 1666 को वर्तमान पटना साहिब में, पांच ककार एवं पाहुल प्रारंभ किया, खालसा पंथ के संस्थापक।

❑ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बिहार के शहीद

➡ **अब्बास अली**

➲ इन्होंने 1857 की क्रांति के दौरान बिहार में कुंवर सिंह के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया।

➲ 6 अगस्त, 1857 को कोर्ट मार्शल द्वारा फांसी की सजा का आदेश दिया गया ।

➡ **अब्दुल बारी**

➲ **जन्म** - 1892 ई. में शाहाबाद (वर्तमान जहानाबाद जनपद) के कंसुआ गांव में।

➲ **पिता का नाम** - मोहम्मद कुरबान अली

➲ पटना विश्वविद्यालय से स्नातक व परास्नातक की शिक्षा प्राप्त की तथा वर्ष 1921 में बिहार नेशनल कॉलेज (पटना) में प्रवक्ता पद पर नियुक्त हुए।

➲ डॉ. राजेंद्र प्रसाद व ए.एन. सिन्हा के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से सम्मिलित रहे।

➲ वर्ष 1937 में बिहार की प्रांतीय सरकार में डिप्टी स्पीकर के पद पर चुने गए।

➲ श्रमिकों की समस्या पर विचार करने तथा उनकी कार्यदशाओं में सुधार हेतु गठित बिहार श्रमिक जांच समिति में इन्हें उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। इस समिति के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद थे।

➲ टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी में श्रमिकों के शोषण के विरुद्ध आंदोलन किए।

➲ भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के दौरान इन्हें अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर हजारीबाग जेल में रखा।

➲ वर्ष 1946 में बिहार प्रदेश कांग्रेस समिति के अध्यक्ष पद पर चयनित हुए।

➲ **मृत्यु** - 28 मार्च, 1947 को।

➡ **अब्दुल शकूर**

➲ बिहार के दरभंगा जिले (वर्तमान समस्तीपुर) के मगरदही गांव के निवासी।

➲ भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रहे।

➲ **मृत्यु** - 15 अगस्त, 1942 को।

➡ **अद्‌या प्रसाद सिंह**

➲ बिहार के भागलपुर जिले के गांव बंगामा, पोस्ट बेल्हर के निवासी।

➲ 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गिरिवर सिंह नामक व्यक्ति को बेल्हर पुलिस थाने से भगाने के क्रम में 25 नवंबर, 1942 को पुलिस द्वारा इनकी हत्या कर दी गई।

➡ **अहदू खान**

➲ बिहार के भागलपुर जिले के निवासी।

➲ 1857 की क्रांति के दौरान गिरफ्तार हुए तथा 10 अक्टूबर, 1857 को फांसी दे दी गई।

➡ **अहमदुल्ला**

➲ पटना निवासी अहमदुल्ला वहाबी आंदोलन में शामिल होने के कारण इन्हें 1864 में गिरफ्तार कर अंडमान द्वीपसमूह में आजीवन निर्वासित कर दिया गया।

➲ **मृत्यु** - 21 नवंबर, 1881 को

➡ **अक्ली देवी**

➲ बिहार के शाहाबाद जिले के लसादी/लसाधी गांव की निवासी थीं।

➲ भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 15 सितंबर, 1942 को पुसिल द्वारा हुई गोलीबारी के दौरान मृत्यु हो गई।

➲ **अक्लू शाह**

➲ बिहार के दरभंगा जिले (आधुनिक मधुबनी) के सूरतगंज मोहल्ला के निवासी थे।

➲ 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मधुबनी थाने के घेराव के क्रम में पुलिस गोलीबारी में मृत्यु।

https://telegram.me/study_with_pdf

➡ **अमर सिंह**

- बिहार के शाहाबाद जिले के जगदीशपुर गांव के निवासी।
- **पिता का नाम** - शाहिबजादा सिंह
- इन्होंने अपने बड़े भाई कुंवर सिंह के साथ 1857 की क्रांति के दौरान संघर्ष किया।
- **कुंवर सिंह** की मृत्यु के बाद इन्होंने विद्रोह का नेतृत्व किया।
- विद्रोह के दमन के उपरांत अमर सिंह नेपाल चले गए।
- अंग्रेजों ने इन्हें नेपाल तराई से गिरफ्तार कर गोरखपुर जेल में रखा था।
- 5 फरवरी, 1860 को पेचिश रोग के कारण गोरखपुर अस्पताल में इनकी मृत्यु हो गई।

असर्फी मंडल

- बिहार के कस्तीकरी, सुल्तानगंज, भागलपुर के निवासी।
- 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय रहे।
- 15 फरवरी, 1932 को 'झंडा सत्याग्रह दिवस' मनाने के उद्देश्य से लगभग 4000 की भीड़ के साथ तारापुर पुलिस स्टेशन पर एकत्रित हुए।
- पुलिस द्वारा भीड़ पर अंधाधुंध गोलीबारी में बुरी तरह से घायल होने के कारण 21 फरवरी, 1932 को मुंगेर सदर अस्पताल में इनकी मृत्यु हो गई।

➡ **अशराफी मंडल**

- ये बिहार के भागलपुर जिले के मलखानपुर गांव के निवासी।
- 1942 में ब्रिटिश-भारतीय सेना के सूबेदार पद से त्यागपत्र देकर इंडियन नेशनल आर्मी में शामिल हो गए।
- इंडियन नेशनल आर्मी के प्रथम बहादुर ग्रुप में 2nd लेफ्टीनेंट के पद पर ये कार्यरत रहे।

➡ **बाबू महतो**

- ये बिहार के मुंगेर जिले के निवासी थे।
- 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 'सियाराम' नामक उग्रवादी दल में शामिल होकर सोनबारसा पुलिस आउटपोस्ट पर एक छापेमारी में भाग लिए, जहां पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी में 28 अगस्त, 1942 को इनकी मृत्यु हो गई।

➡ **बिशुनदेव राय**

- ये पूर्व चंपारण के खरतारी गांव के निवासी थे।
- 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल हुए। 26 जनवरी, 1932 को मोतिहारी में कांग्रेस के एक प्रमुख आश्रम 'बजरिया पांडाल' में उग्र भीड़ के साथ कांग्रेस का झंडा फहराने पर पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी में इनकी मृत्यु हो गई।

➡ **देबी ओझा**

- ये बिहार के शाहाबाद जिले के रहने वाले थे।
- 1857 के विद्रोह के दौरान, कुंवर सिंह के सहयोगी के तौर पर इन्होंने विद्रोहियों के 2 डिवीजन का नेतृत्व किया।
- कुंवर सिंह द्वारा इन्हें शाहाबाद में स्थापित सरकार में 400 गांवों का चौकीदार बनाया गया था।
- 1857 के विद्रोह के दमन के उपरांत ये नेपाल भाग गए जहां इनकी मृत्यु हो गई।

➡ **गंगा प्रसाद राय**

- ये बिहार के बधुलिया गांव के जिला सिवान के रहने वाले थे।
- पुलिस द्वारा 2 दिसंबर, 1930 को बरौलिया गांव में चौकीदारी टैक्स वसूलने के क्रम में उग्र भीड़ पर की गई गोलीबारी के दौरान ये घायल हुए तथा एक अस्पताल में इनकी मृत्यु हो गई।

➡ **भिखारी महतो**

- ये बिहार के पश्चिम चंपारण जिला से संबंधित थे।
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 22 अगस्त, 1942 को एक सरकारी इमारत पर कांग्रेसी झंडा फहराने के दौरान पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी में इनकी मृत्यु हो गई।

➡ **बिकान साह (मेहता)**

- ये पटना के निवासी थे। नमक सत्याग्रह में गांधीजी के साथ भाग लेने पर गिरफ्तार कर पटना कैंप जेल में रखे गए।

➡ **बैकुंठ शुक्ल**

- बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के जलाल गांव के निवासी थे। इनके पिता का नाम रामबिहारी शुक्ल था।
- नमक सत्याग्रह में भाग लेने के कारण वर्ष 1930 में जेल गए।
- 1930-34 के दौरान प्रमुख रूप से उत्तरी बिहार के क्रांतिकारी दलों के साथ सहयोग किए।
- इन्होंने चंद्रमा सिंह के साथ मिलकर द्वितीय लाहौर षड्यंत्र केस के सरकारी गवाह फणींद्रनाथ घोष की बेतिया में 9 नवंबर, 1932 को हत्या कर दी थी।
- बेतिया हत्या तथा विस्फोटक पदार्थ कानून के तहत इन्हें गिरफ्तार कर इन पर मुकदमा चलाया गया।
- अंतत: 14 अप्रैल, 1933 को इन्हें फांसी दे दी गई।

➡ **बन्दे अली**

- बन्दे अली पेशे से एक चपरासी थे, जो सारा जिले के एक न्यायालय में कार्यरत थे।
- 1857 के विद्रोह दौरान कुंवर सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े। अंततः इन्हें फांसी दे दी गई।

➡ **बचन बरिहार उर्फ शिवनंदन पात्रा**

- बिहार के दरभंगा जिले (वर्तमान समस्तीपुर) के रामपुर दुधपुरा गांव के निवासी थे।
- समस्तीपुर में एक मालगाड़ी पर पथराव करने पर पुलिस द्वारा की गई फायरिंग में 12 अगस्त, 1942 को मृत्यु हो गई।

➡ **बद्री मंडल**

- ये बिहार के मुंगेर जिले के धनपुरा गांव के निवासी थे।
- 15 फरवरी, 1932 को 'झंडा सत्याग्रह दिवस' मनाने के अवसर पर तारापुर पुलिस स्टेशन पर एकत्रित 4000 की भीड़ में शामिल हुए।
- इस भीड़ पर पुलिस द्वारा की गई अंधाधुंध गोलीबारी में इनकी मृत्यु हो गई।

https://telegram.me/study_with_pdf

➡ **हाजी मुबारक अली**

➲ ये बिहार के मुजफ्फरपुर (वर्तमान वैशाली) के रहने वाले थे।

➲ ये वहाबी आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक थे।

➲ 1871 ई. में गिरफ्तार कर जेल भेज दिए गए।

➡ **हरिकांत झा**

➲ ये बिहार के सहरसा जिले के रहने वाले थे।

➲ 29 अगस्त, 1942 को सहरसा के सुपौल ट्रेजरी की लूट के दौरान पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी में इनकी मृत्यु हो गई।

➡ **हीरा साहनी**

➲ ये बिहार के मुंगेर जिले के रेपुरा गांव के निवासी थे।

➲ 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में इन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया।

➲ मोकामा के निकट मालपुर में स्वराज सरकार स्थापित करने के उद्देश्य में पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी में शहीद हो गए।

➲ **फुलेना प्रसाद (गोपीनाथ श्रीवास्तव)**

➲ बिहार के वर्तमान सिवान जिले (तत्कालीन सारण) जिले के पचलखी गांव के निवासी थे।

➲ **पिता का नाम** - विन्ध्याचल प्रसाद

➲ भारत छोड़ो आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्ता, 16 अगस्त, 1942 को महाराजगंज थाने पर तिरंगा झंडा फहराने पर पुलिस द्वारा की गई अंधाधुंध गोलीबारी में इनकी मृत्यु हो गई।

➲ गोपीनाथ श्रीवास्तव के नाम पर घटना स्थल पर एक स्मारक का निर्माण किया गया है।

➡ **रामबाबू उर्फ भगत**

➲ बिहार के पटना जिले के रहने वाले थे ।

➲ हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के सदस्य ।

➲ बम बनाते समय घायल हुए, जिससे 6 अगस्त, 1931 को इनकी मृत्यु हो गई।

➲ **जयमंगल पांडेय**

➲ ये बिहार के खैरगांव/खीरगांव (आधुनिक झारखंड) के रहने वाले थे।

➲ ये 1857 के स्वतंत्रता संघर्ष के प्रमुख विद्राहियों में से एक थे।

➲ 2-3 अक्टूबर, 1857 को चतरा युद्ध (चतरा जेल के नजदीक) लड़े गए निर्णायक युद्ध में इन्होंने भाग लिया।

➲ इस युद्ध में विद्रोही पराजित हुए तथा 4 अक्टूबर, 1857 को जयमंगल पांडेय को एक अन्य विद्रोही नादिर अली खान के साथ मृत्युदंड दिया गया।

➲ चतरा के शहीद पार्क में ('मंगल तालाब' इसे फांसी तालाब के नाम से भी जाना जाता है) चतरा युद्ध के विद्रोहियों को फांसी दी गई थी।

➡ **काबी कैलाश सिंह**

➲ ये बिहार के शाहाबाद जिले के घोरादेई गांव के रहने वाले थे।

➲ इन्हें कैलाशपति सिंह के नाम से भी जाना जाता था।

➲ 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भीड़ के साथ आरा जिला कलेक्ट्रेट में ब्रिटिश विरोधी नारेबाजी के दौरान की गई पुलिस गोलीबारी में इनकी मृत्यु हो गई।

➡ **कुंवर सिंह**

➲ बिहार के शाहाबाद जिले के जगदीशपुर गांव में 1782 ई. में इनका जन्म हुआ।

➲ पिता का नाम - साहिबजादा सिंह

➲ इनके पिता जगदीशपुर रियासत के मालिक थे।

➲ 1857 की क्रांति में इन्होंने बढ़-चढ़ कर भाग लिया तथा जुलाई, 1857 तक इन्होंने जगदीशपुर को अंग्रेजों के नियंत्रण से शाहाबाद को मुक्त कराकर नए प्रशासनिक तंत्र को स्थापित किया।

➲ इस कार्य में कृष्ण सिंह ने आरा के नियंत्रण में इनका सहयोग किया।

➲ कुंवर सिंह ने खुद को शाहाबाद का शासक घोषित कर शेख गुलाम याह्या नामक मजिस्ट्रेट के अधीन आरा में दो थानों की स्थापना भी की।

➲ इस थाने में शेख मुहम्मद अजीमुद्दीन को जमादार व खादिम अली तथा तारूब अली को कोतवाल के तौर पर नियुक्त किया।

➲ लेकिन जल्द ही अंग्रेजों ने शाहाबाद को कुंवर सिंह से मुक्त करा लिया।

➲ क्रांति के दौरान नाना साहब द्वारा आमंत्रित किए जाने पर ये काल्पी भी गए।

➲ लखनऊ में बिरजिस कादिर से मिलने पर इन्हें आजमगढ़ पर अधिकार करने का **फरमान** प्राप्त हुआ।

➲ इन्होंने जल्द ही आजमगढ़ पर अधिकार प्राप्त कर लिया, परंतु इसी बीच इन्होंने जगदीशपुर लौटने का निर्णय किया।

➲ लौटने के दौरान इन्होंने अंग्रेजों से कई लड़ाइयां लड़ीं। इसी समय इन्होंने अपना एक हाथ भी लड़ाई में खो दिया।

➲ अप्रैल, 1858 में इन्होंने अपने कुछ सैनिकों की मदद से शाहाबाद में अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी।

➲ विभिन्न लड़ाइयों के दौरान लगे घावों की वजह से इनकी मृत्यु हो गई।

➡ **लम्बोदर मुखर्जी**

➲ तत्कालीन बिहार के संथाल परगना वर्तमान में झारखंड के रहने वाले थे।

➲ जिले के सफा-होर आंदोलन से संबंधित थे।

➲ फॉरवर्ड ब्लॉक का सदस्य होने के चलते दुमका क्षेत्र में इनकी गतिविधियों को ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया था।

➲ इनके कहने पर कदमा गांव के निवासियों (संथाल) ने 'भारत माता' की छवि की पूजा करनी शुरू कर दी।

➲ वर्ष 1942 में ब्रिटिश सरकार द्वारा इन्हें व इनके एक साथी सरबानन्द मिश्र को संथाल परगना से चले जाने का आदेश भेजा।

➲ 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान इन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा गया, जहां इनकी मृत्यु हो गई।

➡ **नारायण पांडेय**

➲ 1857 की क्रांति के दौरान बिहार में विभिन्न स्थानों पर अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किए।

https://telegram.me/study_with_pdf

- कंपनी के सैनिकों ने इन पर राजद्रोह का मुकदमा लगाकर मार्च, 1859 में अंडमान द्वीप भेज दिया, जहां जेल में रहते हुए जून, 1859 में इनकी मृत्यु हो गई।

पीर अली खान

- ये बिहार के पटना जिले के रहने वाले थे एवं पेशे से एक पुस्तक विक्रेता थे।
- पटना में 3 जुलाई, 1857 की क्रांति के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह में इनका प्रमुख योगदान था।

डॉ. ल्येल (बिहार के अफीम एजेंट के प्रमुख सहयोगी), जिनकी हत्या विद्रोहियों से एक मुठभेड़ के दौरान हुई थी, उनमें पीर अली खान थे।

- अंग्रेजों द्वारा इनके घर पर चलाए गए एक तलाशी अभियान में कानपुर व दिल्ली के विद्रोहियों को किए गए पत्र व्यवहार के कुछ अंश प्राप्त हुए।
- अंततः 7 जुलाई, 1857 को इन्हें फांसी दे दी गई।

राम बिन्द

- बिहार के मुंगेर जिले के रहने वाले थे।
- 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मालापुर गांव (मोकामा के नजदीक) में 'स्वराज सरकार' बनाने के विरुद्ध की गई पुलिस गोलीबारी में इनकी मृत्यु हो गई।

रामबुझावन ठाकुर

- ये बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बहेड़ा गांव के निवासी थे।
- भारत छोड़ो आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्ता।
- सीतामढ़ी के SDO की हत्या के दोषी।
- दिल का दौरा पड़ने से दरभंगा अस्पताल में मौत।

रामदेनी सिंह

- ये बिहार के सारन जिले के रहने वाले थे।
- हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (HSRA) के प्रमुख सदस्य।
- डाक (पोस्टल) बैग लूटने के इरादे से हाजीपुर स्टेशन पर किए गए हमले में गिरफ्तार हुए।

रामफल मंडल

- ये बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के रहने वाले थे।
- भारत छोड़ो आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्ता।
- पुरी बाजार में पुलिस के अत्याचार का बदला लेने के लिए सीतामढ़ी के SDO की हत्या के दोषी थे।
- हत्या के बाद 10 दिनों के लिए नेपाल भाग गए। वापस आने पर गिरफ्तार हुए व फांसी दी गई।

सतीश प्रसाद झा

- ये बिहार के भागलपुर जिले के खरहरा गांव के रहने वाले थे।
- कक्षा 10 के छात्र रहते हुए 11 अगस्त, 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान पटना सचिवालय भवन पर तिरंगा फहराने के दौरान पुलिस द्वारा भीड़ पर की गई गोलीबारी में बुरी तरह घायल हुए थे।

वजीर खान (डॉक्टर)

- 1857 के विद्रोह में सक्रिय तौर पर भाग लिया।
- विद्रोहियों द्वारा क्रांति के दौरान दिल्ली में सरकार बनाए जाने पर इन्हें आगरा प्रांत के गवर्नर पद पर नियुक्त किया गया।
- सितंबर, 1857 में दिल्ली पर पुनः अंग्रेजों का कब्जा होने पर ये मक्का भाग गए और वहीं निर्वासित जीवन व्यतीत करते हुए इनकी मृत्यु हो गई।

याह्या अली

- **पिता का नाम** - इलाही बख्श
- वहाबी आंदोलन में सक्रिय तौर पर शामिल हुए।
- आगे चलकर गिरफ्तार हुए व अंडमान द्वीप में निर्वासित जीवन व्यतीत करते हुए इनकी मृत्यु हो गई।

वारिस अली

- बिहार के पटना जिले के निवासी।
- ये पेशे से एक बड़े जमींदार थे।
- 1857 की क्रांति के दौरान इन्होंने विद्रोहियों को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध लड़ने का निर्देश दिया।
- आगे चलकर पकड़े जाने पर इन्हें फांसी दे दी गई।
- **दीवान शेख मिरवारी** - हजारीबाग क्षेत्र में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया।
- **राजा अर्जुन सिंह** - सिंहभूम (वर्तमान झारखंड) से 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया।
- **तिलका मांझी** - आदिवासी विद्रोही के नाम से प्रसिद्ध; 1784-85 ई. में राजमहल क्षेत्र में तिलका आंदोलन किया; अंग्रेज पुलिस अधीक्षक क्लीवलैंड को घायल किया; 1785 ई. में भागलपुर में फांसी।
- **बुद्धू भगत** - ये उरांव जनजाति के थे, 1831-32 ई. के कोल विद्रोह के महानायक।
- **सिदो कान्हू** - 1855-56 ई. में हुए संथाल विद्रोह के नायक।
- **भागीरथ मांझी** - 1874 ई. में हुए खरवार विद्रोह के नायक।
- **बिरसा मुंडा** - मुंडा विद्रोह या उलगुलान के जनक; 15 नवंबर, 1875 को उलिहातु में जन्म; 3 मार्च, 1900 को सिंहभूम (चक्रधरपुर) से पकड़े गए एवं 9 जून, 1900 को रांची जेल में हैजे से मृत्यु।
- **जतरा भगत** - ताना भगत आंदोलन के जनक; अप्रैल, 1914 में आंदोलन की शुरुआत।
- **नीलांबर-पीतांबर** - 21 अक्टूबर, 1857 को इन दोनों भाइयों के नेतृत्व में खेरवार, चेरो और भगतों ने पलामू में विद्रोह किया। 1859 ई. में इन्हें लेस्लीगंज में फांसी दे दी गई।
- **हसन इमाम** - वरिष्ठ बैरिस्टर एवं राष्ट्रवादी नेता; कलकत्ता उच्च न्यायालय में प्रथम बिहारी न्यायाधीश; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष (चौथे मुस्लिम अध्यक्ष) वर्ष 1918 के बंबई अधिवेशन; बिहार एवं उड़ीसा विधान परिषद के सदस्य (1921); बिहार कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष (1909); खिलाफत आंदोलन में भाग लिया, सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान बिहार में 'स्वदेशी लीग' के सचिव बने।
- **मौलाना मजहरुल हक** - पटना के समीप ब्रह्मपुर में जन्म; इंग्लैंड से बैरिस्टरी की पढ़ाई की; मुस्लिम लीग के बंबई अधिवेशन के

https://telegram.me/study_with_pdf

अध्यक्ष (1915); होमरूल आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, असहयोग आंदोलन में सक्रिय; पटना में सदाकत आश्रम की स्थापना की; बिहार विद्यापीठ के संस्थापक कुलाधिपति; 'द मदरलैंड' नामक समाचार-पत्र के प्रकाशक; गांधीजी ने इन्हें 'देशभूषण' कहा था।

- **सर सुल्तान अहमद** - विधिशास्त्री; पटना विश्वविद्यालय के प्रथम भारतीय कुलपति; वायसराय की कार्यकारी परिषद के सदस्य (1937)।
- **सच्चिदानंद सिन्हा** - जन्म - 10 नवंबर, 1871 (आरा); मृत्यु - 6 मार्च, 1950 ; प्रसिद्ध पत्रकार एवं विधिवेत्ता; बिहार एवं उड़ीसा सरकार के प्रथम भारतीय वित्त मंत्री; बिहार विधान परिषद के प्रथम भारतीय अध्यक्ष; पटना विश्वविद्यालय के कुलपति; भारतीय संविधान सभा के प्रथम अध्यक्ष (अस्थायी); सिन्हा लाइब्रेरी (पटना) के संस्थापक।
- **डॉ. राजेंद्र प्रसाद** - जन्म 3 दिसंबर, 1884 को सारण (वर्तमान सिवान) के जीरादेई ग्राम में; बिहारी छात्र सम्मेलन के संस्थापक (1906) ; 'बिहार लॉ' साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन; राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष (3 बार); संविधान सभा के अध्यक्ष (स्थायी); देश के प्रथम राष्ट्रपति ; मृत्यु - 28 फरवरी, 1963 को सदाकत आश्रम (पटना) में।
- **खान बहादुर खुदाबख्श खां** - खुदाबख्श लाइब्रेरी (पटना) के संस्थापक; पांडुलिपियों के संग्रहकर्ता; वर्ष 1969 में संसद ने इस लाइब्रेरी को राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित की।
- **सर सैयद अली इमाम** - विधिवेत्ता; भारत सरकार के स्थायी विधि परामर्शदाता (1908); इस पद पहुंचने वाले प्रथम बिहारी; पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश (1917); हैदराबाद राज्य के मुख्यमंत्री (1919
- **योगेंद्र शुक्ल** - वैशाली में जन्मे स्वाधीनता सेनानी ; वर्ष 1931 के तिरहुत षड्यंत्र कांड एवं मोतिहारी कांड में अभियुक्त; गया जेल, अंडमान जेल एवं हजारीबाग जेल में सजा काटे; 9 नवंबर, 1942 को जयप्रकाश नारायण के साथ हजारीबाग जेल से फरार; अखिल भारतीय किसान सभा केंद्रीय कमेटी के सदस्य रहे; वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया; बिहार विधान परिषद के सदस्य रहे।
- **राजकुमार शुक्ल** - चंपारण के प्रसिद्ध कृषक नेता; वर्ष 1916 में महात्मा गांधी को चंपारण आने का न्यौता दिया था।
- **जगत नारायण लाल** - प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी एवं जयप्रकाश नारायण के सहयोगी; वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया; 13 सितंबर, 1942 को गिरफ्तार कर बांकीपुर जेल भेज दिया गया।
- **श्री नरसिंह नारायण** - समाजवादी नेता एवं स्वतंत्रता सेनानी; भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जेल से फरार ; 14 नवंबर, 1942 को गया से गिरफ्तार।
- **जयप्रकाश नारायण** - सिताबदियारा (सारण) गांव में 11 अक्टूबर, 1902 को जन्मे जयप्रकाश नारायण समाजवादी नेता थे। विस्कोंसिन यूनिवर्सिटी (अमेरिका) से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया; वर्ष 1934 में बिहार सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया, वे महासचिव बने एवं आचार्य नरेंद्र देव अध्यक्ष बने। 9 नवंबर, 1942 को हजारीबाग जेल से फरार। वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई; नेपाल से आजाद दस्ता चलाया।
- वर्ष 1952 में सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया; वर्ष 1954 में विनोबा भावे के भूदान आंदोलन से जुड़े; 5 जून, 1974 को 'संपूर्ण क्रांति' की घोषणा की; 25 जून, 1975 को आपातकाल के दौरान उन्हें नजरबंद रखा गया; लोकनायक के नाम से प्रसिद्ध।
- **अनुग्रह नारायण सिंह** - औरंगाबाद के पोइवान गांव में जन्म; असहयोग आंदोलन के दौरान बिहार के प्रमुख नेता; वर्ष 1946 से 1957 तक राज्य में मंत्री बने।
- **श्रीकृष्ण सिन्हा** - 21 अक्टूबर, 1887 को मुंगेर के बरबीघा में जन्म; स्वतंत्र भारत में बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री; बिहार केसरी के नाम से प्रसिद्ध; बिहार में नमक सत्याग्रह में अग्रणी भूमिका ।
- **जगजीवन राम** - 5 अप्रैल, 1908 को शाहाबाद (वर्तमान भोजपुर) में जन्म; वर्ष 1937 में बिहार में प्रथम कांग्रेस मंत्रिमंडल से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इंदिरा गांधी तक के मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री रहे।
- **अब्दुल बारी** - 1896 ई. में शाहाबाद के कोइलवर में जन्म; खिलाफत आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई; बिहार विद्यापीठ में प्रोफेसर; वर्ष 1923 में स्वराज पार्टी के बिहार शाखा के सचिव; वर्ष 1930 में बिहार विधान परिषद को सदस्य चुने गए; श्रमिक आंदोलन से जुड़े रहे; वर्ष 1931 में बिहार समाजवादी दल के संस्थापक सदस्यों में एक रहे।
- श्री निवारण चंद्र दास गुप्ता का जन्म वर्तमान बांग्लादेश के विक्रमपुर में हुआ था। यह बिहार के पुरुलिया जिला स्कूल के हेडमास्टर थे। इनकी कर्मभूमि तत्कालीन बिहार का पुरुलिया जिला ही रहा।

❑ बिहार के प्रसिद्ध व्यक्तित्व एवं उनसे संबंधित स्थल

- वर्द्धमान महावीर - कुंडग्राम
- चाणक्य/कौटिल्य - पाटलिपुत्र
- चंद्रगुप्त मौर्य - पाटलिपुत्र
- अश्वघोष - पाटलिपुत्र
- आर्यभट्ट - पाटलिपुत्र
- शेरशाह - सासाराम

❑ प्रसिद्ध व्यक्ति एवं उनके उपनाम

- कुंवर सिंह - बाबू
- डॉ. राजेंद्र प्रसाद - देशरत्न, अजातशत्रु
- डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा - बिहार केसरी
- जयप्रकाश नारायण - लोकनायक
- डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह - बड़े साहब, बिहार विभूति
- जगजीवन राम - बाबूजी
- रामधारी सिंह 'दिनकर' - राष्ट्रकवि
- सत्येंद्र नारायण सिंह - छोटे साहब
- वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' - नागार्जुन , बाबा

https://telegram.me/study_with_pdf

❑ प्रमुख व्यक्ति एवं जन्मस्थल

व्यक्ति		जन्म स्थल
➲ बाबू कुंवर सिंह	-	जगदीशपुर, शाहाबाद (वर्तमान भोजपुर)
➲ गुरु गोविंद सिंह	-	पटना सिटी (पटना)
➲ डॉ. राजेंद्र प्रसाद	-	जीरादेई, सारण (वर्तमान सिवान)
➲ जयप्रकाश नारायण	-	सिताबदियारा, सारण (वर्तमान छपरा)
➲ फणीश्वर नाथ 'रेणु'	-	औराही हिंगना, पूर्णिया (वर्तमान अररिया)
➲ विद्यापति	-	बिसपी, दरभंगा (वर्तमान मधुबनी)
➲ रामधारी सिंह 'दिनकर'	-	सिमरिया, मुंगेर (वर्तमान बेगूसराय)
➲ डॉ. श्रीकृष्ण सिन्हा	-	बरबीघा (मुंगेर)
➲ पंडित मंडन मिश्र	-	महिषी (सहरसा)
➲ अनुग्रह नारायण सिंह	-	पोइवान (औरंगाबाद)
➲ जगजीवन राम	-	चंदवा, शाहाबाद (वर्तमान भोजपुर)
➲ आचार्य शिवपूजन सहाय	-	उन्नवास, शाहाबाद (वर्तमान भोजपुर)

❑ प्रसिद्ध महोत्सव

महोत्सव		स्थल
➲ वाल्मीकि महोत्सव	-	बेतिया , पश्चिम चंपारण
➲ नंदनगढ़ महोत्सव	-	बेतिया, पश्चिम चंपारण
➲ केसरिया महोत्सव	-	मोतिहारी, पूर्वी चंपारण
➲ विद्यापति महोत्सव	-	विद्यापति नगर, समस्तीपुर
➲ दशरथ मांझी लोक उत्सव	-	गया
➲ वीर कुंवर सिंह विजयोत्सव	-	आरा
➲ अंग महोत्सव	-	मुंगेर
➲ हरिहर क्षेत्र महोत्सव	-	सोनपुर
➲ विश्वामित्र महोत्सव	-	बक्सर
➲ ब्रह्मपुर महोत्सव	-	बक्सर
➲ अम्बे उत्सव	-	औरंगाबाद
➲ जयप्रकाश नारायण महोत्सव	-	सिताबदियारा, सारण
➲ दिनकर साहित्य उत्सव	-	सिमरिया, बेगूसराय
➲ किन्नर महोत्सव	-	पटना
➲ महनार महोत्सव	-	वैशाली
➲ जयमंगला गढ़ महोत्सव	-	बेगूसराय
➲ उस्ताद बिस्मिल्ला खां महोत्सव	-	डुमरांव
➲ पावापुरी महोत्सव	-	नालंदा
➲ होलिका, दीनाभद्री, पुरैनिया महोत्सव	-	पूर्णिया
➲ मंजूषा महोत्सव	-	भागलपुर
➲ सिंहेश्वर मेला	-	मधेपुरा
➲ सिमरिया कुंभ	-	बेगूसराय
➲ वाचस्पति महोत्सव	-	मधुबनी
➲ सीताकुंड महोत्सव	-	सीताधाम, पूर्वी चंपारण
➲ गजना महोत्सव	-	नवीनगर, औरंगाबाद

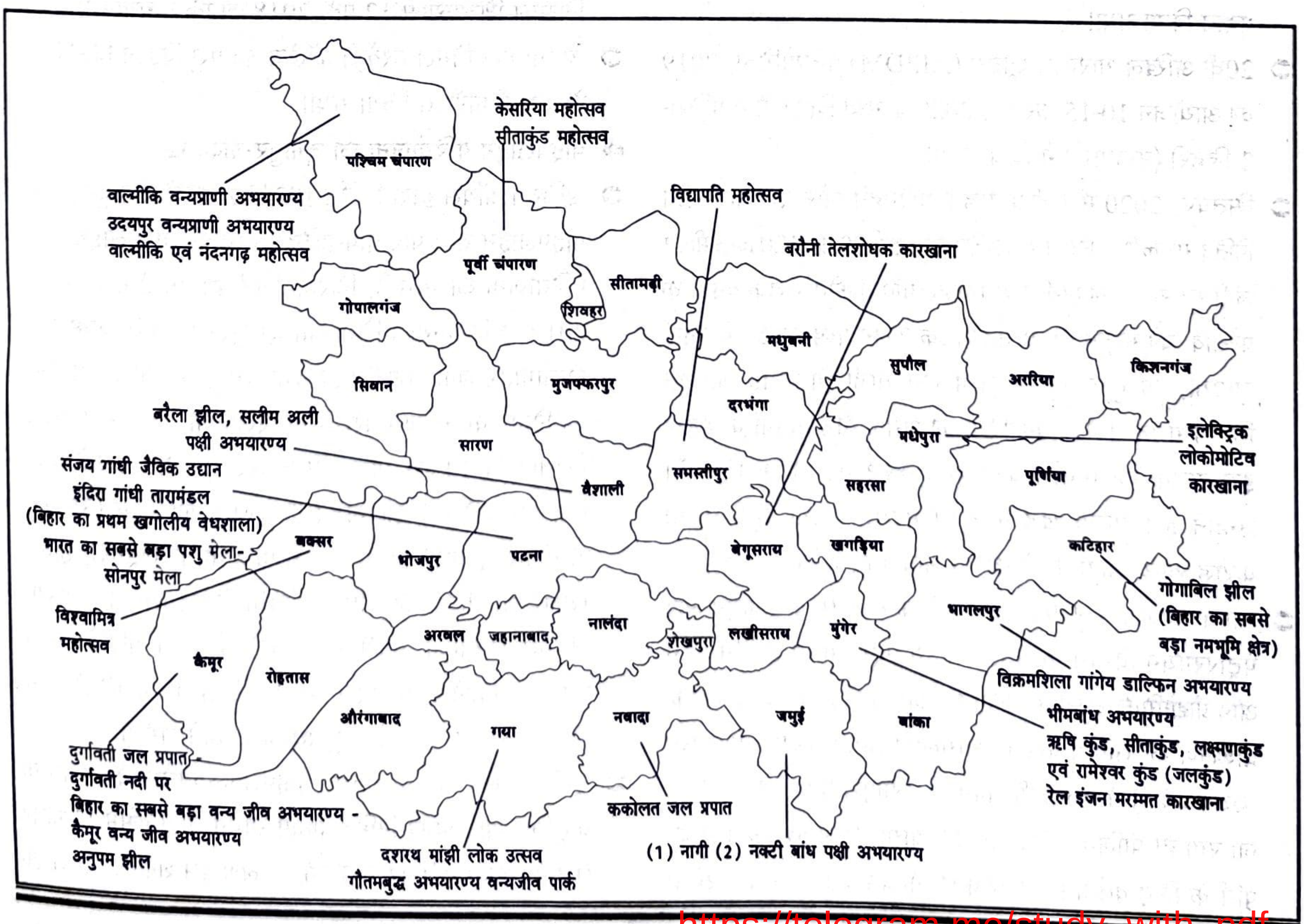

https://telegram.me/study_with_pdf

- 29 अप्रैल, 2020 को बिहार मंत्रिपरिषद ने 'विकसित बिहार के सात निश्चय' के अंतर्गत स्वीकृत 33 मुख्यमंत्री निश्चय पैरामेडिकल संस्थानों में से 5 जिलों-नालंदा (वर्द्धमान आयुर्विज्ञान संस्थान कैम्पस), सिवान, बांका, समस्तीपुर एवं रोहतास में निर्मित/निर्माणाधीन पैरामेडिकल संस्थान के स्थान पर फार्मेसी महाविद्यालय के स्थापना की स्वीकृति प्रदान की।
- 8 अप्रैल, 2020 को बिहार मंत्रिपरिषद ने सीतामढ़ी जिला के अंतर्गत नगर परिषद सीतामढ़ी, नगर पंचायत डुमरा एवं निकटवर्ती 17 मौजों के क्षेत्रों को मिलाकर नगर निगम सीतामढ़ी घोषित करने की घोषणा की।
- 8 मार्च, 2020 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने बीना देवी एवं भावना कंठ को 'नारी शक्ति पुरस्कार' से सम्मानित किया।
- मशरूम महिला के रूप में प्रसिद्ध बीना देवी मुंगेर की एवं भारतीय वायु सेना की प्रथम महिला फाइटर पायलट भावना कंठ दरभंगा की हैं।
- 8 फरवरी, 2020 को मुंबई में आयोजित 23वें राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस सम्मेलन में जिला प्रशासन, सहरसा को लोक सेवाओं में ई-गवर्नेंस के माध्यम से नागरिकों को विभिन्न योजनाओं का लाभ पहुंचाने में उत्कृष्ट एवं नवाचारी योगदान के लिए सिल्वर अवॉर्ड प्रदान किया गया।
- 20वीं अखिल भारतीय शूटिंग (AIPDM) प्रतियोगिता, 2019 का आयोजन 10-15 फरवरी, 2020 के मध्य बिहार सैन्य पुलिस-2 डिहरी (रोहतास) में किया गया।
- सितंबर, 2020 में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बिहार में राष्ट्रीय राजमार्ग 80 पर 120 किलोमीटर लंबी मुंगेर-भागलपुर-तिरपति-कहलगांव कंक्रीट सड़क बनाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। यह सड़क 2 लेन पेव्ड शेल्डर में बनाई जाएगी, जो कुछ जगहों पर 4 लेन चौड़ी भी बनाई जाएगी। नितिन गडकरी ने अधिकारियों को अगले तीन महीनों के भीतर इस सड़क का निर्माण कार्य शुरू करने का निर्देश दिया है। उन्होंने इस सड़क खंड के तुरंत मरम्मत कार्यों के लिए 20 करोड़ रुपये जारी करने का भी आदेश दिया है।
- भारत सरकार के रसायन और उर्वरक मंत्रालय के रसायन और पेट्रोरसायन विभाग के अधीन केंद्रीय पेट्रोरसायन इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थान ''सिपेट'' कौशल विकास और तकनीकी प्रशिक्षण की सुविधा के लिए भागलपुर (बिहार) और वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में जल्दी ही अपने दो ''सीएसटीएस' केंद्र खोलने जा रहा है। पॉलिमर और संबद्ध उद्योगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वर्तमान में ''सिपेट'' के 43 केंद्र काम कर रहे हैं और 9 और खुलने की प्रक्रिया में हैं। संस्थान राष्ट्र के प्रति अपनी समर्पित सेवाओं के 50 वर्ष पूरे कर चुका है। वर्तमान में इसके पॉलिमर साइंस, इंजीनियरिंग और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र मे कौशल विकास और तकनीकि सहयोग का प्रशिक्षण प्रदान करने वाले 31 सीएसटीएस केंद्र हैं जहां डिप्लोमा, स्नातकोत्तर डिप्लोमा स्तर के कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।
- **प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से 13 सितंबर 2020 को बिहार में पेट्रोलियम क्षेत्र से जुड़ी तीन प्रमुख परियोजनाएं राष्ट्र को समर्पित किया।**
- इस कार्यक्रम में राज्यपाल फागू चौहान के साथ मुख्यमंत्री नितीश कुमार ने भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भाग लिया।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना का शुभारंभ करने के साथ ही बिहार के लिए केंद्र स्वीकृत मात्स्यिकी विकास परियोजनाओं का भी उद्घाटन किया। साथ ही किसानों के लिए ई-गोपाला ऐप, पूर्णिया में पशु वीर्य केंद्र, बरौनी से अत्याधुनिक नस्ल सुधार तकनीक की शुरुआत एवं बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना में आई.बी.एफ. लैब का उद्घाटन किया गया।
- पूर्णिया के मरंगा में सिमेन स्टेशन का उद्घाटन किया गया है जिसका शिलान्यास 12 मई, 2018 को किया गया था।
- पटना के एनिमल हस्बेंड्री कॉलेज को पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के रूप में परिणत किया गया।

➡ पाइपलाइन परियोजना का दुर्गापुर-बांका खंड

- इंडियन ऑयल द्वारा निर्मित 193 किलोमीटर लंबा दुर्गापुर-बांका पाइपलाइन खंड पारादीप-हल्दिया-दुर्गापुर पाइपलाइन विस्तार परियोजना का भाग है, जिसके लिए प्रधानमंत्री ने 17 फरवरी, 2019 को शिलान्यास किया था। दुर्गापुर-बांका खंड वर्तमान 679 किलोमीटर लंबी पारादीप-हल्दिया-दुर्गापुर एलपीजी पाइपलाइन का बिहार के बांका में स्थित नए एलपीजी बॉटलिंग संयंत्र तक विस्तार है। 14 इंच व्यास की पाइपलाइन तीन राज्यों पश्चिम बंगाल (60 किमी.), झारखंड (98 किमी.) और बिहार (35 किमी.) से होकर गुजरती है। वर्तमान में पारादीप रिफाइनरी, हल्दिया रिफाइनरी और आईपीपीएल हल्दिया से पाइपलाइन व्यवस्था के अंतर्गत एलपीजी डाली जा सकती है। इस परियोजना का निर्माण पूरा होने पर पारादीप इम्पोर्ट टर्मिनल और बरौनी रिफाइनरी से भी एलपीजी इंजेक्शन सुविधा प्राप्त होने लगेगी।
- दुर्गापुर-बांका खंड के अंतर्गत पाइपलाइन बिछाने के दौरान कई प्राकृतिक और मानव निर्मित बाधाएं सामने आईं। इसमें 13 नदियों (जिनमें अजय नदी पर 1077 मीटर लंबा पुल शामिल), 5 राष्ट्रीय

https://telegram.me/study_with_pdf

राजमार्गों और 3 रेलवे क्रॉसिंग सहित कुल 154 क्रॉसिंग पुलों का निर्माण करना पड़ा। पाइपलाइन अनूठी होरिजोंटल डायरेक्शनल ड्रिलिंग तकनीक से नदी के भीतर से गुजारी गई, इसके लिए जल प्रवाह को बाधित नहीं करना पड़ा।

➡ एलपीजी बॉटलिंग संयंत्र, बांका, बिहार

- इंडियन ऑयल के बांका स्थित एलपीजी बॉटलिंग संयंत्र से राज्य में एलपीजी की बढ़ती मांग को पूरा करने से बिहार की 'आत्म निर्भरता' बढ़ेगी। बिहार के भागलपुर, बांका, जमुई, अररिया, किशनगंज और कटिहार जिलों को सेवाएं देने के लिए 131.75 करोड़ रुपये के निवेश से इस बॉटलिंग संयंत्र का निर्माण किया गया है, साथ ही इससे झारखंड के गोड्डा, देवघर, दुमका, साहिबगंज और पाकुर जिलों को भी आपूर्ति होगी। 1800 एमटी की एलपीजी भंडारण क्षमता और प्रति दिन 40,000 सिलिंडरों की बॉटलिंग क्षमता के साथ यह संयंत्र बिहार में बड़ी संख्या में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा करेगा।

➡ पूर्वी चंपारण (हरसिद्धि), बिहार में एलपीजी संयंत्र

- 136.4 करोड़ रुपये के निवेश से पूर्वी चंपारण जिले के हरसिद्धि में एचपीसीएल के 120 टीएमटीपीए एलपीजी बॉटलिंग संयंत्र का निर्माण किया गया है। इस संयंत्र का निर्माण 29 एकड़ जमीन पर किया गया है और प्रधानमंत्री द्वारा 10 अप्रैल, 2018 को इसका शिलान्यास किया गया था। बॉटलिंग संयंत्र से बिहार के पूर्वी चंपारण, पश्चिम चंपारण, मुजफ्फरपुर, सिवान, गोपालगंज और सीतामढ़ी जिलों की एलपीजी की आवश्यकताएं पूरी होंगी।

➡ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बिहार में मछली उत्पादन, डेयरी, पशुपालन और कृषि में अध्ययन एवं अनुसंधान से संबंधित पीएम मत्स्य सम्पदा योजना, ई-गोपाला ऐप और कई पहलों का शुभारंभ किया।

- **मत्स्य सम्पदा योजना** -20,000 करोड़ रुपये के निवेश के साथ इस योजना का देश के 21 राज्यों में शुभारंभ किया गया। यह धनराशि अगले 4-5 वर्षों में निवेश की जाएगी। इसके अलावा, 1,700 करोड़ रुपये की अन्य परियोजनाएं भी शुरू की जा रही हैं। इस योजना के अंतर्गत पटना, पूर्णिया, सीतामढ़ी, मधेपुरा, किशनगंज और समस्तीपुर में कई सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।
- ई-गोपाला ऐप एक ऑनलाइन डिजिटल माध्यम होगा, जिससे किसानों को अच्छी गुणवत्ता के पशु चुनने में सहायता मिलेगी और बिचौलियों से मुक्ति मिलेगी। यह ऐप उत्पादकता से लेकर पशुओं के स्वास्थ्य और खुराक एवं देखभाल से संबंधित सभी जानकारी उपलब्ध कराएगा। उन्होंने कहा कि जब पशु आधार नंबर को ई-गोपाला ऐप में डालने का काम पूरा हो जाएगा तो जानवरों के बारे में सभी जानकारियां इससे हासिल की जा सकेंगी। इससे पशु मालिकों के लिए पशुओं को खरीदना और बेचना आसान हो जाएगा।

➡ 5वां अंतरराष्ट्रीय धर्म धम्म सम्मेलन

- 27-28 जुलाई, 2019 के मध्य 5वां अंतरराष्ट्रीय धर्मधम्म सम्मेलन राजगीर (बिहार) में आयोजित हुआ।
- 15 देशों से आए हुए लगभग 200 प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।
- इस सम्मेलन का उद्घाटन केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने श्रीलंका के गृह मंत्री जयविक्रम पेरेरा व भूटान के गृह व संस्कृति मंत्री ल्योंयो शेरब गेलशेन की उपस्थिति में किया।
- राजगीर (बिहार) में दूसरी बार यह सम्मेलन आयोजित किया गया।
- इस सम्मेलन का आयोजन नालंदा विश्वविद्यालय में किया गया।
- इस सम्मेलन का केंद्रीय विषय - 'सत् चित्त आनन्द व निर्वाण था', जो बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण विषय है।
- सम्मेलन के माध्यम से दुनिया में प्रचलित आतंक, हिंसा व ग्लोबल वार्मिंग के बारे में भी लोगों को संबोधित किया गया।

➡ फागू चौहान

- 29 जुलाई, 2019 को उ.प्र. विधानसभा के 6 बार सदस्य रह चुके फागू चौहान ने बिहार के राज्यपाल (40 वें) के पद की शपथ ली।
- पटना उच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश अमरेश्वर प्रताप साही ने उन्हें राज्यपाल पद की शपथ दिलाई।
- इन्होंने इस पद पर पूर्व राज्यपाल लालजी टंडन का स्थान लिया।
- फागू चौहान जी का जन्म वर्ष 1948 में उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में हुआ था।

➡ कर्पूरी देवी

- मधुबनी चित्रकला व सुजनी कला की प्रख्यात कलाकार कर्पूरी देवी का जुलाई, 2019 में निधन हो गया।
- इनका जन्म बिहार के मधुबनी जिले में हुआ था।
- भारत सरकार ने इन्हें 'सुजनी कला' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया था।
- इन्हें बिहार सरकार की ओर से राज्य पुरस्कार व श्रेष्ठ शिल्पी पुरस्कार भी मिला था।
- इन्होंने जापान में मिथिला संग्रहालय की स्थापना में अपना सहयोग दिया था।

➡ बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र का निधन

- 19 अगस्त, 2019 को बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र का 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया।
- पहली बार वर्ष 1975 में, दूसरी बार वर्ष 1980 में व अंतिम बार, 1989-90 में अल्प अवधि के लिए वे बिहार के मुख्यमंत्री रहे।
- राजनीति में आने से पूर्व जगन्नाथ मिश्र ने अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के तौर पर अपनी सेवाएं दी थी।

https://telegram.me/study_with_pdf

➡ 15 साल से अधिक पुराने वाहनों पर प्रतिबंध

- 4 नवंबर, 2019 को बिहार सरकार द्वारा राज्य में बढ़ते वायु प्रदूषण को देखते हुए 15 वर्ष से अधिक के पुराने वाहनों पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया गया। इस निर्णय के तहत -

(i) राजधानी पटना व उसके समीपवर्ती क्षेत्रों में 15 वर्ष से पुराने सभी व्यावसायिक वाहनों पर प्रतिबंध लागू किया गया।

(ii) 15 साल से पुराने सभी सरकारी वाहनों को संपूर्ण बिहार राज्य में प्रतिबंधित किया गया।

- 15 वर्ष से अधिक पुराने निजी या व्यावसायिक वाहनों के परिचालन हेतु प्रदूषण की जांच को अनिवार्य कर दिया गया है।
- निर्णय 5 नवंबर, 2019 से प्रभावी ।

➡ बिहार स्वच्छ ईंधन योजना, 2019

- 6 नवंबर, 2019 को बिहार मंत्रिमंडल की बैठक में बिहार स्वच्छ ईंधन योजना, 2019 को मंजूरी दी गई।
- इस योजना का उद्देश्य CNG व बैट्रीचालित वाहनों के परिचालन को प्रोत्साहित करना है।
- शहरी क्षेत्र की वायु गुणवत्ता में सुधार व प्रदूषण रहित परिवहन व्यवस्था के लिए चरणबद्ध तरीके से 31 जनवरी, 2021 से पटना नगर निगम तथा 31 मार्च, 2021 से दानापुर नगर परिषद, फुलवारी शरीफ नगर परिषद और खगौल नगर परिषद क्षेत्र में डीजल चालित आटो वाहनों पर प्रतिबंध का निर्णय लिया गया।

➡ इंडिया जस्टिस रिपोर्ट, 2019

- अक्टूबर, 2019 को टाटा ट्रस्ट्स द्वारा इंडिया जस्टिस रिपोर्ट, 2019 जारी की गई।
- इस रिपोर्ट में, बड़े व मध्यम श्रेणी के राज्यों के वर्ग (कुल 18 राज्य) में बिहार को 17वीं रैंक मिली है।
- यह रिपोर्ट न्याय वितरण के चार स्तंभों पुलिस, न्यायपालिका, कारागार व कानूनी सहायता पर विभिन्न सरकारी संस्थाओं के द्वारा उपलब्ध आंकड़ों पर आधारित है।

➡ वशिष्ठ नारायण सिंह का निधन

- प्रसिद्ध गणितज्ञ वशिष्ठ नारायण सिंह का नवंबर, 2019 में 74 वर्ष की आयु में निधन हो गया।
- इनका जन्म बिहार के भोजपुर जिले में हुआ था।
- इन्होंने पटना साइंस कॉलेज से स्नातक व 1969 में अमेरिका की कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी से 'Cycle Vector Space Theory' नामक विषय पर अपनी पी.एच.डी. पूरी की।
- वशिष्ठ नारायण सिंह जी ने IIT कानपुर, IIT बॉम्बे व भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कोलकाता में अध्यापन का कार्य भी किया था।
- इन्होंने आइन्सटीन के सापेक्षता सिद्धांत को चुनौती भी दी थी।
- वे लंबे समय से सीजोफ्रेनिया नामक बीमारी से ग्रसित थे।

➡ 'सिचुएशन एनालिसिस ऑफ न्यूमोनिया इन इंडिया रिपोर्ट'

- नवंबर, 2019 को गैर-लाभकारी संस्था 'सेव दि चिल्ड्रेन' द्वारा यह रिपोर्ट जारी की गई।
- 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में श्वसनीय संक्रमण से संबंधित यह रिपोर्ट राज्यों से (सितंबर, 2018 से जून, 2019 तक) प्राप्त की गई सूचनाओं पर आधारित है।
- इस रिपोर्ट में उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, झारखंड एवं राजस्थान राज्य के बच्चों में (5 वर्ष से कम आयु) एक्यूट रिस्पइरेटरी इन्फेक्शन (ARI) के प्रसार का जिक्र है।
- रिपोर्ट के अनुसार, बिहार में सर्वाधिक मामले (18.2%) दर्ज किए गए।
- रिपोर्ट में शामिल अन्य राज्यों की स्थिति क्रमशः है - उत्तर प्रदेश (15.9%), झारखंड (12.8%), मध्य प्रदेश (11.6%)।
- 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में न्यूमोनियो से होने वाली मौतों में 17% मौतें भारत में होती हैं।

➡ स्वच्छ सर्वेक्षण-2020

- 20 अगस्त, 2020 को केंद्रीय आवास व शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा वार्षिक स्वच्छता शहरी सर्वेक्षण का 5वां संस्करण 'स्वच्छ सर्वेक्षण, 2020' जारी किया गया।
- 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहरों की सूची में बिहार के पटना शहर को सबसे अंतिम (47वीं रैंक) (सबसे गंदा शहर) स्थान प्राप्त हुआ।

10 लाख तक की आबादी वाले बिहार के शहर व उनकी रैंक

शहर		रैंक
डालमिया नगर (डेहरी)	-	255
बेगूसराय	-	279
मुंगेर	-	297
मुजफ्फरपुर	-	299
बेतिया	-	303
किशनगंज	-	308
हाजीपुर	-	313
दरभंगा	-	331
सासाराम	-	338
बगहा	-	343
कटिहार	-	349
जहानाबाद	-	354
जमालपुर	-	359
औरंगाबाद	-	360
मोतिहारी	-	362
आरा	-	363
पूर्णिया	-	364

https://telegram.me/study_with_pdf

सिवान	-	367
दानापुर	-	368
छपरा	-	369
सहरसा	-	373
बिहार शरीफ	-	374
परसा बाजार	-	378
भागलपुर	-	379
बक्सर	-	381
गया	-	382

- गंगा के तट से लगे हुए कस्बों में उनके घाटों की स्वच्छता के आधार पर विभिन्न वर्गों में रैंकिंग -

वर्ग	स्थान	रैंक
50 हजार से कम आबादी वाले कस्बे	सोनपुर	10
	बरहिया	23
	बख्तियारपुर	26
	कहलगांव	27
50 हजार से 1 लाख की आबादी वाले कस्बे	फतवा	9
	सुल्तानगंज	10
	बाढ़	11
	बेगूसराय	14
	मोकामा	18
1 लाख से अधिक आबादी वाले कस्बे	मुंगेर	3
	जमालपुर	26
	पटना	32
	हाजीपुर	33
	दानापुर	39
	भागलपुर	40
	छपरा	42
	बक्सर	45

- देश के 62 छावनी क्षेत्रों में सर्वेक्षण के आंकड़ों में बिहार के दानापुर छावनी बोर्ड को अंतिम स्थान (62वां) मिला है।
- मैथिली के प्रख्यात साहित्यत्कार एवं कवि प्रभु नारायण झा उर्फ प्रदीप का निधन 30 मई, 2020 को दरभंगा में हो गया। उन्होंने मैथिली भाषा में 37 से ज्यादा रचनाएं लिखीं। भगवत्‌गीता एवं श्रीदुर्गा सप्तशती का भी उन्होंने मैथिली अनुवाद किया था।
- बिहार मंत्रिपरिषद ने 28 मई, 2020 को प्रसिद्ध समाजवादी राजनेता एवं भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री स्व. जॉर्ज फर्नांडिस की जयंती प्रत्येक वर्ष 3 जून को मुजफ्फरपुर (बिहार) में राजकीय समारोह के रूप में मनाए जाने की स्वीकृति प्रदान की।

➡ वन नेशन वन राशन कार्ड

- 1 मई, 2020 को केंद्रीय उपभोक्ता मामले , खाद्य व सार्वजनिक वितरण मंत्री रामविलास पासवान ने बिहार को 'वन नेशन वन राशन कार्ड' के राष्ट्रीय क्लस्टर में जोड़ने को स्वीकृति दी।
- इसके साथ ही उत्तर प्रदेश, पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं दादरा नगर हवेली तथा दमन और दीव को जोड़ने की भी स्वीकृति दी गई।

➡ भारतीय डाक विभाग व बिहार सरकार के मध्य समझौता

- मई, 2020 में भारतीय डाक विभाग व बिहार सरकार के मध्य मुजफ्फरपुर 'शाही लीची' की मुजफ्फरपुर एवं पटना में व भागलपुर 'जर्दालु आम' की पटना एवं भागलपुर में डोरस्टेप डिलीवरी (घर पर समान पहुंचाया जाना) हेतु आपसी सहयोग-समझौता हुआ।
- लॉकडाउन के चलते लीची और आम की खेती करने वालों को अपने फलों को बेचने हेतु बाजारों तक ले जाने में आई बाधाओं के निवारण हेतु यह पहल की गई।

➡ 2018 संदर्भ वर्ष हेतु SRS बुलेटिन

- 10 मई, 2020 को रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया ने संदर्भ वर्ष 2018 के लिए SRS (सिम्पल रजिस्ट्रेशन सर्वे) बुलेटिन जारी किया है। इसमें जन्म दर, मृत्यु दर, प्राकृतिक वृद्धि दर व शिशु मृत्यु दर का अनुमान प्रस्तुत किया गया है।
- देश में सर्वाधिक जन्म दर बिहार राज्य में (प्रति एक हजार जनसंख्या पर 26.2) है, जिसमें ग्रामीण जन्म दर 26.8 तथा शहरी जन्म दर 21.9 है।
- आंकड़ों के अनुसार बिहार में कुल मृत्यु दर 5.8 (प्रति 1000 जनसंख्या पर मृत व्यक्तियों की संख्या) है, जिसमें ग्रामीण मृत्यु दर 5.9 तथा शहरी 5.1 है।
- बिहार में प्राकृतिक वृद्धि दर ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में क्रमशः 20.9 व 16.8 है तथा कुल मिलाकर 20.3 है।
- बिहार में शिशु मृत्यु दर (प्रति 1000 जीवित जन्मों पर) कुल मिलाकर 32 है, जबकि ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में क्रमशः 32 व 30 है।

➡ बिहार में जल जीवन मिशन हेतु, केंद्र द्वारा 1832.66 करोड़ रुपये का आवंटन

- मई, 2020 में बिहार राज्य जल जीवन मिशन (हर घर जल) की वार्षिक कार्य योजना को केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय द्वारा मंजूरी प्रदान की गई।
- बिहार सरकार वर्ष 2020-21 में लगभग 1 करोड़ 50 लाख घरों में नल कनेक्शन देने की योजना बना रहा है। भारत सरकार ने इसके लिए वर्ष 2020-21 के दौरान 1832.66 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं।

https://telegram.me/study_with_pdf

- वर्ष 2024 तक देश के सभी ग्रामीण घरों में पाइप जलापूर्ति (हर घर जल) सुनिश्चित करने के लिए जल जीवन मिशन की घोषणा वर्ष 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई थी।

➡ बर्ड रिंगिंग स्टेशन

- फरवरी, 2020 में बिहार राज्य में उत्तर भारत का पहला 'बर्ड रिंगिंग स्टेशन' बनाने के लिए समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया।
- यह स्टेशन बिहार के भागलपुर जिले में बनाया जाएगा।
- यह स्टेशन नागी नकटी (जमुई), कुशेश्वर स्थान (दरभंगा), बरैल झील (वैशाली), कंवर झील (बेगूसराय) जैसे स्थलों, जहां प्रवासी पक्षी बड़ी संख्या में आते हैं, की निगरानी कर सकेगा।
- इस पहल हेतु प्रवासी प्रजातियों के संरक्षण पर गुजरात के गांधीनगर में आयोजित सम्मेलन (CMS-CoP13) के अवसर पर बिहार राज्य के पर्यावरण वन व जलवायु परिवर्तन विभाग के मुख्य सचिव दीपक कुमार सिंह व बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री के प्रतिनिधियों के मध्य एक समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ।
- तमिलनाडु, राजस्थान व ओडिशा के बाद बिहार देश का चौथा राज्य है, जहां प्रवासी पक्षियों पर निगरानी व अनुसंधान हेतु बर्ड रिंगिंग स्टेशन बनाया जा रहा है।
- समझौता-ज्ञापन 5 वर्ष के लिए वैध होगा, जिसके तहत बिहार सरकार लगभग 5 करोड़ रु. खर्च करेगी।

➡ वैद्यनाथ प्रसाद महतो

- 28 फरवरी, 2020 को बिहार के जनता दल यूनाइटेड के सांसद वैद्यनाथ प्रसाद महतो का 72 वर्ष की आयु में निधन हो गया।
- वर्ष 2009 व 2019 में ये वाल्मीकि नगर निर्वाचन क्षेत्र से सांसद चुने गए थे।
- इन्हें 3 बार बिहार विधानसभा के लिए भी चुना गया था तथा वर्ष 2005-2008 तक ग्रामीण विकास मंत्री पद पर भी कार्य किए।
- बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने 27 मार्च, 2020 को बिहार पत्रकार सम्मान पेंशन योजना का शुभारंभ किया। इसके अंतर्गत 6000 रुपये प्रतिमाह प्रति पत्रकार को सम्मान पेंशन के रूप में देय है।

➡ म्यांमार के राष्ट्रपति की बिहार यात्रा

- 28-29 फरवरी 2020 को म्यांमार के राष्ट्रपति यू विन मिंट ने अपनी पत्नी दा चो चो के साथ बिहार के बाधगया की दो दिवसीय यात्रा संपन्न की।
- उल्लेखनीय है कि म्यांमार के राष्ट्र प्रमखु 4 दिवसीय (25-29 फरवरी, 2020) भारत यात्रा पर थे।

➡ पूर्व सांसद कमल बहादुर सिंह का निधन

- 5 जनवरी, 2020 को पहली लोक सभा (1952) के सदस्य रह चुके कमल बहादुर सिंह का 94 वर्ष की आयु में निधन हो गया।
- वे डुमरांव रियासत के अंतिम महाराजा थे।
- ये प्रथम लोक सभा के निर्वाचन में शाहाबाद नार्थ वेस्ट (वर्तमान बक्सर) से निर्दलीय सांसद थे।

➡ बिहार-नेपाल के मध्य एकीकृत चेक पोस्ट का उद्घाटन

- 21 जनवरी, 2020 को भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व नेपाल के प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली द्वारा संयुक्त रूप से जोगबनी (बिहार)-विराटनगर (नेपाल) एकीकृत चेक पोस्ट का उद्घाटन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया।
- यह चेक पोस्ट दोनों देशों के मध्य महत्वपूर्ण व्यापार केंद्रों के तौर पर काम करेगा। इसके माध्यम से लगभग 500 ट्रकों की प्रतिदिन आवा-जाही सुनिश्चित होगी।
- यह क्रम में दूसरा चेक पोस्ट है। इसके पूर्व वर्ष 2018 में रक्सौल (बिहार)-बीरगंज (नेपाल) के बीच प्रथम चेक पोस्ट का निर्माण किया गया था।

➡ कछुआ पुनर्वास केंद्र

- बिहार के भागलपुर वन प्रभाग में ताजा जल के कछुओं के लिए अपनी तरह के पहले पुनर्वास केंद्र का उद्घाटन किए जाने की योजना है।
- बीमार, गंभीर रूप से घायल या तस्करी की घटनाओं में पकड़े गए कछुओं का उपचार करके उन्हें उनके प्राकृतिक आवास में वापस भेजने का कार्य भी इस पुनर्वास केंद्र के माध्यम से किया जाएगा।

➡ बिहार के पूर्व मंत्री अब्दुल गफूर का निधन

- 28 जनवरी, 2020 को बिहार सरकार में पूर्व अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री एवं राजद विधायक अब्दुल गफूर का यकृत की बीमारी के कारण 60 वर्ष की उम्र में नई दिल्ली में निधन हो गया।
- ये बिहार के महिषी (सहरसा) निर्वाचन क्षेत्र से विधायक थे।

➡ 20 पीपुल टू वाच इन, 2020

- जनवरी, 2020 में फोर्ब्स इंडिया द्वारा जारी '20 पीपुल टू वाच इन 2020' (20 people to watch in 2020) लोगों की सूची में बिहार के कन्हैया कुमार व प्रशांत किशोर को भी शामिल किया गया है।
- कन्हैया कुमार CPI के नेता हैं।
- प्रशांत किशोर, 2014 के आम चुनाव में भाजपा के रणनीतिकार रह चुके हैं।

https://telegram.me/study_with_pdf

सम-सामयिक **घटना चक्र** परीक्षा संवाद के 27 वर्ष

design : Vicky # 9335121198

अपने नज़दीकी पुस्तक विक्रेता से प्राप्त करें या shop.ssgcp.com पर ऑनलाइन आर्डर भेजें अथवा सम्पर्क करें :

0532-2465524, 2465525, 9335140296, 8881445557

समय सोमवार से शुक्रवार (12 बजे दोपहर से 8 बजे शाम तक)

Book I.D. 2114 'N'

₹ 60/-

प्रकाशक

सम-सामयिक घटना चक्र

188A/128, एलनगंज, चर्चलेन, प्रयागराज (इलाहाबाद) - 211002

https://telegram.me/study_with_pdf